लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

रश्मि

32वाँ अंक

त्यौहार विशेषांक

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) II
महाराष्ट्र, नागपुर

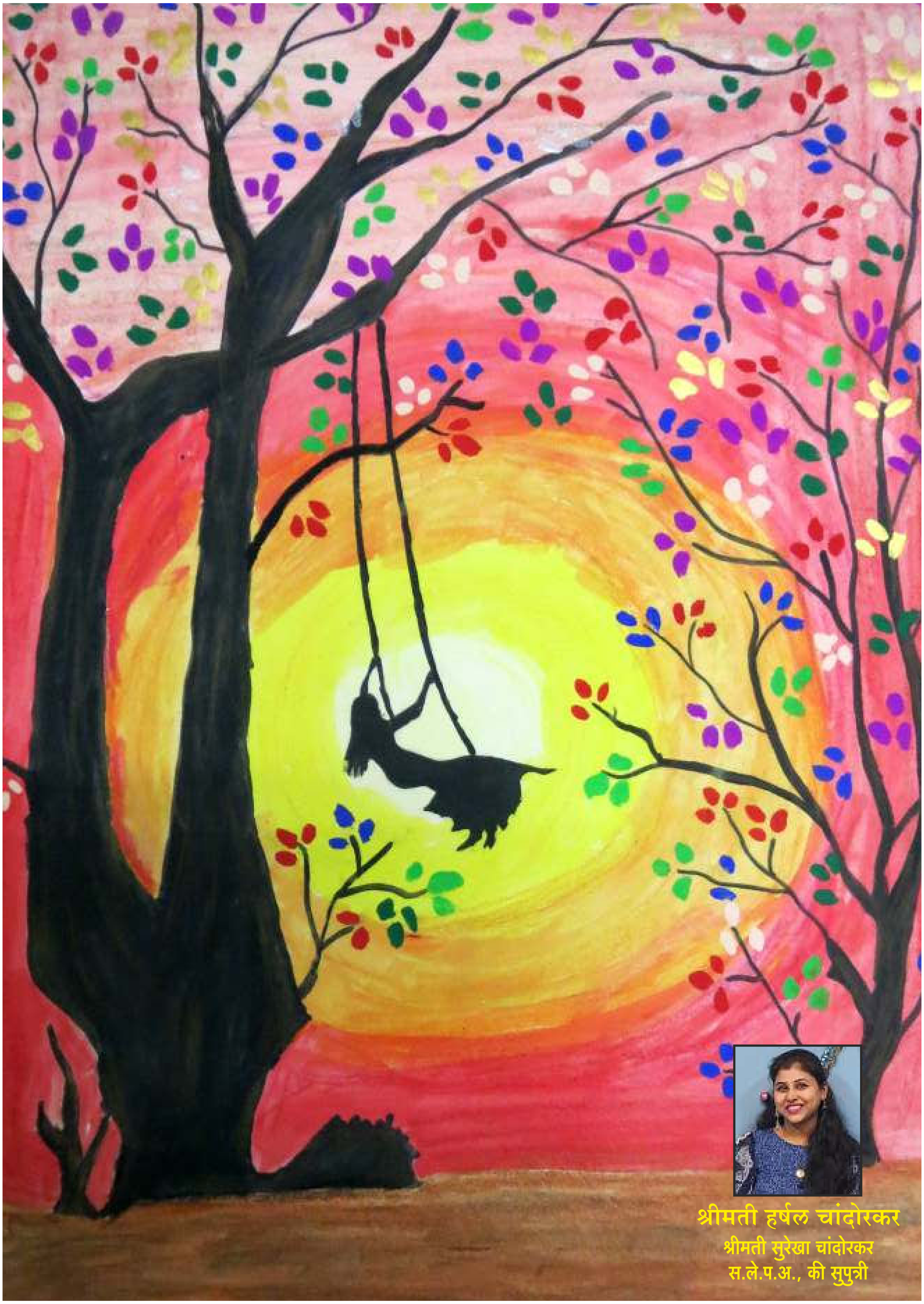

श्रीमती हर्षल चांदोरकर
श्रीमती सुरेखा चांदोरकर
स.ले.प.अ., की सुपुत्री

संरक्षक की कलम से.....

सुश्री हेमा मुनिवेंकटप्पा

विश्वव्यापी कोरोना महामारी इस सदी की एक बड़ी मानवीय त्रासदी बनकर उभरी है, जिसका असर कार्यालय के काम-काज के स्वरूप पर भी पड़ा है । कार्यालय में डिजिटलीकरण एवं सॉफ्ट कॉपी दस्तावेजों पर निर्भरता न केवल इस संक्रामक महामारी की रोकथाम हेतु आवश्यक है बल्कि यह अभ्यास कागज की खपत कम कर पर्यावरण की भी रक्षा करता है । इस कार्यालय द्वारा हिंदी गृह पत्रिका रश्मि के 32 वें अंक का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन,इसी दिशा में एक पहल है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय एकता के संवर्धन की भावना के प्रसार के उद्देश्य से रश्मि पत्रिका के 32 वें ई-अंक को त्यौहार विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है, इसके लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

राजभाषा हिंदी न केवल हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम है अपितु हमारा संवैधानिक दायित्व एवं कर्त्तव्य भी है। हिंदी आज विश्व में अपनी एक अलग पहचान बना चुकी है। कार्यालय द्वारा हिंदी गृह पत्रिका रश्मि का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में रचनात्मक भूमिका निभा रहा है। इसमें संकलित रचनाएं हिंदी भाषा के प्रति पाठकों में भावनात्मक लगाव उत्पन्न करती हैं। कार्यालय की पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों के साहित्यिक विचारों का समागम एवं राजभाषा हिंदी के प्रति उनका प्रेम व लगाव है । भाषा सिर्फ विचारों का आदान-प्रदान मात्र नहीं है बल्कि हमारी विरासत एवं परम्पराओं को आने वाली पीढ़ियों तक प्रवाहित करने का एक सशक्त माध्यम भी है ।

मैं सभी रचनाकारों एवं समस्त राजभाषा प्रेमियों का हार्दिक अभिनंदन करती हूँ तथा संपादक मण्डल को सफल संपादन हेतु बधाई देती हूँ। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

सुश्री हेमा मुनिवेंकटप्पा
महालेखाकार

रश्मि परिवार

संरक्षक
सुश्री हेमा मुनिवेंकटप्पा
महालेखाकार

मार्गदर्शक
श्री एच. टी. फुलपाड़िया
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
एवं राजभाषा अधिकारी

✦ **समीक्षा समिति**

श्री आर. के. चौबे व.ले.प.अ.
श्री आर. के. मंथापुरवार, व.ले.प.अ.
श्रीमती रिंकू सिन्हा, स.ले.प.अ.
श्रीमती रीमा एस. आंबेरकर, स.ले.प.अ.

✦ **संपादक**

श्री ओ. श्रीनिवास
व.ले.प.अ./हिंदी अनुभाग

✦ **संपादन सहयोग**

श्रीमती नीरजा टंडन, स.ले.प.अ./हिंदी अनुभाग
श्री वसीम मिन्हास, वरिष्ठ अनुवादक
सुश्री नीलम देवी, कनिष्ठ अनुवादक

विविध सहयोग –
सुश्री मोनिका सोनी, डी.ई.ओ.
श्रीमती विद्या मोहबे, एम.टी.एस.

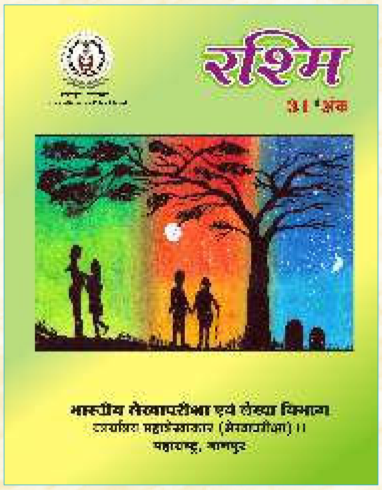

गतांक से आगे ...

अस्वीकरण : पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, उनसे कार्यालय / संपादक मंडल अथवा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। उससे उत्पन्न किसी भी वाद की जिम्मेदारी रश्मि परिवार अस्वीकार करता है।

मार्गदर्शक की अभिव्यक्ति ...

एच.टी.फुलपाड़िया

जैसा कि सर्वविदित है कि कोरोना वैश्विक महामारी के कारण जन-जीवन काफी हद तक प्रभावित हुआ है तथा सरकारी काम-काज भी इसके प्रभाव से अछूता नहीं रहा है। पत्राचार हेतु ई-मेल का प्रयोग, ई-फाइलों पर कार्य एवं सॉफ्ट कॉपी दस्तावेजों पर निर्भरता, कोरोना महामारी के प्रसार की रोकथाम के लिए आवश्यक होने के साथ-साथ हमारी पर्यावरण सजगता को भी दर्शाता है। इस दृष्टि से कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका रश्मि के 32 वें अंक का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जाना अत्यंत सराहनीय है। साथ ही यह भी अपार हर्ष का विषय है कि सद्भावना एवं सौहार्द की भावना के प्रसार के उद्देश्य से रश्मि पत्रिका का 32 वां ई-अंक त्यौहार विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न करने और उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदी गृह पत्रिका रश्मि का नियमित रूप से प्रकाशन करना, राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल एवं सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ तथा इसके उज्ज्वल भविष्य एवं प्रगति की कामना करता हूँ।

एच.टी.फुलपाड़िया
राजभाषा अधिकारी एवं
वरिष्ठ उप–महालेखाकार/प्रशासन

संपादकीय

ओ. श्रीनिवास

कोरोना वैश्विक महामारी के प्रसार की रोकथाम हेतु कार्यालय में सॉफ्ट कॉपी दस्तावेजों की प्राथमिकता तथा पर्यावरण सजगता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर की हिंदी गृह पत्रिका रश्मि के 32 वें अंक का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन किया जाना अत्यंत सराहनीय तथा प्रसन्नता का विषय है। रश्मि पत्रिका के 32 वें ई-अंक को त्यौहार विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाना देश के विविध सांस्कृतिक रूपों को प्रतिबिम्बित करने का एक रचनात्मक प्रयास है।

रश्मि पत्रिका का प्रकाशन,कार्यालय के कार्मिकों की अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि के साथ-साथ राजभाषा का प्रचार-प्रसार भी सुनिश्चित करता है। हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ एक ऐसा माध्यम भी है जो हमारे देश के नागरिकों को एकता के सूत्र में जोड़ने का कार्य करती है। अतः मैं कामना करता हूँ कि यह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों के बीच हिंदी के प्रयोग के प्रति रुचि उत्पन्न करने एवं इसे लोकप्रिय बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

मैं पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रति अपने प्रेम का परिचय देते हुए अपनी रचनाएँ पत्रिका के प्रकाशन हेतु प्रदान की साथ ही मैं माननीय महालेखाकार महोदया तथा राजभाषा अधिकारी /व. उपमहालेखाकार (प्रशासन) को उनके बहुमूल्य मार्गदर्शन तथा प्रेरणा हेतु धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

ओ. श्रीनिवास

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना / कविता	रचनाकार	पृष्ठ क्र.
1.	गोपाल दास नीरज का परिचय		1
2.	हार्नबिल फेस्टिवल - एक अनोखा अनुभव	श्रीमती वी. एस. रेड्डी	4
3.	मकर संक्रांति, एक पावन पर्व	श्रीमती कीर्ति गाडगे	6
4.	राम नवमी का पावन पर्व	श्री परिमल मेहता	7
5.	कांवड़ यात्रा	श्री किशन चतुर्वेदी	8
6.	कुम्भ मेला प्रयागराज	श्री विरेन्द्र कुमार	9
7.	गंगा दशहरा	श्री आकाश चतुर्वेदी	10
8.	शिरूई लिली त्यौहार	श्री अभिलेख कुमार	11
9.	छठ पूजा	सुश्री प्रियंका कुमारी	12
10.	त्यौहारः एक सम्मान भारत देश का	सुश्री अमृता प्रभाकर राऊत	13
11.	गणेश उत्सव	श्रीमती विद्या मोहबे	14
12.	त्यौहार और राष्ट्रवाद	श्री नाजिश खान	15
13.	पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजाः एक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य	श्री वसीम मिन्हास	16
14.	पर्व नव वर्ष का	श्री यशस्वी कुमार दीपक	17
15.	वार्षिक स्नेह सम्मेलन	श्रीमती सुरेखा चांदोरकर	18
16.	ईद उल फितर सद्भाव एवं सौहार्द का त्यौहार	श्रीमती शाईस्ता शाहीन	20
17.	दिवाली आई है	श्री मयंक सोनी	21
18.	त्यौहार	सुश्री नीना वर्मा	22
19.	होली	श्रीमती लक्ष्मी बिनकर	23
20.	भारतीय सेना में त्यौहार	श्री अनिल कुमार	24
21.	त्यौहारों का अर्थशास्त्र	श्री विवेक कुमार	25
22.	पर्यावरण पर त्यौहारों के प्रभाव	श्रीमती अर्चना राज चौबे	26
23.	रामनवमी	श्री राज कुमार चौबे	29
24.	मकर संक्रांति - पतंगबाजी का त्यौहार	कु. अर्पिता	31
25.	आया लोहड़ी का त्यौहार	श्री सन्नी अरोरा	32
26.	पोला	श्री श्रीकांत शुक्ला	33
27.	महाशिवरात्रि	श्री सुधीर कुमार	34
28.	बिहू	श्री प्रिंस कुमार	35
29.	राष्ट्रीय त्यौहार - 26 जनवरी	श्री गणेश आबनावे	36
30.	बसंत पंचमी	श्रीमती मीना देवी	37
31.	ईद उल अज़हा	श्री एम. आर. खान	38
32.	भारत एवं त्यौहार	श्रीमती रिंकू सिन्हा	39
33.	सशस्त्र सेना झण्डा दिवस	श्री विरेन्द्र सिंह	40
34.	एक राखी उनके लिए भी	सुश्री प्रियम मेहता	41
35.	रथ यात्रा	श्री प्रशांत साहू	42
36.	याद बहुत आते हैं	श्री आर. के. मंथापुरवार	43
37.	रंग भरी होली	सुश्री मोनिका सोनी	46
38.	होली	श्री मनोज डी. बिनकर	47
39.	मन करता है ऐसा एक त्यौहार बनूँ ...	सुश्री नीलम	48
40.	त्यौहार-उत्सव	श्री माधव आचार्य	48
41.	कुम्भ - एक महापर्व	सुश्री सोनिका सोनी	49
42.	त्यौहार विषयक शब्द-खोज पहेली	श्रीमती नीरजा टंडन	50
43.	राजभाषा सम्मान पुरस्कार		51
44.	हिंदी सप्ताह 2020		52
45.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक		53
46.	रश्मि के 31 वें ई-अंक का विमोचन		54
47.	हिंदी कार्यशाला		54
48.	लेखापरीक्षा के पन्नों से ...		55
49.	आपके पत्र		56

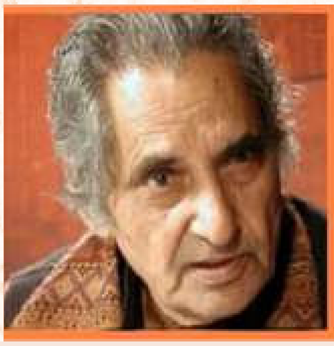

वाणी के सौन्दर्य का शब्दरूप है काव्य,
किसी व्यक्ति के लिए है कवि होना सौभाग्य।
जिसने सारस की तरह नभ में भरी उड़ान,
उसको ही बस हो सका सही दिशा का ज्ञान।

गोपालदास नीरज

गोपाल दास नीरज (4 जनवरी 1924-19 जुलाई 2018) जाने माने हिन्दी कवि, साहित्यकार, फ़िल्मों के गीत लेखक एवं शिक्षक थे। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा जिला के गाँव पुरावली में हुआ । मात्र 6 वर्ष की आयु में उनके पिता गुजर गये। 1942 में एटा से हाई स्कूल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। नौकरी करने के साथ प्राइवेट परीक्षाएँ देकर 1949 में इण्टरमीडिएट, 1951 में बीए और 1953 में प्रथम श्रेणी में हिन्दी साहित्य से एमए किया। मेरठ कॉलेज, मेरठ में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया किन्तु किसी कारणवश नीरज ने स्वयं ही नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। उसके बाद वे अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त हो गये। कवि सम्मेलनों में अपार लोकप्रियता के चलते नीरज को मुंबई के फिल्म जगत ने गीतकार के रूप में 'नई उमर की नई फसल' फिल्म के गीत लिखने का निमन्त्रण दिया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। गोपाल दास नीरज ने कई प्रसिद्ध फ़िल्मों के गीतों की रचना की है।

नीरज की कालक्रमानुसार प्रकाशित कृतियाँ इस प्रकार हैं:

संघर्ष (1944), अन्तर्ध्वनि (1946), विभावरी (1948), प्राणगीत (1951), दर्द दिया है (1956), बादर बरस गयो (1957), मुक्तकी (1958), दो गीत (1958), नीरज की पाती (1958), गीत भी अगीत भी (1959),आसावरी (1963), नदी किनारे (1963), लहर पुकारे (1963), कारवाँ गुजर गया (1964), फिर दीप जलेगा (1970), तुम्हारे लिये (1972), नीरज की गीतिकाएँ (1987)

गोपालदास नीरज को कई पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए, जिनका विवरण इस प्रकार है:

विश्व उर्दू परिषद् पुरस्कार, पद्म श्री सम्मान (1991) भारत सरकार,यश भारती एवं एक लाख रुपये का पुरस्कार (1994), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ,पद्म भूषण सम्मान (2007) भारत सरकार।गोपालदास नीरज को फ़िल्म जगत में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिये उन्नीस सौ सत्तर (1970) में गीत काल का पहिया घूमे रे भईया! (फ़िल्म: चंदा और बिजली) के लिये फिल्म फेयर पुरस्कार भी मिला।

तुम दिवाली बनकर जग का तम दूर करो

तुम दिवाली बनकर जग का तम दूर करो,
मैं होली बनकर बिछड़े हृदय मिलाऊंगा!
सूनी है मांग निशा की चंदा उगा नहीं
हर द्वार पड़ा खामोश सवेरा रूठ गया,
है गगन विकल, आ गया सितारों का पतझर
तम सा है कि उजाले का दिल टूट गया,
तुम जाओ घर-घर दीपक बनकर मुस्काओ
मैं भाल-भाल पर कुंकुम बन लग जाऊंगा!
तुम दिवाली बनकर जग का तम दूर करो,
मैं होली बनकर बिछड़े हृदय मिलाऊंगा!
कर रहा नृत्य विध्वंस, सृजन के थके चरण,
संस्कृति की इति हो रही, क्रुद्ध हैं दुर्वासा,
बिक रही द्रौपदी नग्न खड़ी चौराहे पर,
पढ रहा किन्तु साहित्य सितारों की भाषा,
तुम गाकर दीपक राग जगा दो मुर्दों को
मैं जीवित को जीने का अर्थ बताऊंगा!
तुम दिवाली बनकर जग का तम दूर करो,
मैं होली बनकर बिछड़े हृदय मिलाऊंगा!
इस कदर बढ रही है बेबसी बहारों की
फूलों को मुस्काना तक मना हो गया है,

इस तरह हो रही है पशुता की पशु-क्रीड़ा
लगता है दुनिया से इन्सान खो गया है,
तुम जाओ भटकों को रास्ता बता आओ
मैं इतिहास को नये सफेदे जाऊंगा!
तुम दिवाली बनकर जग का तम दूर करो,
मैं होली बनकर बिछड़े हृदय मिलाऊंगा!
मैं देख रहा नन्दन सी चन्दन बगिया में,
रक्त के बीज फिर बोने की तैयारी है,
मैं देख रहा परिमल पराग की छाया में
उड़ कर आ बैठी फिर कोई चिन्गारी है,
पीने को यह सब आग बनो यदि तुम सावन
मैं तलवारों से मेघ-मल्हार गवाऊंगा!
तुम दिवाली बनकर जग का तम दूर करो,
मैं होली बनकर बिछड़े हृदय मिलाऊंगा!
जब खेल रही है सारी धरती लहरों से
तब कब तक तट पर अपना रहना सम्भव है!
संसार जल रहा है जब दुख की ज्वाला में
तब कैसे अपने सुख को सहना सम्भव है!
मिटते मानव और मानवता की रक्षा में
प्रिय! तुम भी मिट जाना, मैं भी मिट जाऊंगा!
तुम दिवाली बनकर जग का तम दूर करो,
मैं होली बनकर बिछड़े हृदय मिलाऊंगा!

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।
नई ज्योति के धर नए पंख झिलमिल,
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन स्वर्ग छू ले,
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी,
निशा की गली में तिमिर राह भूले,
खुले मुक्ति का वह किरण द्वार जगमग,
ऊषा जा न पाए, निशा आ ना पाए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।
सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में,
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी,
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी,
चलेगा सदा नाश का खेल यूँ ही,
भले ही दिवाली यहाँ रोज आए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।
मगर दीप की दीप्ति से सिर्फ जग में,
नहीं मिट सका है धरा का अँधेरा,
उतर क्यों न आयें नखत सब नयन के,
नहीं कर सकेंगे हृदय में उजेरा,
कटेंगे तभी यह अँधरे घिरे अब,
स्वयं धर मनुज दीप का रूप आए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

कारवां गुज़र गया

स्वप्न झरे फूल से,
मीत चुभे शूल से,
लुट गये सिंगार सभी बाग़ के बबूल से,
और हम खड़े-खड़े बहार देखते रहे
कारवां गुज़र गया, गुबार देखते रहे!
नींद भी खुली न थी कि हाय धूप ढल गई,
पाँव जब तलक उठें कि राह रथ निकल गई,
पात-पात झर गए कि शाख-शाख जल गई,
फाँस तो निकल सकी न, पर उमर निकल गई,
गीत अश्रु बन चले,
छन्द हो हवन चले,
साथ के सभी दिए धुआँ पहन-पहन चले,
और हम झुके-झुके,
मोड़ पर रुके रुके,
उम्र के चढ़ाव का उतार देखते रहे,
कारवाँ गुज़र गया, गुबार देखते रहे!
नींद भी खुली न थी कि हाय धूप ढल गई,
पाँव जब तलक उठे कि ज़िन्दगी फिसल गई,
पात-पात झर गये कि शाख़-शाख़ जल गई,
चाह तो निकल सकी न, पर उमर निकल गई,
गीत अश्क़ बन गए,
छंद हो दफ़न गए,
साथ के सभी दिऐ धुआँ-धुआँ पहन गये,
और हम झुके-झुके,

मोड़ पर रुके-रुके
उम्र के चढ़ाव का उतार देखते रहे
कारवां गुज़र गया, गुबार देखते रहे।
क्या शबाब था कि फूल-फूल प्यार का उठा,
क्या सुरूप था कि देख आईना सिहर उठा,
इस तरफ जमीन और आसमाँ उधर उठा,
थामकर जिगर उठा कि जो मिला नजर उठा,
एक दिन मगरछली-
वह-हवा यहाँ चली
लुट गई कली-कली कि घुट गई गली-गली
और हम दबी नजर,
देह की दुकान पर,
साँस की शराब का खुमार देखते रहे,
कारवाँ गुजर गया, गुबार देखते रहे!
क्या शबाब था कि फूल-फूल प्यार कर उठा,
क्या सुरूप था कि देख आइना मचल उठा
इस तरफ जमीन और आसमां उधर उठा,
थाम कर जिगर उठा कि जो मिला नज़र उठा,
एक दिन मगर यहाँ,
ऐसी कुछ हवा चली,
लुट गयी कली-कली कि घुट गयी गली- गली,
और हम लुटे-लुटे,
वक्त से पिटे-पिटे,
साँस की शराब का खुमार देखते रहे
कारवां गुज़र गया, गुबार देखते रहे।
आँख थी मिली मुझे कि अश्रु-अश्रु बीन लूँ,
होंठ थे खुले कि चूम हर नज़र हसीन लूँ,
दर्द था दिया गया कि प्यार से यक़ीन लूँ,
और गीत यूँ कि रात से चिराग़ छीन लूँ,
हो सका न कुछ मगर,
शाम बन गई सहर,
वह उठी लहर कि ढह गए क़िले बिखर-बिखर,
और हम लुटे-लुटे,
वक्त से पिटे-पिटे,
दाम गाँठ के गँवा, बज़ार देखते रहे,
कारवाँ गुज़र गया, गुबार देखते रहे!
हाथ थे मिले कि जुल्फ चाँद की सँवार दूँ,
होंठ थे खुले कि हर बहार को पुकार दूँ,
दर्द था दिया गया कि हर दुखी को प्यार दूँ,
और साँस यूँ कि स्वर्ग भूमि पर उतार दूँ,
हो सका न कुछ मगर,
शाम बन गई सहर,
वह उठी लहर कि दह गये किले बिखर-बिखर,
और हम डरे-डरे,
नीर नयन में भरे,
ओढ़कर कफ़न, पड़े मज़ार देखते रहे
कारवां गुज़र गया, गुबार देखते रहे!
माँग भर चली कि एक, जब नई-नई किरन,
ढोलकें धुमुक उठीं, ठुमक उठे चरण-चरण,
शोर मच गया कि लो चली दुल्हन, चली दुल्हन,
गाँव सब उमड़ पड़ा, बहक उठे नयन-नयन,
पर तभी ज़हर भरी,
ग़ाज एक वह गिरी,
पुंछ गया सिंदूर तार-तार हुई चूनरी,
और हम अजान से,
दूर के मकान से,
पालकी लिये हुए कहार देखते रहे।
कारवां गुज़र गया, गुबार देखते रहे।
एक रोज एक गेह चाँद जब नया उगा,
नौबतें बजीं, हुई छटी, डठौन, रतजगा,
कुँडली बनी कि जब मुहूर्त पुन्यमय लगा,
इसलिए कि दे सके न मृत्यु जन्म को दग़ा,
एक दिन न पर हुआ,
उड़ गया पला सुआ,
कुछ न कर सके शकुन, न काम आ सकी दुआ,
और हम डरे-डरे,
नीर नैन में भरे,
ओढ़कर कफन पड़े मजार देखते रहे,
चाह थी न, किंतु बार-बार देखते रहे,
कारवाँ गुज़र गया, गुबार देखते रहे!

✦✧✦

हार्नबिल फेस्टिवल - एक अनोखा अनुभव

श्रीमती वी. एस. रेड्डी
व.ले.प.अ.

वर्ष 2018 - फरवरी महीने में महालक्ष्मी सातपुते का फोन आया। बोली इस बार हमें नागालैण्ड के हार्नबिल फेस्टिवल में चलना है, चलोगी क्या? अरे मैं खुशी से उछल उठी। उत्तर पूर्वांचल के सात बहनों अरूणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मणिपुर, मिज़ोराम, नागालैण्ड एवं त्रिपुरा में से किसी को भी देखने की इच्छा थी ही फिर उस पर हार्नबिल फेस्टिवल सोने पे सुहागा साबित हुआ। मैंने तुरंत हाँ कर दी।

चूँकि हार्नबिल फेस्टिवल दिसंबर माह की 1 तारीख से 10 तारीख तक मनाया जाता है। मैंने 30/11/2018 से 12/12/2018 तक छुट्टी ले ली।

हार्नबिल फेस्टिवल शनिवार 1 दिसम्बर को शुरू होने वाला था।

हम 30/11/2018 को नागपुर से कोलकाता पहुँचे और उसी दिन कोलकाता से दीमापुर हवाई यात्रा से पहुँचे। दीमापुर नागालैण्ड का सबसे घनी आबादीवाला शहर है जहाँ की जनसंख्या करीब 2,50,000 है। यह नागालैण्ड की वाणिज्यिक राजधानी है। यह असम की सीमा के पास धनसिरि नदी के किनारे स्थित है। पहाड़ी से घिरे नागालैण्ड में दीमापुर एक समतल शहर है जिसकी वजह से नागालैण्ड का एक मात्र रेलवे स्टेशन एवं हवाई अड्डा यहीं पर स्थित है।

दि. 30/11/2018 को हम दीमापुर से कोहिमा पहुँचे जो लगभग 75 किलोमीटर की दूरी पर है। लक्ष्मी जी ने इस दौरे के लिए मिनी बस की व्यवस्था की थी। इस दूरी को तय करने में हमें लगभग आठ घंटे लग गए क्योंकि रास्ता खराब था और बीच में खाना भी खाया गया जिसके लिए समय लगा। परन्तु रास्ता इतना हसीन था कि पर्वतों के बीच में से संकीर्ण रास्तों से होते हुए, ठंड का मजा लेते हुए रमणीय दृष्यों के बीच समय का पता ही नहीं चला।

सब कोहिमा पहुँचे। कोहिमा नागालैण्ड की राजधानी है। बहुत ही रमणीय शहर। यहाँ अधिकतर आदिवासी रहते हैं। इन आदिवासियों की संस्कृति एवं परिधान बहुत रंग-बिरंगी है जो पर्यटकों को बहुत पसंद आती है।

चूँकि कोहिमा से 12 कि.मी. दूर किसामा गाँव में हार्नबिल फेस्टिवल का आयोजन दि. 1/12/2018 को 3.30 बजे होने वाला था। हम दि. 1/12/2018 को किसामा गाँव पहुँचे, पहुँचते ही लगा हम रंगों से बिखरे एक ठंडे प्रदेश में आ गए हैं जहाँ उत्साह ही उत्साह भरा है। कलाकार ही कलाकार पूरे गाँव में घूम रहे हैं। हर एक कलाकार की टोपी में हार्नबिल पक्षी का पंख लगा था।

हार्नबिल महोत्सव नागालैण्ड का सबसे बड़ा वार्षिक महोत्सव है जो पूरी दुनिया से पर्यटकों को आकर्षित करता है। इस उत्सव का सबसे बड़ा आकर्षण यहाँ के नागा नायकों की बहादुरी की प्रशंसा में गाए जाने वाले गीत है।

इस महोत्सव को संयुक्त रूप से पर्यटन विभाग और कला व संस्कृति विभाग द्वारा नागा विरासत गाँव, किसामा में आयोजित किया जाता है। यह गाँव नागा के जीवन और उनके इतिहास के बारे में झलक दिखलाता है। सात दिवसीय इस महोत्सव में नागा जनजाति के समृद्ध और जीवंत संस्कृति को दर्शाया जाता है। इस महोत्सव का नाम हार्नबिल पक्षी के नाम पर रखा गया

है। इस पक्षी के पंख नागा समुदाय के लोगों द्वारा पहनी जानेवाली टोपी का हिस्सा होते है।

इस समारोह में नृत्य प्रदर्शन, शिल्प, परेड खेल, भोजन के मेले और कई धार्मिक अनुष्ठान होते है। इस महोत्सव में शामिल होनेवाले पर्यटक अपने साथ अपने घर, यहाँ से नागा जीवन से जुड़े पारंपारिक चित्रों, लकड़ी की नक्काशी वाले सामानों, शॉल और मूर्तियों को ले जा सकते है। इस उत्सव का सबसे बड़ा आकर्षण यहाँ के नागा नायकों की बहादुरी की प्रशंसा में गाए जाने वाले गीत है। इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य नागालैण्ड की समृद्ध संस्कृति का प्रदर्शन है।

इस सब की जानकारी होने की वजह से हम करीब 2.00 बजे किसामा गाँव पहुँच गए। पहुँचते ही हमारा रहने का इंतजाम हेरिटेज किसामा गाँव के महोत्सव की जगह से बहुत पास पहाडों में टेंटों में की गई।

अलग अनुभव के लिए हमने महोत्सव के करीब पैदल दूरी पर ही टेंटों में इंतजाम तो करवा लिया पर सब ठंड से ठिठुरे जा रहे थे। टेंटों में जमीन पर दो कंबल डले थे। जैसे तैसे सामान टेंटों में डाल हम महोत्सव की जगह पर पहुँचे। महोत्सव के प्रवेश द्वार पर आरक्षण की जाँच करने के पश्चात हर एक सदस्य के हाथ पर एक पट्टी बांधी गई। जिससे यह पहचान हो सके कि इस व्यक्ति को महोत्सव में प्रवेश दिया जा सकता है।

महोत्सव का उद्घाटन केन्द्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा किया जाना था जो मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उद्घाटन दोपहर 3.30 बजे को होना अपेक्षित था इसलिए हम करीब 1 बजे से अपने अपने स्थान पर बैठ गए। एकदम ठीक से तो याद नहीं पर किन्ही कारणोंवश उद्घाटन रात को किया गया।

कार्यक्रम में नागालैण्ड के मुख्यमंत्री श्री नेईपुआ रियो भी शामिल हुए। श्री राजनाथ सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि पिछले वर्ष इस महोत्सव में आने के बावजूद इस उन्नीसवें हार्नबिल फेस्टिवल में भी आने से मैं खुद को रोक नहीं सका।

मुख्य अतिथि एवं मुख्यमंत्री के भाषण के पश्चात नागालैण्ड की संस्कृति को दर्शाते हुए लोकगीत, लोकनृत्यों का प्रदर्शन हुआ। इन गीतों एवं नृत्यों में नागालैण्ड के इतिहास, उनके खेती-बाड़ी, अन्य क्रियाओं संबंधी, वीरों संबंधी कहानी जुडी थी। पोशाख तो देखते ही बनते थे। सर से पाँव तक लाल, काला, पीला, नीला, सफेद हर रंग के कपड़े जो एकदम चटकीले थे। लोकगीत भी बड़े लुभावने गाए गए। नागालैण्ड में भाषा के लिए कोई लिपि नहीं है। भाषा को अभिव्यक्त करने में अंग्रेजी अक्षरों की मदद ली जाती है।

कार्यक्रम के पश्चात् किसामा गाँव में खाना खाने निकले। पूरे गाँव में झोपड़ी नुमा दुकाने जहाँ गर्म गर्म शाकाहारी/मांसाहारी खाना उपलब्ध था। हमने उबले हुए भुट्टा, नूडल्स इत्यादि खा कर यह काम खत्म किया। उसके पश्चात टेंटों में पहुँचे तो ठंडी का ठिकाना नहीं था। पूरा सर से पाँव तक ढ़क के नीचे दो कंबल और ऊपर दो कंबल डालने पर भी ठंड नहीं रूकी। जैसे तैसे रात बीती। सुबह उठे और एक और दिन हार्नबिल महोत्सव का मजा लेकर हम पूर्वांचल की अन्य बहनों से मिलने निकल पड़े।

✦✧✦

श्रीमती कीर्ति गाडगे
व.ले.प.अ.

"मकर संक्रांति, एक पावन पर्व"

मकर संक्रांति का संबोधन करते ही सबसे पहले अगर याद आता है तो तिल-गुड़ और पतंग। जी हाँ! पतंगबाजी का सीधा संबंध मकर संक्रांति से है। इन दिनों हवा चलती है, तो पतंग उड़ाने में भी अधिक मजा आता है। पतंग उड़ाना, चिवड़ा खाना, ओऽऽऽकाट करके चिल्लाना और सब दोस्त, परिवारवाले मिलकर इसका आनंद लेना, रोजमर्रा की चिंतित जिंदगी से कुछ समय के लिए मुक्ति देता है। भारत वर्ष में हर त्यौहार की संस्कृति है कि, जो भी है मिल-बाँटकर खाओ, आनंद लूटो। हम एकता में विश्वास रखते है और इसी कारणवश महत्तम त्यौहार सब मिलकर मनाते है। हाँ, परंतु एक बात है इस लेखन के माध्यम से जरूर कहना चाहूँगी कि इन पावन त्यौहारों का स्वरूप आजकल कुछ विकृत होता जा रहा है जिसे हमें टालना चाहिये जैसे आजकल पतंगबाजी में नायलॉन का मांजा उपयोग में लाया जा रहा है, जो कि पक्षियों तथा मानवजाति के लिए भी घातक साबित हो रहा है, जिससे इस पावन पर्व के मूल उद्‌देश्य को क्षति पहुँचती है।

मकर संक्रांति भारत का प्रमुख पर्व है। मकर संक्रांति पूरे भारत वर्ष और नेपाल में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। मकर संक्रांति का त्यौहार हिंदू धर्म के प्रमुख त्यौहारों में शामिल है, जो सूर्य के उत्तरायण होने पर मनाया जाता है। पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तभी इस पर्व को मनाया जाता है। मकर संक्रांति के इस पर्व को कही-कही उत्तरायणी भी कहते है, यह मान्यता है कि उत्तरायण भी इसी दिन होता है। इस पर्व की विशेष बात यह है कि अन्य त्यौहारों की तरह अलग-अलग तारीखों पर नहीं अपितु हर साल 14 जनवरी को ही मनाया जाता है, जब सूर्य उत्तरायण होकर मकर रेखा से गुजरता है। कभी-कभी मात्र अपवादात्मक स्थिति में 13 या 15 जनवरी को भी मनाया जाता है। भारत में अलग-अलग क्षेत्रों में मकर संक्रांति का पर्व विभिन्न तरह से मनाया जाता है। महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, केरल और कर्नाटक में इसे मकर संक्रांति कहा जाता है, तमिलनाडु में 'पोंगल' तो पंजाब, हरियाणा में इस समय नई फसल का स्वागत 'लोहड़ी' पर्व मनाकर किया जाता है। असम में 'बिहू' के माध्यम से इस पर्व का स्वागत किया जाता है। विविधता में एकता का यह पर्व प्रतीक है।

"न खाई भोगी तो सदा रोगी" मतलब आनंद लुटानेवाला, भोगी यह एक त्यौहार है। जो मकर संक्रांति के पहले दिन महाराष्ट्र राज्य में मनाते है। भोगी के दिन मिक्स भाजी तथा बाजरे की भाकरी बनाने की रूढ़ी है और इसमें एक खास बात है कि इस दिन खिचड़ी बनाते है जो चावल तथा छिलकेवाली मूँगदाल की बनाई जाती है। बहुत जगह ससुराल से सुहागने मायके में आती है। तिल-गुड़ की रोटी भी मीठे पकवान में बनाई जाती है। ये त्यौहार सामान्यतः ठंडी के दिनों में आता है और ठंडी में बाजरे की भाकरी तथा तिल-गुड़ का सेवन करने से शरीर में ऊष्णता रहती है। मराठी में हम बोलते है, "तिळगुळ घ्या गोड गोड बोला" अर्थात पुरानी कड़वी बाते छोड़कर नये रिश्तों को नये ढ़ाँचे में ढ़लने का समय मतलब मकर संक्रांति।

महाराष्ट्र में मकर संक्रांति के पावन पर्व पर एक प्रथा और भी है, जिस घर में नई शादी होती है तथा नई बहू का आगमन होता है तो मकर संक्रांति का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। नयी नवेली बहू को काले रंग की साड़ी पहनायी जाती है। हलवे के आभूषणों से

उसे सजाया जाता है, जैसे हलवे का मंगलसूत्र, कान की बालियाँ, चूड़ियाँ, कमरपट्टा, नेकलेस आदि। अड़ोस-पड़ोस की सुहागन महिलाओं को न्यौता देकर घर में हल्दी-कुमकुम के लिये आमंत्रण दिया जाता है। उन सुहागनों को तिल-गुड़, ओटी तथा वाण दिया जाता है (महाराष्ट्र में वाण का मतलब कुछ दैनंदिन उपयोग में आनेवाली चीजें दी जाती है)। आजकल तो पुरूष वर्ग के लिये भी आभूषण अर्थात हलवे के गहने मिलने लगे है। नई नवेली दुल्हन तथा दूल्हे का फोटो निकाला जाता है। इस तरह से बड़े ही हर्ष तथा उल्लास के साथ मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है। पुराने जमाने में महिलाओं के ऊपर बहुत पाबंदियाँ थी। शायद इन पाबंदियों से थोड़ा दूर जाने की वजह से ही यह हल्दी-कुमकुम का कार्यक्रम आयोजित किया जाता होगा। उस बहाने महिलाओं का आपस में मेल-जोल, हँसी-मजाक करना इसी उद्देश्य को लेकर मकर संक्रांति के दिन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता था।

पुराने जमाने में मकर संक्रांति के दिन सिर्फ हल्दी-कुमकुम का छोटा कार्यक्रम हुआ करता था लेकिन आजकल आर्थिक सुबत्ता के कारण इस पर्व को थोड़ी बड़ी मात्रा में मनाने का चलन है। इसमें आपसी मेल-जोल का प्रमुख हेतू बाजू में रखकर एक दूसरे में स्पर्धा हो रही है, जो कि बिल्कुल भी सही नहीं है। विमला के घर में इडली-सांबर है तो कमला ने डोसा बनाना ही है, विमला ने वाण में महिलाओं को स्टील की कटोरी दी तो मैं क्यू न प्लेट दूँ। ऐसी बातों से बहुत ही कष्ट होता है। मकर संक्रांति का अर्थ है हल्दी-कुमकुम, तिल-गुड़ और गेहूँ की सुहागन महिलाओं को ओटी देना लेकिन बदकिस्मती से यह सब धुंधला होता नजर आ रहा है। सभी त्यौहारों का भारत में मेरे ख्याल से एक ही हेतू रहता होगा, उपलब्ध संसाधनों से आपस में मिल-बाँटकर, मेल-जोल बढ़ाकर त्यौहार का आनंद लेना। आईये, तो इसी उद्देश्य के साथ मकर संक्रांति के पावन पर्व पर हम सब यही प्रण लेते है कि किसी से भी स्पर्धा नहीं करेंगे, सभी के साथ अच्छा व्यवहार रखेंगे, भाईचारा बढ़ाएँगे और सबसे अहम् एवं महत्वपूर्ण है कि, भारत की संस्कृति का मान समूचे विश्व में शान से लहरायेंगे।

''नाते तुमचे आमचे
हळूवार जपायचे ...
तिळगुळ हलव्यासंगे
अधिक दृढ करायचे ...
तिळगुळ घ्या गोड गोड बोला''

✦✧✦

श्री परिमल मेहता
पिता - सुश्री प्रियम मेहता,
एम.टी.एस.

राम नवमी का पावन पर्व

आदर्श रहेंगे वो हरदम, जो थे मर्यादा पुरुषोत्तम।
वनवास मिला कोई हर्ज नहीं, फर्ज को समझा कर्ज नहीं।
पितृभक्ति थी उनमें भरी, पिता की आज्ञा सर्वोपरि।
कहते थे अनमोल वचन, बात में उनके बड़ा वजन।
दिखने में थे सीधे साधे, चट्टान थे पर उनके हर वादे।
देगा कभी दिखाई नहीं, उनके जैसा भाई कहीं।
क्रोधमुक्त थी उनकी डगर, क्षमा के थे भवसागर।
निखरा उनका हर आयाम, ऐसे थे भगवान श्रीराम।
चलो मनाएं करके गर्व, राम नवमी का पावन पर्व।।

✦✧✦

श्री किशन चतुर्वेदी
भाई - सुश्री नीलम
क. अनुवादक

कांवड़ यात्रा

देवादिदेव भगवान शिव को समर्पित हिंदू वर्ष का पूरा श्रावण मास ही उत्सव और उल्लास से भरा होता है। गांव, मुहल्लों, शहरों और कस्बों में हर तरफ गेरूआ वस्त्र पहने शिव भक्त कावड़िए हरिद्वार, ऋषिकेश, गौमुख इत्यादि स्थलों से गंगा जल भरकर कांवड़ उठाए, मुख से बम-बम भोले का उद्घोष करते हुए अत्यंत शोभायमान लगते है।

वैदिक परम्परा में 'श्रावणे पूजयेत शिवम्' के नियमानुसार भगवान शिव की पूजा का श्रावण मास में विशेष महत्व है। यह मास बड़े ही हर्षोल्लास से भरा होता है। विशेषकर उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश और झारखण्ड जैसे राज्यों में तो महीने भर शिव-भक्तों का मेला लगा रहता है। हर साल श्रावण मास में लाखों की तादात में शिव भक्त लकड़ी से निर्मित मंदिरनुमा आकृति को कंधे पर रखकर इसमें गंगाजल लेकर नंगे पाँव सुदूर स्थानों से पदयात्रा करते हैं। इस लकड़ी की मंदिरनुमा आकृति को 'कांवड़' कहा जाता है, जब इसमें मूर्ति स्थापित की जाती है तब इसे ''बेवाण'' कहाँ जाता है। चतुर्दशी के दिन कांवड़ में रखकर लाए गंगाजल से शिव मंदिरों में जाकर भगवान शिव का अभिषेक किया जाता है।

कहने को तो यह धार्मिक आयोजन है लेकिन इसके सामाजिक सरोकार भी हैं। कांवड़ के माध्यम से जल की यात्रा का यह पर्व सृष्टि रूपी शिव की आराधना के लिए है। पानी आम आदमी के साथ-साथ पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, धरती पे निवास करनेवाले हजारों लाखों अदृश्य जीव-जंतुओं के लिए बेहद आवश्यक है। उत्तर भारत की भौगोलिक स्थिति को देखें तो यहाँ के मैदानी इलाकों में मानव-जीवन नदियों पर ही आश्रित हैं। नदियों से दूर-दराज रहने वाले लोगों को पानी का संचय करके रखना पड़ता है। कई बार मौसम और मानसून का भरोसा नहीं होता है। ऐसे में बारहमासी नदियों का ही आसरा होता है; और इसके लिए सदियों से मानव अपने बहुमुखी प्रतिभा और कला कौशल से नदियों का पूर्ण उपयोग करता है। कभी बाँध, कभी नहर तो कभी अन्य साधनों से नदियों के पानी को जल विहीन क्षेत्रों में ले जाने की कोशिश करता है।

प्रतीकात्मक तौर पर कांवड़ यात्रा का संदेश इतना भर है कि आप जीवनदायिनी नदियों के लोटे भर जल से जिस भगवान शिव का अभिषेक कर रहे हैं, वे शिव वास्तव में सृष्टि का ही दूसरा रूप हैं। धार्मिक आस्थाओं के साथ सामाजिक सरोकारों से रची कांवड़ यात्रा वास्तव में जल संचय की अहमियत को उजागर करती है। कांवड़ यात्रा का मूल संदेश जल का संचय करना और नदियों के पानी का उपयोग करना है, जिसके साथ हम नदियों के जल की स्वच्छता का भी ध्यान रखें, और इसके जल से खेत खलिहानों की सिंचाई करें तथा पशु-पक्षियों और पर्यावरण को पानी उपलब्ध कराएँ तो प्रकृति की तरह ही उदार भगवान शिव सहज ही हम पर प्रसन्न होंगे।

✦✧✦

कुम्भ मेला प्रयागराज

श्री विरेन्द्र कुमार
एम.टी.एस.

प्रयागराज की विशाल भूमि का वह भाग जहाँ प्रत्येक वर्ष मकर संक्रांति के दिन दूर-दूर से लोग गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम में स्नान करके एक माह तक पारिवारिक मोहमाया से दूर रहकर आत्मज्ञान और ईश्वर की आराधना में पूरी तरह समर्पित हो जाते है, ऐसे ही पावन-पुनीत धर्म की धरती पर विश्व के सबसे बड़े मेले कुम्भ मेले का आयोजन होता है।

कुम्भ मेले का मुख्य अनुष्ठान शहर की पवित्र नदी के अनुपम जलधारा में स्नान करना है। यह कुम्भ मेला पौष पूर्णिमा मकर संक्रांति से प्रारम्भ होकर पौष पूर्णिमा, मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी, माघ पूर्णिमा और महाशिवरात्रि के दिन आखिरी स्नान के साथ समाप्त हो जाता है।

हिन्दू धर्म के अनुसार, सृष्टि के सृजनकर्ता भगवान ब्रह्मा द्वारा इसे तीर्थराज अर्थात् तीर्थस्थलों का राजा कहा है। प्रत्येक बारह वर्ष में पूर्ण कुम्भ मेला, प्रत्येक छह वर्ष में अर्ध कुम्भ मेला और प्रत्येक एक सौ चौवालिस वर्षों के बाद एक महाकुम्भ मेले का आयोजन होता है।

कुम्भ मेले का अपना एक अलग ही महत्व है, महीनों पहले ही इसकी भव्य तैयारी शुरू हो जाती है जिससे तम्बुओं का एक विशाल शहर बस जाता है। मेले के दिन ब्रह्म मुहूर्त के समय ही भक्तों का विशाल झुंड संगम तट पर स्नान करने के लिए रवाना होता है, स्नान करने के बाद भगवान की सब पूजा-अर्चना करते हुए दान-पुण्य कार्य करते है। यहाँ अनेक महान विभूतियों का दिव्य-दर्शन प्राप्त होता है। यहाँ पर नागा साधु विशेष आकर्षण का केन्द्र रहते है। यहाँ बच्चे, बूढ़े और जवान सभी आकर एक अलग अनुभूति को जीते हैं। यहाँ पर देश-विदेश से आये लोगों के लिए रहने, खान-पान और मनोरंजन की अनेक सुविधाएँ उपलब्ध होती है। यहाँ रहने के लिए छोटे-छोटे तंबू लगे रहते है जो अत्याधुनिक सुविधा से पूर्ण होते है। यहाँ पर भोजन प्रसाद के रूप में अनेक जगहों पर वितरित किये जाते हैं। लोग अपनी आस्था से जगह-जगह पर चाय, हलवा, पुड़ी-सब्जी और अत्यंत मधुर व्यंजनों का मुफ्त में भंडार लगाकर लोगों को वितरित करते है। जहाँ एक तरफ सर्कस, झूला और प्रदर्शनी चल रही होती है तो दूसरी तरफ साधु-संतों का विश्व कल्याण के लिए शास्त्रार्थ। यही इस पावन धरती की महानता है। यहाँ पूरा सुनियोजित तरीके से बनाया हुआ एक अद्भुत नजारा होता है जिसमें लोहे के छोटे-छोटे पाइपों के पुल, अत्याधिक भीड़ को नियंत्रित करने के लिए घुमावदार बाँस की गलियाँ और इनके आगे पुलिस प्रशासन के साथ स्वयं सेवकों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ लगी होती है। जैसे-जैसे शाम होती है, पूरा मेला क्षेत्र इंद्रपुरी की तरह चमकने लगता है, चारों तरफ जगमगाहट, मधुर संगीत, वेद मंत्र, गंगा आरती की भव्य ज्योति स्पष्ट मालूम पड़ती है और ठिठुरती हुई ठण्ड की रात में लोग कंबल ताने संतों की मधुर वाणी सुनते हुए गहरी निद्रा में लीन हो जाते हैं।

✦✧✦

गंगा दशहरा

श्री आकाश चतुर्वेदी
भाई सुश्री नीलम
क.अनुवादक

गंगा दशहरा भारत का एक प्रमुख त्यौहार है, जिसे गंगा अवतरण के नाम से भी जाना जाता है। इसी दिन गंगा नदी, जिन्हें हम माँ गंगा मानते हैं, का अवतरण स्वर्ग से पृथ्वी पर हुआ था, तभी से ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष के दसवें दिन को गंगा दशहरा के रूप में बड़ी श्रद्धा से मनाया जाता है।

सनातन धर्म में स्नान, दान का विशेष महत्व है और इसे हर उपवास, त्यौहार के साथ इसलिए भी जोड़ा गया है ताकि पृथ्वी पर इंसानियत जिंदा रहें और किसी की मदद करने की इच्छा इंसान में हमेशा बनी रहे। लोगों में आपसी सौहार्द और प्रेम बना रहे इसलिए उपवास व त्यौहारों को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग माना जाता है। व्रत करने का विधान इसलिए बनाया गया है, जिससे कि उपवास करके आपका स्वास्थ्य अच्छा बना रहे।

स्कन्दपुराण के अनुसार, ज्येष्ठ शुक्ल दशमी संवत्सरमुखी मानी गयी है, इसमें स्नान-दान का विशेष महत्व है, किसी भी नदी पर जाकर अर्घ्य (पूजा इत्यादि) एवं तर्पण किया जाता है, जिससे कि उस नदी की स्वच्छता का भी ध्यान रखा जा सके। इस प्रकार व्रत और माँ गंगा की आराधना पूर्ण की जाती है। पुराणों के अनुसार ऐसा करने वाला महापातकों के बराबर के दस पापों से छूट जाता है, ऐसा इसलिए कहा गया है ताकि आप अपने आसपास की नदियों का ध्यान रखें और माँ गंगा की तरह उनको भी स्वच्छ रख सकें। समाज के लिए ऐसा काम करनेवाला स्वयं पापों से मुक्त हो जाता है।

गंगा दशहरा अर्थात ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की दशमी के दिन देश-विदेश से भारी मात्रा में श्रध्दालु माँ गंगा के तट पर आते हैं तथा स्नान करते हैं और पूजा पाठ के साथ ही गरीब, जरूरतमंदों को दान भी देते हैं। तन के साथ-साथ मन-मस्तिष्क को भी पवित्र बनाने का पर्व है गंगा दशहरा। बीते वर्ष जून में कोरोना वायरस और लॉकडाऊन के बीच गंगा दशहरा मनाया गया, ऐसी मान्यता है कि इस दिन माँ गंगा के स्मरण मात्र से ही सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

पौराणिक कथाओं में वर्णन है कि महाराजा भगीरथ के अखंड तप से प्रसन्न होकर जिस दिन माँ गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई वह बहुत ही दिव्य और पवित्र दिन था। यह दिन था ज्येष्ठ माह शुक्ल पक्ष की दशमी। वैसे तो माँ गंगा के जल में स्नान करने के लिए किसी विशेष दिन का इंतजार नहीं करना पड़ता क्योंकि माँ गंगा को पाप-नाशिनी कहा जाता है। लेकिन मनुष्य नदियों पर स्नान और पूजा पाठ तो करता है, पर इसके मुख्य उद्‌देश्य से भटक गया है, अर्थात् नदियों की स्वच्छता, जिसपर लोग बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहें है और अमृततुल्य नदियों के जल में प्रदूषण बढ़ गया है।

इस लेख को लिखने का मेरा उद्‌देश्य त्यौहार से परिचय कराना तो है ही, साथ साथ इन त्यौहारों के मूल उद्‌देश्यों से परिचय कराना भी है। हम किसी त्यौहार को प्रेम और सौहार्द के लिए ही मनाते है, परन्तु जब तक हम इन त्यौहारों के मूल उद्‌देश्यों को नहीं जानेंगे तब तक यह उत्सव क्षणिक ही रहेगा, क्योंकि नदियों की स्वच्छता का ध्यान रखना ही गंगा दशहरा का मूल उद्‌देश्य है। अगर नदी स्वच्छ नहीं रहेगी तो यह उत्सव हमारी आनेवाली पीढ़ियाँ शायद न देख पाए।

अतः वर्तमान परिवेश में प्रत्येक को एक जागरूक नागरिक की तरह सभी व्रतों, त्यौहारों और उत्सवों का आयोजन, इनके धार्मिक और सामाजिक सरोकारों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए।

✦✧✦

श्री अभिलेख कुमार निराला
एम.टी.एस.

शिरूई लिली त्यौहार

शिरूई लिली त्यौहार मणिपुर का वार्षिक सांस्कृतिक त्यौहार है जिसे मणिपुर टुरिज्म विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष नवम्बर माह में मनाया जाता है। पहले यह त्यौहार केवल स्थानीय शिरूई गाँव के उत्वरूल जिले में ही मनाया जाता था।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है लिली जो एक प्रकार का पुष्प है जो केवल मणिपुर के शिरूई गाँव में ही पाई जाती है। इसके संरक्षण में स्थानीय लोग इस पुष्प की रक्षा के लिए यह त्यौहार मनाते थे किन्तु बाद में 2017 में मणिपुर की सरकार ने इसे राजकीय त्यौहार घोषित कर दिया तब से प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है।

शिरूई लिली पुष्प को मणिपुर की सरकार ने 1989 ई. में राजकीय पुष्प घोषित किया था। इसे सर्वप्रथम 1946 में ब्रिटिश वनस्पतिशास्त्री फ्रैंक एफ किंग्डम ने खोजा था।

प्रत्येक वर्ष मई माह के अंतिम सप्ताह से जून माह के दूसरे सप्ताह तक यह पुष्प खिलते है। इसे सतरंगी पुष्प भी कहा जाता है क्योंकि इस पुष्प को ध्यान से देखने पर इन्द्रधनुष के सातों रंग इस पुष्प में विद्यमान है।

पाँच दिनों तक चलनेवाला यह त्यौहार मुख्य रूप से उत्वरूल, शिलई एवं हँगपँग में मनाया जाता है।

इन पाँच दिनों के त्यौहार में मणिपुर राज्य के सांस्कृतिक कार्यक्रमों, उनके द्वारा बनायी गयी वस्तुओं, कलाकृतियों, खेल, संगीत एवं उनके भोजन का प्रदर्शन होता है। मुख्य रूप से तांग खुल नागा जनजाति का।

इस त्यौहार का मुख्य आकर्षण होता है :

शिरॉक

शिफफ

मिस स्प्रिंग पेजेंट प्रतियोगिता

शिरॉक : इसमें देश-विदेश भर से आए रॉक बैंड की प्रतियोगिता होती है। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करनेवाले बैंड को ''रॉक बैंड संगीत खिताब'' प्रदान किया जाता है। इसके उद्घाटन एवं समापन समारोह में विदेशी रॉक बैंड आकर्षण बिन्दु होते है।

शिफफ : एक खाना प्रतियोगिता होती है। जिसमें देश-विदेश एवं स्थानीय शेफ अपने खानो पकाने के कौशल एवं स्वादिष्ट भोजन की प्रदर्शनी करते है।

मिस स्प्रिंग पेजेंट : प्रतियोगिता में लड़कियाँ पहली बार रैंप वॉक का खिताब पाने के लिए जो कि इस त्यौहार का सबसे आकर्षक एवं सुंदर दृश्य होता है।

यह त्यौहार मुख्य रूप से विलुप्त होने के कगार पर पहुँच चुके मणिपुर के राजकीय पुष्प शिरूई लिली के संरक्षण के बारे में जागरुकता फैलाने के लिए आयोजित किया जाता है जिससे उत्वरूल में पर्यटन को बढ़ावा मिल सके।

स्थानीय लोग इस पुष्प को काशॉन्ग टिमरावन के रूप में जानते हैं। शिरूई लिली को स्थानीय लोग दयालु शक्ति मानते है, जो शिरूई की चोटियों पर रहती है और इसका संरक्षण करती है।

अतः हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत, धरोहर एवं प्राकृतिक भेंट जो हमें ईश्वर ने प्रदान की है इसे संजोकर रखना चाहिए।

इस शिरूई लिली पुष्प को कई लोगों ने देश-विदेश में ट्रांसप्लांट करना चाहा किन्तु ये शिरूई पहाड़ियों के अलावा कहीं भी पनप नहीं सकी, जबकि इस आधुनिक युग में कुछ भी कर पाना असंभव नहीं।

लेकिन कहते है ना कि ईश्वर के अनुमति के बिना पत्ते भी नहीं हिलते है। यहाँ पर चरितार्थ होता है।

ये सब देख और सुनकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि ईश्वर ने स्वयं इस खास स्थान को ही चुना है जो हमारा देश भारत है।

✦✧✦

छठ पूजा

सुश्री प्रियंका कुमारी
एम.टी.एस.

भारत में छठ सूर्योपासना के लिए प्रसिद्ध पर्व है। मूलतः सूर्य षष्ठी व्रत होने के कारण इसे छठ कहा गया है। यह लोकपर्व मुख्य रूप से बिहार झारखण्ड तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में मनाया जाता है।

यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। पहली बार चैत्र में और दूसरी बार कार्तिक में। चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनायें जाने वाले छठ पर्व को चैती छठ व कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनायें जानेवाले पर्व को कार्तिकी छठ कहा जाता है। यह प्राकृतिक सौंदर्य और परिवार के कल्याण के लिए की जानेवाली एक महत्वपूर्ण पूजा है। इस पूजा में गंगा स्थान या नदी तालाब जैसे जगह होना अनिवार्य हैं यही कारण है कि छठ पूजा के लिए सभी नदी तालाब की सफाई किया जाता है और नदी तालाब को सजाया जाता है।

छठ व्रत के संबंध में अनेक कथाएँ प्रचलित है, उनमें से एक कथा के अनुसार जब पांड़व अपना सारा राजपाट जुएँ में हार गए, तब श्री कृष्ण द्वारा बताये जाने पर द्रौपदी ने छठ व्रत रखा, तब उनकी मनोकामनाएँ पूरी हुई तब पांड़वों को उनका राजपाट वापस मिला। लोक परम्परा के अनुसार सूर्यदेव और छठी मईया का संबंध भाई-बहन का है। लोक मातृका षष्ठी की पहली पूजा सूर्य ने ही की थी।

छठ पूजा चार दिवसीय उत्सव है। इस दौरान व्रतधारी लगातार 36 घंटे का व्रत रखते है। इस दौरान वे पानी भी ग्रहण नहीं करते।

नहाय रताय

छठ पर्व का पहला दिन जिसे 'नहाय-रताय' के नाम से जाना जाता है। उसकी शुरूआत चैत्र या कार्तिक महीने के चतुर्थी कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से होता है। सबसे पहले घर की सफाई कर उसे पवित्र किया जाता है। उसके बाद व्रतधारी नाखून वगैर को अच्छी तरह काटकर, स्वच्छ जल में अच्छी तरह बालों को धोते हुए स्नान करते है। व्रती इस दिन सिर्फ एक बारी ही खाना खाते है। खाने में व्रती कद्दू की सब्जी, मुंग, चना दाल, चावल का उपयोग करते है। तली हुई पूरियाँ, पराठे, सब्जियाँ आदि वर्जित है।

खरना और लोहंडा

छठ पर्व का दूसरा दिन जिसे खरना या लोहंडा के नाम से जाना जाता है, चैत्र या कार्तिक महीने के पंचमी को मनाया जाता है। इस दिन व्रती पूरे दिन उपवास रखते है। शाम को चावल गुड़ और गन्ने के रस का प्रयोग कर खीर बनायी जाती है। इसें सूर्यदेव को नैवेद्य देकर उसी घर में एकान्त करते है। पुनः व्रती खाकर अपने सभी परिवार जनों एवं मित्रों-रिश्तेदारों को 'खीर-रोटी' का प्रसाद खिलाते है। इसके बाद अगले 36 घंटों के लिए व्रती निर्जला व्रत रखते है। इस दौरान सभी अवसरों पर जैसे प्रसाद बनाते समय, खरना के समय, घाट पर जाते समय सभी भक्ति-भाव से लोकगीत गाते है। खरना के बाद उस दिन के मध्यरात्रि में व्रती 'ठेकुआ' बनाती है। यह आटे का बनता है जिसे घी में तला जाता है तथा इसे मिट्टी के चूल्हे पर ही बनाया जाता है।

संध्या अर्घ्य

छठ पर्व का तीसरा दिन जिसे संध्या अर्घ्य के

नाम से जाना जाता है, चैत्र या कार्तिक शुक्ल षष्ठी को मनाया जाता है। पूरे दिन सभी लोग मिलकर पूजा की तैयारियाँ करते है। घर के सदस्य नदी या तालाब पर जाकर साफ-सफाई कर के घाट बनाते है। छठ पूजा के लिए बांस की बनी हुयी टोकरी जिसें दउरा कहते है उसमें पूजा के प्रसाद, फल ड़ालकर रख दिया जाता है। घाट पर पूजा अर्चना करने के बाद शाम को एक सूप में नारियल, पाँच प्रकार के फल और पूजा का अन्य सामान लेकर दउरा में रखकर घर का पुरूष अपने हाथों से उठाकर छठ घाट तक लेकर जाता है। छठ घाट की तरफ जाते हुए रास्ते में छठ के गीत –

''काँच ही बाँस के बहँगिया, बहँगी लचकति जाए ... बहँगी लचकती जाए ...''। मधुर स्वर में गाती है। घाट पर जाकर महिलाएँ नदी से मिट्टी निकाल कर छठ माता का जो चौरा बना रहता है वहाँ पूजा का सारा सामान रखकर दीप जलाती है। सूर्यास्त से कुछ समय पहले सूर्य देव की पूजा का सारा सामान लेकर घुटने भर पानी में जाकर खड़े हो जाते है और डूबते हुए सूर्य देव को अर्घ्य देकर पाँच बार परिक्रमा करती है। बहुत सारे लोग घाट पर रात भर ठहरते है वही कुछ लोग छठ का गीत गाते हुए सारा सामान लेकर घर आ जाते है।

उषा अर्घ्य

चौथे दिन कार्तिक शुक्ल सप्तमी की सुबह उदियमान सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। सूर्योदय से पहले ही व्रती लोग घाट पर उगते सूर्यदेव की पूजा हेतू पहुँच जाते है और संध्या अर्घ्य के तरह ही पूजन करते है। व्रती लोग पूरब की ओर मुँहकर पानी में खड़े होते है व सूर्योपासना करते है। पूजा-अर्चना समाप्त होने के बाद प्रसाद वितरण किया जाता है। व्रती घर आकर पीपल के पेड़ की पूजा करती है, पूजा के बाद दूध का शरबत पीकर तथा प्रसाद खाकर व्रत पूर्ण करती है। व्रती लोग खरना के दिन से आजतक निर्जला उपवास के बाद आज सुबह नमकयुक्त भोजन करती है। इस तरह छठ व्रत समाप्त होता है।

✦✧✦

त्यौहार : एक सम्मान भारत देश का

सुश्री अमृता प्रभाकर राऊत
स.ले.प.अ.
शाखा कार्यालय, मुंबई

सांस्कृतिक विविधता से भरपूर है देश हमारा
जाना जाता है मनाने के लिए
परंपरा और सम्मान से भरे त्यौहार।
ऐसा भव्य देश है मेरा जो सिखलाएँ
भारत देश के त्यौहारों में है
विविधता में एकता का संदेश।
आओ जाने हम हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
इन सभी धर्मों के त्यौहारों को
और अभिवंदन करे भारत की संस्कृति को।
पकवानों और उपहारों की खुशबू लाए त्यौहार
स-परिवार एकजुट मिल कर मनाएँ
भारत के सभी सुनहरे त्यौहार।
खुशियों की सौगात लाए
विविध रंगों की बरसात लाए
जिंदगी में प्यार की बौछार लाए यह त्यौहार।
इन त्यौहारों का निराला हर्ष और उल्लास
मनाएँ बच्चे, बूढ़े और जवान,
ऐसे है महान भारत देश के त्यौहार।

✦✧✦

श्रीमती विद्या मोहबे
एम.टी.एस.

गणेश उत्सव

पुराणों के अनुसार भाद्रपद शुक्ल की चतुर्थी को भगवान श्री, गणेश का जन्म हुआ था । इसी दिन गणेश उत्सव देश के कई बडे-छोटे शहरो में मनाया जाता है । विशेषतः महाराष्ट्र प्रदेश में इस त्यौहार को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है । ऐसा कहा जाता है कि, महाराष्ट्र में पेशवा राजाओ ने इस त्यौहार को मनाने की परंपरा शुरू की थी जिसे भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई के समय श्री बाल गंगाधर तिलक द्वारा सार्वजनिक रुप से मनाने की शुरूवात की गई । श्री तिलक द्वारा इस सार्वजनिक गणेश उत्सव शुरु करने के पीछे अंग्रेजो की नीतियों के खिलाफ जनमानस को एक जुट करना मुख्य उद्देश्य था। स्वतंत्रता संग्राम के बाद भी गणेश उत्सव मनाने की परंमपरा देश में बनी रही ।

यह उत्सव दस दिनो तक मनाया जाता है । श्री गणेश की भव्य प्रतिमाओं को ढोल-ताशो की गूंज में घरो में व बस्तियों में सार्वजनिक रुप से स्थापित किया जाता है । अपनी इच्छाशक्ति के आधार पर लोगों द्वारा यह त्यौहार देढ दिन, तीन दिन, पांच दिन व सार्वजनिक उत्सव दस दिनो तक मनाया जाता है ।

हिंदू धर्म की मान्यता के अनुसार सभी दुःखों को हरने वाले प्रथम पूज्य श्री गणेश की आराधना व पूजा नियमित रुप से दसों दिन सुबह-शाम की जाती है, इस अवसर पर कई प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों को व विभिन्न प्रकार की प्रतिस्पर्धा आयोजित की जाती है । कई जगहो पर सार्वजनिक भोज का आयोजन भी किया जाता है । दसो दिनों तक सभी ओर मंगलमय वातावरण की अनुभूति होती है व दसवे दिन श्री गणेश की प्रतिमा को ढोल-ताशों की गूंज के साथ सार्वजनिक जल स्त्रोत जैसे नदियों, तालाबों में विसर्जित किया जाता है ।

जिस उद्देश्य से श्री तिलकजी ने यह उत्सव सार्वजनिक रुप से मनाने की परंपरा शुरु की थी, बहुत हद तक उसे चरितार्थ किया जाता है परंतु कहीं कहीं कुछ लोगों द्वारा इस उत्सव को मनाने में हमारी परंपराओं को भूलकर अतिरेक किया जाता है जिसकी वजह से त्यौहार की गरिमा धूमिल होती है । कुछ वर्षो से मूर्तियाँ बनाने मे मिट्टी के बजाय प्लास्टर ऑफ पेरिस का उपयोग किया जा रहा है, जो कि हमारे पर्यावरण की दृष्टि से घातक सिध्द हो रहा है । कुछ सार्वजनिक मंडल द्वारा जोर-जोर से लाऊडस्पीकर पर गाने आदि बजाये जाते हैं जिससे ध्वनि प्रदूषण बढ़ जाता हैं । हमारे देश में पुरानी परंपराओं का संजोये रखने की प्रथा चली आ रही है यदि इन्हे उनके मूल रुप में सादगी से मनाया जाये तो वह मानव समाज के लिये वरदान साबित होती है ।

✦✧✦

श्री नाजिश खान

लेखापरीक्षक,

शाखा कार्यालय, मुंबई

त्यौहार और राष्ट्रवाद

त्यौहार हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है और इसकी महत्ता इस बात से समझी जा सकती है कि किस तरह गणेश जयंती, शिवाजी जयंती इत्यादि जैसे त्यौहार लोगों को जोड़ने और उनमें संगठित होकर लड़ने की ताकत प्रदान करता है। भारत की आजादी में इन त्यौहारों की भूमिकाओं को नहीं भुलाया जा सकता है। त्यौहारों ने न सिर्फ नई ऊर्जा, नई चेतना दी बल्कि खुद को संगठित कर अँग्रेजों से लड़ने का हौसला दिया।

वैसे तो आधुनिक राष्ट्रवाद सबसे पहले यूरोपियन देशों में पैदा हुआ परंतु धीरे-धीरे से दुनिया के सभी हिस्सों में फैल गया। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। भारत में दिसंबर 1985, में इण्डियन नेशनल कॉंग्रेस की बुनियाद रखी गई और इसकी पहली सभा गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज मुंबई में हुई। तब के राष्ट्रवादी, याचिका, प्रार्थना और प्रचार के द्वारा राष्ट्रीय मुद्‌दों को लोगों के बीच में उठते रहे। परंतु इन तरीकों से वे सभी वर्ग के लोगों को इकठ्ठा करने और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने में असमर्थ रहें। मुंबई में अँग्रेजों से लड़ने की कमान बाल गंगाधर तिलक ने अपने कँधों पर उठा रखा था। उन्होंने सबसे पहले लोगों को जोड़ने के लिए सार्वजनिक स्तर पर त्यौहारों को मनाना शुरू कर दिया। गणेश जयंती और शिवाजी जयंती पर हजारों लोगों की भीड़ जमा होने लगी। तब उन्होंने लोगों को भाषण देते हुए कहा - ''स्वराज हमारा जन्मसिद्‌ध अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेंगे।'' इस तरह उन्होंने एक धार्मिक त्यौहार को राष्ट्रीय स्तर पर लाकर खड़ा कर दिया।

कलकत्ता में भी बंगाल विभाजन के विरोध के दौरान लोगों ने एक दूसरे को राखी बाँधते हुए, अंग्रेजों को कड़ा संदेश दिया और बताया कि उनकी ''बाँटो और राज करो'' की नीति बिल्कुल गलत है और पूरा भारत इस फैसले के खिलाफ है। बाद में, 1911 में अंग्रेजों को ये फैसला वापस लेना पड़ा। आज भारत में स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त), गणतंत्र दिवस (26 जनवरी), गांधी जयंती (2 अक्टूबर) इत्यादि जैसे राष्ट्रीय त्यौहार बड़ी ही धूमधाम से मनाए जाते है। ये त्यौहार न सिर्फ हमें एक होने का एहसास दिलाता है बल्कि हमें भारत के निर्माण में एक साथ मिलकर काम करने की प्रेरणा देता है।

✦✧✦

पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा: एक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

श्री वसीम मिन्हास
वरिष्ठ अनुवादक

उत्सवधर्मिता भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा है। जीवन की आपाधापी में उत्सव के चंद सुखद क्षण मानव मन से उदासी को विदा कर आनंद, उल्लास और उमंग से भर देते हैं। उत्सव वृत्ति सामूहिकता की भावना का संचार भी करती है। विभिन्न धर्मावलम्बियों वाले इस उत्सव बहुल देश में दुर्गापूजा या विजयादशमी का महत्वपूर्ण स्थान है। वैसे तो विजयादशमी का पर्व पूरे भारतवर्ष में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है किन्तु विशेष रूप से पश्चिम बंगाल की स्थानीय संस्कृति में इसका अपना अलग ही रंग निखरकर सामने आता है।

रामायण की रचना लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में हुई है लेकिन पंद्रहवीं सदी के सुप्रसिद्ध बांग्ला कवि कृत्तिवासी ओझा द्वारा रचित कृत्तिवासी रामायण में शक्तिपूजा की कथा की मौलिक उद्भावना मिलती है। इसकी कथा के अनुसार भगवान राम ने रावण की आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त करने हेतु शक्तिस्वरूपा देवी दुर्गा की पूजा की थी। दुर्गा पूजा के दसवें दिन उन्होंने रावण को मारा, इसलिए इसे विजयादशमी के नाम से जाना जाता है। इसी पौराणिक कथा पर आधारित दुर्गा पूजा या विजयादशमी हिन्दु बंगालियों का सबसे बड़ा उत्सव है। देवी दुर्गा को शक्ति की देवी कहा जाता है। दुर्गा पूजा की सबसे आकर्षक, अनोखी और सुन्दर परंपरा पश्चिम बंगाल में देखने को मिलती है। शहर में चारों ओर महलनुमा विशाल पंडाल, पूजा की पवित्रता, रंगों की छटा, तेजस्वी चेहरों वाली देवियाँ, सिंदूर खेला, धुनुची नाच जैसे मनमोहक नजारों की शोभा ही कुछ और होती है। जिसके दर्शनाभिलाषी केवल हिंदू या बंगाली ही नहीं अपितु अन्य धर्मों के लोग भी होते हैं। इस उत्सव के दौरान पश्चिम बंगाल का पूरा माहौल शक्ति की देवी, दुर्गा के रंग में रंगा प्रतीत होता है। यहाँ नवरात्रि में माँ दुर्गा के महिषासुर मर्दिनी स्वरूप को पूजा जाता है। प्रतिमा में देवी महिषासुर का वध करती हुई देखी जा सकती हैं। अपनी दसों भुजाओं में विविध अस्त्र-शस्त्र लिए देवी, सिंह पर विराजमान होती हैं। उनके साथ सरस्वती, लक्ष्मी, गणेश और कार्तिकेय की प्रतिमाएं भी बनाई जाती हैं। इस पूरी प्रस्तुति को चाला कहा जाता है। बंगाल में दुर्गा पूजा को लेकर चली आ रही परम्पराओं में सबसे प्राचीन चोखूदान की परंपरा है। यूँ तो सम्पूर्ण प्रतिमा अर्थात चाला निर्माण की प्रक्रिया तीन चार महीने पहले ही प्रारंभ हो जाती है। किन्तु माँ की आँखों को सबसे आखिर में बनाया जाता है इसे ही चोखूदान कहा जाता है। नवरात्रि के आठवें दिन अष्टमी पुष्पांजलि का त्यौहार मनाया जाता है। पंडालों में इस दिन दुर्गा की नौ शक्तियों का आवाह्‌न किया जाता है। बंगाल के दुर्गा पूजा की सबसे बड़ी खासियत है कि यह त्यौहार यहाँ केवल पंडालों तक में ही सीमित नहीं होता। यहाँ दुर्गा पूजा की दो विधियाँ प्रसिद्ध हैं एक जो बहुत बड़े पैमाने पर पंडालों और बड़े-बड़े सामुदायिक केन्द्रों में किया जाता है। जिसे पाड़ा कहा जाता है और दूसरा बारिर जो घर में मनाया जाता है। बारिर का अधिकतर आयोजन कोलकाता के उत्तर और दक्षिण क्षेत्रों में होता है। कुमारी पूजा और संध्या आरती का विधान भी पूरी आस्था से संपन्न किया जाता है। संगीत, शंख, ढोल, नगाड़ों, घंटियों और नाच गाने के बीच प्रत्येक नौ दिन संध्या आरती की रस्म की जाती है। बंगाली पारम्परिक परिधान और साज-सज्जा लिए, स्त्री-पुरुष इसकी

सुन्दरता में चार चाँद लगा देते हैं। बंगाल की दुर्गा पूजा में वहाँ की लोक संस्कृति का अनिवार्य अंग धुनुची नाच है जो माँ भवानी की शक्ति और ऊर्जा बढ़ाने के निमित्त किया जाता है। इसे देखने दूर-दूर से लोग यहाँ पहुँचते हैं। धुनुची नृत्य सप्तमी से शुरू होता है और अष्टमी-नवमी तक चलता है। दशमी के दिन महिलाएं सिंदूर खेला मनाकर माँ को पुनः अगले वर्ष आने का अनुग्रह करती हैं। पूजा के अंतिम दिन, दशमी को विजय दशमी मनाई जाती है। इस दिन बंगाल की सड़कों पर खूब भीड़भाड़ और गहमागहमी दिखाई पड़ती है। इसी दिन दुर्गा की मूर्ति का विसर्जन किया जाता है और मान्यता है कि माँ अपने परिवार में वापस लौट जाती हैं। बंगाल में दुर्गापूजा का केवल धार्मिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी विशेष महत्व है। यहाँ निर्मित होने वाली प्रतिमाओं,पंडाल-चौकियों, पूजा के विधि-विधान लोक-नृत्य, संगीत परम्पराओं के अनुपालन में बंगाल की संस्कृति सक्षात साकार हो उठती है किन्तु विगत कुछ वर्षों से बाजार तथा उत्तर आधुनिक परिवेश ने इसके मूल स्वरुप में अवांक्षित बदलाव उपस्थित किये हैं। पूजा-पंडाल तथा विसर्जन में लोक कलाओं के स्थान पर डी.जे. नृत्य संगीत, आतिशबाजी, रौशनी एवं तामझाम का फैशन दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है, जिस पर लाखों रुपये फूंक दिए जाते हैं और धन उगाही के लिए जनता पर अनावश्यक दबाव बनाया जाता है। वस्तुतः दुर्गा पूजा बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है, इसे इसी रूप में मनाया जाना चाहिए।

✦✧✦

पर्व नव वर्ष का

श्री यशस्वी कुमार दीपक
स.ले.प.अ.

फूल खिले अधरों पे, चहकी है मुस्कान,
दिल की वृद्ध उमंगे भी हो उठी जवान।

नयी ऊँचाईयाँ छूने को दिल ने ली ठान,
भूल बीते साल की पीड़ा, लें नयी उड़ान।।

मन की कड़वाहट को भूल कर हम मिलें,
आओ अब तो साथ मिल कर सब चलें।।

साल है नया, लाए सबके लिए नयी सौगात,
नये सपने हों, नयी दिशा हो, हो नयी बात।।

सुख दुख अनंतिम है, खुशी की आस रहे;
वर्तमान में जीना है बस इसका आभास रहे।।

सभी स्वज़नों को याद कर खुशियाँ जताने का,
उमंग का पर्व है ये अपनों के साथ मनाने का।।

गुडी पड़वा हो या हो विशु, बिहू या उगादी,
होली या फर्स्ट जनवरी, नवरोज़ या बैसाखी।

किसी भी धर्म, प्रांत से हो दिन नव वर्ष का,
होता है ये त्यौहार सदा उल्लास और हर्ष का।।

✦✧✦

श्रीमती सुरेखा चांदोरकर
स.ले.प.अ.

वार्षिक स्नेह सम्मेलन

भारत वर्ष में वैसे तो साल भर में कितने ही त्यौहार आते है जो हम अपने परिवार एवं दोस्तों के साथ मनाते है । सभी त्यौहारों के साथ कुछ पुरानी धार्मिक/सामाजिक मान्यताएँ जुड़ी होती है जिसके आधार पर हर कोई अपनी-अपनी सुविधा एवं क्षमता के अनुसार त्यौहार मनाता है।

इन सभी त्यौहार के अलावा मेरे लिए एक पर्व ऐसा भी है जिसके साथ कोई मान्यता जुड़ी नहीं है, व इसे हम सभी अपने कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारियों के साथ मिलकर मनाते है। इसकी तैयारी हेतु हमें किस दिन क्या पहनना है इसकी योजना बनाकर महीने भर पहले से ख़रीदारी शुरू करते है। इसमे ना कोई उम्र में छोटा-बड़ा होता है ना ही कोई पद में। इससे हम सभी को साल भर किए गए कार्य के बाद मन एवं दिमाग के लिए एक रिलैक्स होता है एवं इसके बाद नए साल में कार्यों के लिए नया उत्साह और जोश आता है जिसका नाम है-वार्षिक स्नेह सम्मेलन जो प्रतिवर्ष हम पुराने वर्ष को अलविदा एवं नव वर्ष के आगमन पर पूरे तीन दिवस तक मनाते है । इन तीन दिनों में हर तरफ रंगबिरंगा, खुशनुमा वातावरण रहता है। हरतरफ नववर्ष की बधाई के स्वर गूँजता नजर आता है। इस सम्मेलन के लिए कार्यालय में भी पूरे एक-दो महीने पहले से ही तैयारी चालू हो जाती है जिसमे कई तरह के खेल प्रतिस्पर्धा, नाटक, म्यूजिकल इन्स्ट्रूमेंट, गीतगायन एवं फेट इत्यादि का आयोजन किया जाता है । सम्मेलन के आखिरी दिन स्नेह भोजका आयोजन भी किया जाता है जिसमे कार्यालय के सभी सदस्य एक साथ भोजन का आनंद लेते है । इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए वर्ष 2019 के वार्षिक स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया गया था जो सबसे भिन्न एवं अनोखा था जिसमे पहली बार नृत्य का कार्यक्रम रखा गया था । इस सम्मेलन पर अपना अनुभव मैं सभी साथियों के साथ साझा कर रही हूँ।

माह नवंबर 2019, मैं छुट्टी में पुणे गयी थी, वहाँ से लौटकर जब कार्यालय में आई तो किसी ने पूछा कि क्या नृत्य में भाग लोगी, साथ में यह भी बताया गया कि कोरियोग्राफर की व्यवस्था भी कार्यालय द्वारा की जाएगी ।वैसे तो नृत्य का शौक था, किन्तु आता नहीं था । जब कभी घर-परिवार में कोई भी कार्यक्रम होता था नृत्य जरूर होता तब हम बच्चों को देखकर उनकी नकल करते हुये हाथ-पैर हिला लिया करते थे । इसलिए कोरियोग्राफर का नाम सुनते ही मैं नृत्य में भाग लेने के लिए तैयार हो गई । वैसे भी उम्र के 50 पड़ाव के बाद नृत्य अपने आपमें एक चुनौती थी । कुछ ही दिनों मे नृत्य की प्रैक्टिस चालू हो गयी । पहले तो उन्होने गाने तय किए उसके बाद यह तय हुआ कि कौनसे गाने पर कौन प्रतिभागी नृत्यकर सकता है और उसके बाद एक-एक स्टेप्स सिखाते हुये नृत्य की प्रैक्टिस चालू हो गयी । प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा 2 से 3 गानों पर नृत्य किया जाना था, साथ ही रेट्रो नृत्य भी था । प्रतिदिन 4-4.30 बजे

कोरियोग्राफर आते थे और हमें नृत्य सिखाते थे । धीरे धीरे गाना याद करते हुये हम नृत्य सीखते रहे । घर जाकर भी हम कोरियोग्राफर द्वारा सिखाए हुये स्टेप्स को याद करते हुये प्रैक्टिस किया करते थे, ऐसे ही एक महीना निकल गया। हम अपने नियमित कार्यालयीन कार्य को करते हुये नृत्य की प्रैक्टिस के लिए भी समय निकालते रहे । माह दिसंबर में वार्षिक लेखापरीक्षा योजना का कार्य भी था किन्तु वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं वरिष्ठ उप-महालेखाकार महोदय के सहयोग से वह भी अच्छे से सम्पन्न हो गया । सम्मेलन से पंद्रह दिन पूर्व कार्यक्रम की संयोजिका एवं वरिष्ठ उप-महालेखाकार महोदया श्रीमती पल्लवी होलकर द्वारा नृत्य को अंतिम रूप देने से पूर्व एक बार देखना था । थोड़ा तनाव तो था किन्तु कोरियोग्राफर द्वारा किये गए सहयोग और प्रैक्टिस से हमने अपना परफॉर्मेंस दिया । नृत्य देखने के बाद संयोजिका महोदया द्वारा कुछ बदलाव किया गया । फिर बदलाव के साथ फिर से प्रैक्टिस चालू हो गयी जैसे-जैसे सम्मेलन का दिन पास आ रहा था वैसे-वैसे प्रैक्टिस का समय भी बढ़ता गया । हम शनिवार-रविवार को भी नृत्य प्रैक्टिस के लिए कार्यालय आने लगे और आखिर वह दिन भी आ गया जिसके लिए पिछले दो माह से हमने दिन रात प्रैक्टिस की थी ।

सम्मेलन के पहले ही दिन नृत्य का प्रोग्राम रखा गया था, पूरे कार्यालय को सामने वाले गेट से लेकर अंदर तक फूलों से सजाया गया था । बाहरी लॉन में स्टेज बनाया गया था जिसमे सारे प्रोग्राम होने थे । थोड़ा तनाव था और ढेर सारा उत्साह, पहली बार स्टेज परफॉर्मेंस जो देना था । सुबह से बारिश चालू हो गयी शायद निसर्ग को भी हमारा तनाव समझ आया था। सुबह तैयार होकर हम कार्यालय पहुंचे, 11 बजे उदघाटन था उसके बाद फेट का आयोजन किया गया था जिसमे विभिन्न अनुभागों द्वारा अलग-अलग खाद्य पदार्थ के स्टॉल लगाए गए थे। दोपहर बाद हमारा नृत्य परफॉर्मेंस था, लेकिन बारिश के कारण लॉन की बजाय एम पी हॉल में प्रोग्राम करना तय हुआ। हमारे लिए ये अच्छी बात थी क्योंकि हमने दो माह तक प्रैक्टिस वहीं की थी । दोपहर के बाद हम तैयार होने चले गए सबका तो पता नहीं लेकिन जैसे-जैसे परफॉर्मेंस का समय आ रहा था मेरी दिल की धड़कन तेज़ हो रही थी .... और फिर नृत्य परफॉर्मेन्सेस शुरू हो गए । पहला समूह नृत्य हुआ जिसे सबने बहुत सराहा । एम पी हॉल खचाखच भरा हुआ था सब तरफ मोबाइल के कैमरे चमक रहे थे, सब लोग उत्साहवर्धन हेतु तालियाँ बजा रहे थे उनमे से कुछ सीटियाँ भी बजा रहे थे एवं वन्स मोर की आवाज लगा रहे थे । इससे हमारा आत्मविश्वास और बढ़ गया, फिर दूसरा समूह नृत्य हुआ।ऐसे करके नृत्य, गीत गायन, म्यूज़िकल इन्स्ट्रूमेंट्स एकल नृत्य और फिर मिक्स नृत्य रेट्रो हुआ । कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी वरिष्ठ अधिकारी गण साथी कर्मचारी तारीफ एवं बधाईयाँ देने लगे । महालेखाकार महोदया, सभी वरिष्ठ उप-महालेखाकार महोदय/महोदया के साथ ग्रुप फोटो खींचे गए । ऐसे लग रहा था जैसे हम कोई सेलिब्रेटी हो। सम्मेलन के पश्चात भी कितने ही दिनों तक तारीफ होती रही । इसी परंपरा को आगे भी जारी रखा जाएगा और कुछ इससे भी अच्छा करेंगे इसी आश्वासन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ । इसे गणतन्त्र दिवस २०२० को भी दोहराया गया जिसमे देश भक्ति गीतों पर हमने नृत्यकिया एवं उसे भी काफी सराहना मिली ।

हमारे दिलों में इसी परंपरा को जारी रखने की तमन्ना थी लेकिन कोरोना जैसी वैश्विक महामारी ने पूरे विश्व को झकझोर कर रख दिया । इन सब चीजों से अधिक हम सबकी सुरक्षा ज्यादा जरूरी है । उम्मीद करते है कि जल्द ही हम सभी के प्रयासों एवं संयम से इस महामारी पर काबू पा लेंगे । इस वर्ष ना सही जब भी कोई अगला कार्यक्रम होगा, हम पुनः इसमे शामिल होकर नए जोश के साथ उसकी शुरुआत करेंगे ।

✦✧✦

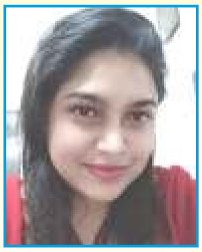

श्रीमती शाईस्ता शाहीन
(वसीम मिन्हास,
वरिष्ठ अनुवादक की पत्नी)

ईद उल फितर
सद्‌भाव एवं सौहार्द का त्यौहार

भारत की संस्कृति में त्यौहारों का अपना अलग महत्व है। बहुविध धर्मों वाले इस देश के त्यौहार भी विविधता लिए हुए हैं उल्लेखनीय है कि धार्मिक परिप्रेक्ष्य से इतर इनका सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य इन्हें विशेष गरिमा प्रदान करता है। सभी धर्म, वर्ग और समाज के लोगों की साझेदारी इन्हें और ख़ास बनाती है। साम्प्रदायिक सद्‌भाव, प्रेम और परस्पर मेल मिलाप की प्रक्रिया को प्रदर्शित करने वाला ईद-उल-फितर मुसलमानों का सबसे बड़ा तथा अंतर्राष्ट्रीय त्यौहार है। यह इस्लामी माह शव्वाल की पहली तारीख को मनाया जाता है इसके पहले रमजान का पवित्र महीना आता है। ईद शब्द प्रसन्नता का घोतक है।

वैसे तो त्यौहार मात्र हर्ष उल्लास का सबब होते हैं लेकिन रमजान के महीने में पूरे तीस दिनों की भूख प्यास समर्पित करके प्राप्त किए जाने से ईद की खुशी दो गुनी हो जाती है। मुसलमानों के लिए रमजान का महीना बहुत ही पाक साफ़ तथा बरकत वाला माना जाता है। यह उनके दृष्टिकोण में उनके लिए आत्मशुद्धि का महीना होता है। इस पूरे महीने को वे अल्लाह की इबादत और दान पुण्य में लगाते हैं। प्रत्येक वर्ष इस माह में एक निश्चित रकम गरीबों में वितरित की जाती है। जिसे फितर देने की रस्म कहते हैं। फितर की ही तरह ज़कात देने की परंपरा है जो अपनी कुल जमा धन सम्पत्ति के एवज में कुछ नियत अंशदान होता है सूर्योदय से पूर्व शेहरी या सरघी ग्रहण करना अनिवार्य होता है, फिर दिन भर के निर्जला उपवास के उपरान्त सांयकाल में सूर्यास्त के बाद ही रोजा या व्रत तोड़ा जाता है। इस क्रिया को इफ्तार कहते हैं। इफ्तार में भांति-भांति के फल, स्वादिष्ट व्यंजन, मिठाईयाँ इत्यादि खाए खिलाए और बाँटे जाते हैं। पूरे रमजान प्रत्येक दिन संध्या के समय छोटे मोटे त्यौहार जैसा माहौल बना रहता है। इस दौरान ईद के लिए की जाने वाली खरीददारी से दुकान, हाट बाजार की रौनक और गहमागहमी देखते ही बनती है। सभी अपनी शक्ति, सामर्थ्य एवं रूचि के अनुसार नए वस्त्र, आभूषण व अन्य भौतिक सुख की सामग्रियाँ लेते हैं। रमजान माह की समाप्ति पर ईद का चाँद देखकर रोजा समाप्त करते हैं। 30 रोजों के बाद दिखाई पड़ने वाला प्रथम चाँद ईद का चाँद कहलाता है।

ईद के दिन बड़ी तादाद में मुस्लिम अनुयायी प्रातःकाल स्नान कर नए वस्त्र धारण करते हैं तथा ईद की नमाज अदा करने ईदगाह की तरफ प्रसन्नचित्त और उत्साही मन से निकल पड़ते हैं। ईदगाह ईद की विशेष प्रार्थना अथवा नमाज के निमित्त एक विशाल खुला मैदान होता है। हर नगर में ईदगाह पर एक बड़ा मेला अवश्य लगता है। ईद और ईदगाह के वातावरण की

बड़ी ही जीवंत और प्रमाणिक अभिव्यक्ति कथाकार मुंशी प्रेमचंद ने अपनी ईदगाह कहानी में की है। कहानी का एक छोटा सा अंश विशेष रूप से दृष्टव्य है - कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था लाखों सिर एक साथ सजदे में झुक जाते हैं , फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं। एक साथ झुकते हैं और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियां एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएँ और यही क्रम चलता रहे कितना अपूर्व दृश्य होता है। जिसकी सामूहिक क्रियाएं, विस्तार और अनंतता हृदय को श्रद्धा, गर्व और आनंद से भर देती है। मानो भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है

ईद की नमाज संपन्न होने पर सभी लोग एक दूसरे से गले मिलकर ईद की बधाईयाँ देते हैं। घर घर में मीठी सेवईयाँ, शीर खुरमा आदि बनाया जाता है, दावतें होती हैं, जिसमें अन्य सामाजिक समूह के लोग भी शामिल होते हैं। घर के बुजुर्ग बच्चों को ईदी देते हैं। वास्तव में ईद का त्यौहार समानता का प्रतीक है। कुरान का निर्देश है कि इस दिन कोई दु:खी न रहे। इस दिन छोटे-बड़े, अमीर-गरीब का भेदभाव मिट जाता है। सामाजिक वैमनस्य, राग - द्वेष, भेद-भाव भूलकर सभी एक हो जाते हैं। वस्तुतः ईद सिर्फ एक त्यौहार या पर्व भर नहीं है, यह त्याग, संयम, भाईचारा, शांति, दया, करुणा और अच्छाई को अपने जीवन में उतारने का पवित्र दिन है। हमारा कर्तव्य है कि ईद के इस वास्तविक सन्देश को समझें तथा अपने मन एवं इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर मानव मात्र की पीड़ा के यथासंभव सहभागी बनने का प्रयास करें। कहना न होगा कि आज के संघर्षमय तथा तनावपूर्ण जीवन में सद्भाव एवं सौहार्द की भावना प्रसारित करने में ईद जैसे त्यौहार का महत्वपूर्ण योगदान है।

✦✧✦

दिवाली आई है

श्री मयंक सोनी
भाई, सुश्री मोनिका सोनी
डी.ई.ओ.

हर घर में दीप जगमगायें तो दिवाली आई है।
गणेश-लक्ष्मी जब घर पर आयें तो दिवाली आई है।
दो पल के शोर से क्या हमें खुशी मिलेगी ?
दूर हृदय के अंधकार हो जाए तो दिवाली आई है ।
रंगोली से जीवन में रंग भर जाए तो दिवाली आई है।
बच्चे-बूढ़े सब मिलकर मुस्काएं तो दिवाली आई है।
रोशन तो हो जाएगा हर घर-घर का कोना,
अंधकार पर प्रकाश की विजय हो जाए तो दिवाली आई है।
घर की साफ सफाई से हर कोना चमक जाए तो दिवाली आई है।
पकवान मिठाई सब मिलकर खाएं तो दिवाली आई है।
पटाखों से रोशनी तो होगी लेकिन धुआँ भी होगा,
जलाकर दिये पर्यावरण स्वच्छ बनाएँ तो दिवाली आई है।
निवाले को तरसते पेट की भूख मिट जाए तो दिवाली आई है।
मन में प्रीत के फूल खिल जाएँ तो दिवाली आई है।
खुशियाँ है जीवन में तो कुछ गम भी होंगे,
हर दुख दर्द भूल जाएँ तो दिवाली आई है।
अमीरी-गरीबी का भेद मिट जाए तो दिवाली आई है।
आपसी सद्भाव की लहर छा जाए तो दिवाली आई है।
प्रभु और खुदा का बंटवारा करना अब बस भी करो,
दिये नफ़रतों के बुझ जाएँ तो दिवाली आई है।

✦✧✦

सुश्री नीना वर्मा
व.ले.प.अ.

त्यौहार

शब्द कोश के अनुसार त्यौहार शब्द का अर्थ है किसी निश्चित तिथि को मनाया जाने वाला कोई धार्मिक सांस्कृतिक उत्सव अथवा वह दिन या समय जब लोगों द्वारा सामूहिक रूप से उत्सव मनाया जाता है। वह दिन जिसमें कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाय।

वैसे तो भारत को त्यौहारों का देश कह सकते हैं। कैलेडंर उठाकर देखें तो हर दिन कोई ना कोई तिथि या दिन होता है। पर हर दिन तो हम त्यौहार मना नहीं सकते। प्रत्येक त्यौहार अलग अवसर से संबंधित है, कुछ वर्ष की ऋतुओं का, फसल कटाई का, वर्षा ऋतु का अथवा पूर्णिमा का स्वागत करते हैं। दूसरों में धार्मिक अवसर, ईश्वरीय संत्ताओं/परमात्माओं व संतों के जन्म दिन अथवा नए वर्ष की शुरूआत के अवसर पर मनाए जाते हैं। आज कल हम भारतीय लोग बडे चाव से न्यू ईयर मनाते हैं जो कि 31 दिसम्बर रात 12 बजे से शुरु हो कर 1 जनवरी तक मनाते हैं। इस अंग्रेजियत के चक्कर में हम में से बहुतों को हिंदू महीनों के नाम भी पता नहीं होंगे। चलिए मैं यहाँ हिंदी महीनों के नाम, उनमें मनाये जाने वाले कुछ खास त्यौहारों के नाम आप सब से साझा करती हुँ।

हिंदी महीने	अंग्रेजी महीने	महत्वपूर्ण त्यौहार
चैत्र	मार्च–अप्रैल	गुडी पाडवा, चैत्र नवरात्र
वैशाख (बैसाख)	अप्रैल–मई	बैसाखी, बुध्द्पूर्णिमा, रामनवमी
ज्येष्ठ (जेठ) आषाढ	मई–जून जून–जुलाई	वट सावित्री व्रत गुरु पूर्णिमा, देव शयनी एकादशी
श्रावण (सावन)	जुलाई–अगस्त	श्रावणी सोमवार, रक्षाबंधन
भाद्रपद (भादों)	अगस्त–सितम्बर	जन्माष्टमी, तीज, पोला, गणेश चतुर्थी
आश्विन (क्वार)	सितम्बर–अक्टूबर	दुर्गा पुजा, कोजागिरि, दशहरा
कार्तिक	अक्टूबर–नवम्बर	दीपावली, देव उठनी एकादशी
मार्गशीर्ष (अगहन)	नवम्बर–दिसम्बर	वैकुंठ एकादशी
पौष (पूस)	दिसम्बर–जनवरी	लोहड़ी, मकर संक्रांति, पोंगल
माघ	जनवरी–फरवरी	बसंत पंचमी, महाशिवरात्री
फाल्गुन (फागुन)	फरवरी–मार्च	होली

(यहाँ कोष्टक में दिये हुये नाम हिंदी उच्चारण दर्शाते हैं और कोष्टक के बाहर जो नाम हैं वो मराठी उच्चारण हैं।)

इस तरह भारतीयों का नव वर्ष मार्च से शुरु होता है और उसका भी अपना एक महत्व है। क्योंकि ज्यादातर प्रांतों में इन महीनों में फसल कि कटाई होती है। हमारे हर त्यौहार के पीछे कोई ना कोई सामाजिक/वैज्ञानिक वजह है, सिर्फ नव वर्ष का आगमन ही नहीं!!!! ऊपर जो मैंने त्यौहारों के नाम दिये है उनके अलावा भी कई छोटे-बडे त्यौहार हर प्रांत में मनाये जाते हैं। यहाँ एक बात और बताना चाहूंगी के उत्तर भारत में पूर्णिमांत मास का प्रचलन है तो वहीं, दक्षिण में अमांत की मान्यता ज्यादा है। जब चंद्रमा बढ़ते क्रम में होता है तो वह शुक्ल पक्ष कहा जाता है और जब घटते क्रम में होता है तो कृष्ण पक्ष कहा जाता

है। इस गणना कि वजह से उत्तर भारत और दक्षिण भारत में कभी कभी त्यौहार का महीना अलग हो जाता है, तिथी एक होने के बाद भी!!

यहाँ मैं महाराष्ट्र के अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व के बारे में बताउंगी। यह हर घर में नहीं मनाया जाता; पर जिस के खानदान में इस मानाने की परंपरा है वहाँ इसे बहुत ही श्रध्दा से मनाया जाता है।

महाराष्ट्र में भाद्रपद महीने में अनुराधा नक्षत्र पर महालक्ष्मी/गौरी की स्थापना की जाती है यह तिथि गणेश चतुर्थी के दूसरे या तीसरे दिन पड़ती है। कुछ परिवार महालक्ष्मी/गौरी की प्रतिमा रखते हैं और कुछ प्रतीक स्वरूप भी स्थापना करते हैं। यह पर्व 3 दिन चलता है; पहले दिन आवाहन मतलब स्थापना, गौरी के मुखौटे(2 मूर्तियाँ) को अनाज से भरे पात्र पर रख कर उसे साड़ी/गहनों से सजाते हैं और नैवेद्य चढ़ाते हैं।

दूसरे दिन ज्येष्ठा नक्षत्र पर गौरी की पूजा की जाती है । सबेरे गौरी/महालक्ष्मीजी की पूजा-आरती करके (सुजी के लड्डू, बेसन लड्डू, गुजिया, चकली, सेव, आदी का नैवेद्य चढ़ाया जाता है। फिर शाम को आरती करते है। कुछ परिवार अपने रिश्तेदारों को जान पहचान वालों को प्रसाद ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करते हैं, इस खाने में बहुत से प्रकार के पकवान बनाये जाते है जिन्हें केले के पत्तों पर परोसा जाता है; जैसे के पुरणपोळी, आंबील, अंबाडी की सब्जी, सोलह सब्जी मिलाकर बनाई हुई सब्जी। इसके अलावा मूंगफली की चटनी, चने के दाल की सूखी चटनी, पंचामृत (इमली गुड से बनी चटनी), कढी, रोटी, चावल, दाल आदि सब कुछ होता है। फिर तीसरे दिन विसर्जन किया जाता है। बड़ा ही सुंदर पर्व है। इसी तरह दक्षिण भारत में वरमहालक्ष्मी व्रत मनाने की परंपरा है। इसे सावन के दूसरे शुक्रवार को मनाया जाता है।

यही हमारे देश की विविध परंपरा है। वही आर्ध्य पर उसको पूजने कि विधि अलग-अलग।

✦✧✦

श्रीमती लक्ष्मी बिनकर
पत्नी श्री मनोज बिनकर
लेखापरीक्षक

होली

राग और द्वेष की, होली जलाना चाहिए।
प्रेम और सद्भाव का, रंग लगाना चाहिए।।
ऊँच नीच का भेद मिटाओ
नाता भाईचारा का निभाओ
होली है मिलन का त्योहार, मिल के मनाना चाहिए।
प्रेम और सद्भाव का, रंग लगाना चाहिए।।
मंहगाई ने छनकाई है पायल
इंसान की जिंदगी हो गई घायल
दे दिया जब दिल किसी को, दर्द समझना चाहिए।
प्रेम और सद्भाव का, रंग लगाना चाहिए।।
लेते है जो नशे का सहारा
करते रहना इनसे किनारा
रंग में भंग नही मिलाना चाहिए।
प्रेम और सद्भाव का, रंग लगाना चाहिए।।
''हिरण्यकश्यप'' प्रल्हाद, कि अमर हुई कहानी
होलिका जल गई, बचे प्रल्हाद बात हुई पुरानी
भक्ति रंग में भक्त रंगे, उस रंग में रंगना चाहिए।
प्रेम और सद्भाव का, रंग लगाना चाहिए।।
बैर भाव सब दूर हटाना होगा
प्रेम का पाठ पढ़ाना होगा।
गिरते हुए को उठाकर, सम्मान बढ़ाना चाहिए।
प्रेम और सद्भाव का, रंग लगाना चाहिए।।
मन ना रंगाया, रंगाया जोगी कपड़ा
काहे को करते हो, दुनियाँ में लफड़ा
प्रेम और सद्भाव का रंग लगाना चाहिए।
राग और द्वेष की, होली जलाना चाहिए।।

✦✧✦

श्री अनिल कुमार
क.अनुवादक
शाखा कार्यालय, मुंबई

भारतीय सेना में त्यौहार

बात उन दिनों की है जब मैं भारतीय वायु सेना (IF) में कार्यरत था और हमारा स्थानांतरण देश के विभिन्न हिस्सों में हुआ करता था। मुझे सेना की तीनों सेवाओं (जल, थल, वायु) में सेवा करने का अवसर मिला, इसी दौरान मैंने यह महसूस किया कि किस तरह सभी प्रान्तों/राज्यों के लोग चाहे वे उत्तर भारत के हों या दक्षिण भारत के, चाहे उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों के हों या फिर पश्चिमी प्रदेशों के, सभी लोग सभी भारतीय त्योहारों को बड़े हर्ष और उल्लास से मनाते हैं । सैनिकों का परिवार यूनिट के कैंपस मे रहता है और इस कारण वहाँ पर एक पारिवारिक माहौल बन जाता है। सभी एक दूसरे के सुख-दुख में शरीक होते हैं। उसी प्रकार हर धर्म व जाति के तीज त्योहारों को एक साथ मिलकर मनाया जाता है।

जब मैं वायु सेना अकादमी, हैदराबाद में कार्यरत था तो वहाँ पर ऐसे त्योहारों के अनेक अवसर आए, जब मुझे उनमें शामिल होने का अवसर मिला। फिर वह चाहे गणेश चतुर्थी का त्यौहार हो या छठ पर्व, दीपावली हो या क्रिसमस, ईद हो या फिर रंगों का त्योहार होली या रक्षाबंधन, सभी त्योहार एक दूसरे के लिए बहुत अधिक महत्व रखते हैं। यहाँ तक कि कुछ त्योहार जैसे होली या रक्षाबंधन दक्षिण भारत में बहुत कम मनाए जाते हैं परंतु हमारे कैंपस में दक्षिण भारतीय सैनिक परिवार पूरे जोश उल्लास से होली मनाते थे। एक दूसरे पर रंग डालते तथा मिलने के लिए एक दूसरे के घरों में जाया करते थे । मुस्लिम त्योहारों जैसे ईद, बकरीद पर उनके घरों में जाना, मिलना जुलना तथा उनके बच्चों को ईदी आदि देना खाना-पीना सब कुछ होता है।सभी संप्रदाय के लोग एक दूसरे के धर्मों का सम्मान करते हैं ।

कभी कभी गाँव की होली की छटा भी देखने लायक होती है जब सभी सैनिक परिवार विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों से संबंध रखने वाले लोग ढोलक, मंजीरा, चिमटा आदि वाद्य यंत्रों को बजाते हुये रंगों से सराबोर कपड़ों में विभिन्न रंगों से चेहरे रंगे हुये फागुन के गीत गाते हुये एक दूसरे के के घरों के दरवाजों पर जाकर खुशी से झूमते व नाचते हैं। मिठाईयाँ, लस्सी भांग, नमकीन आदि का खाना-पीना होता है। सभी अपने रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों में सजे नजर आते हैं, उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि मानो एक मिनी इंडिया कैंपस में समाहित हो गया हो। इसी प्रकार सिखों के त्योहार गुरु पर्व पर गुरुद्वारों में सजावट होती है। सुबह से गुरुवाणी के मधुर-मधुर स्वर सुनाई देते हैं, अरदास होती है लंगर खिलाया जाता है। इसमें स्टेशन/यूनिट के उच्च अधिकारी भी भाग लेते हैं। कोई छोटे बड़े का भेद-भाव नहीं रखा जाता है।

इसी प्रकार यदि दीपावली का त्यौहार आता है तो पूरा कैंपस रात में रंग-विरंगी रोशनी से नहाया दिखायी देता है, स्टेशन/यूनिट प्रशासन की ओर से

आतिशबाजी का प्रदर्शन किया जाता है बच्चे पटाखे, फुलझड़ी व अनार जलाकर प्रसन्न होते हैं। उस समय हर आयु वर्ग का व्यक्ति त्यौहार के रंग में रंग जाता है तथा त्यौहार का आनंद लेता है। दक्षिण भारतीय त्योहार जैसे ओणम को बड़े हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है। इसी तरह क्रिसमस के दिन बच्चे सेण्टा क्लाज की पोशाक पहने गुब्बारे लिए हुये चहकते कूदते नजर आते हैं। आप भारतीय सेना के किसी भी प्रांत की यूनिट में चले जाइए आपको यह अहसास ही नहीं होगा कि आप किसी विशेष प्रांत/राज्य में हैं क्योंकि सेना में हर त्योहार हर व्यक्ति बड़े ही हर्ष और उल्लास से मनाता है। उस समय सारे धर्म और संप्रदाय मिलकर सभी भारतीय त्योहारों को मनाते हैं। हमारे देश की सेना की विशेषता देश-प्रेम और भारतीयता है फिर भारतीय सैनिक चाहे किसी धर्म या संप्रदाय से हो और यही विशेषता हमारे देश की सेना की शक्ति है जो हमें अन्य देशों से विशेष बनाती है और हमारे देश को अग्रणीय रखती है ।

इसीलिए सही ही कहा गया है कि भारत विविधताओं में एकता का देश है जो संसार के किसी और देश में देखने को नहीं मिलता है ।

✦✧✦

त्यौहारों का अर्थशास्त्र

श्री विवेक कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
शाखा कार्यालय, मुंबई

भारत त्यौहारों का देश है, विविधता में एकता भारत की पहचान है। जिसके वजह से पूरे देश में साल भर देश के किसी न किसी कोने में कोई न कोई त्यौहार लगभग हर दिन मनाया ही जाता हैं।

त्यौहार मनाने से समाज के विभिन्न वर्गों को रोजगार भी मिलता है। होली, दिवाली, दशहरा, मकर संक्रान्ति, ईद, क्रिसमस ये सारे त्यौहार समाज के विभिन्न वर्गों के जरूरत के लिहाज से उनके आय का साधन बनता है। चाहे दिवाली का दिया हो या ईद की सेवईयाँ बनाने वाला, ये किसी व्यक्ति के घर में चूल्हा जलाने का काम करता है। बचपन से ही त्यौहारों पर नये वस्त्र पहनना, घर का रंग-रोगन, पटाखें जलाना भी एक परंपरा जैसी ही हैं।

अगर आप गौर से देखेंगे तो त्यौहारों के समय कंपनियाँ अपने उत्पादों पर छूट लेकर आती है, जिससे उनका व्यापार बढ़ता है। दिवाली के समय तो यह अपने चरम पर होता है। रोजगार करनेवाले लोगों को दिवाली बोनस लेकर आता है, जिससे पूरे देश की अर्थव्यवस्था को सम्बल मिलता है और शेयर मार्केट अपने चरम पर होता है।

आइये देश को आर्थिक रूप से समृध्द बनायें, आइये अपना त्यौहार मनायें।

✦✧✦

पर्यावरण पर त्यौहारों के प्रभाव

श्रीमती अर्चना राज चौबे
पत्नी श्री आर. के. चौबे
व.ले.प.अ.

जिस तरह तन के साथ मन का भी स्वस्थ होना आवश्यक है, उसी प्रकार सामान्य जन जीवन के साथ त्यौहारों का अनुभव व मस्ती भी आवश्यक है। दरअसल भारत मूलतः एक उत्सवधर्मी देश है। अनगिनत भाषाओं व धर्मों का इतना जबरदस्त सम्मिश्रण इस भारत भूमि पर मिलता है कि इसके किसी न किसी प्रान्त में, हिस्से में कोई न कोई त्यौहार होते ही रहते हैं जिन्हें पूरे उत्साह व लगन से, पूरी आस्था से मनाया जाता है। पारिवारिक व सामाजिक मेलजोल, अपनेपन व स्नेह के प्रसार में त्यौहारों का खासा महत्वपूर्ण योगदान होता है। इन सब के साथ ही यहाँ यह भी याद रखना आवश्यक है कि क्षिति जल पावक गगन समीरा ...पंचरचित अति अधम शरीरा अर्थात पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि व वायु इन पांच तत्वों से ही मानव सहित यह पूरी सृष्टि रची गयी है। भारत में प्रकृति पूजा की परम्परा रही है जैसे छठ पूजा पर हम सूर्योपासना करते हैं, गणेश चतुर्थी, करवा चौथ व ईद को चाँद की पूजा, वट सावित्री को बरगद के वृक्ष की पूजा, गंगा पूजन के माध्यम से माँ गंगा सहित सभी नदियों व जल स्त्रोतों की पूजा, बीजारोपण व मकान बनवाने से पहले भूमि अथवा मिट्टी की पूजा, हवन के माध्यम से अग्नि की पूजा, नागालैंड के हॉर्नबिल महोत्सव में लिली पुष्प के माध्यम से फूलों का संरक्षण इत्यादि। शरीर के साथ ही मन के स्वस्थ रहने के लिए इन पाँचों का स्वस्थ व संतुलित होना अर्थात पर्यावरण का स्वस्थ व संतुलित होना बेहद आवश्यक है परन्तु दुर्भाग्यवश मानवीय गलतियों, स्वार्थों और अपराधों के कारण आज यह बड़ी विकट दशा में पहुँच गया है। ऐसे में सम्पूर्ण मानवजाति का यह प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए कि जिस पर्यावरण पर हम अपनी सांसों और समस्त जीवन के लिए पूर्णतः आश्रित हैं उसकी देखभाल भी उसी ज़ज्बे के साथ करें।

आम-तौर पर हम अपने रोजमर्रा के जीवन में अनेकों ऐसी गलतियाँ करते हैं जो पर्यावरण को ख़ासा नुकसान पहुंचाता है किसी धीमें जहर की तरह जैसे सामान खरीदते वक्त कागज़ के ठोंगे या कपड़े की थैलियों की बजाय पॉलीथीन बैग्स का इस्तेमाल इत्यादि (बाद में कभी ये ख्याल किया कि उनका क्या होता है ..कई बार तो इनके गायों व अन्य जानवरों के पेट में चले जाने से उनकी मृत्यु तक हो जाती है) मगर त्यौहारों के समय तो अति हो जाती है।जिस काल में इन सभी त्यौहारों की शुरुआत हुई उस समय मौसम, मुख्यतः खेती और पर्यावरण की शुद्धता का खास ध्यान रखा जाता था। वक्त के साथ-साथ परम्परा तो वही रही पर उसमें कुछ दुर्गुणों का समावेश हुआ जिसके परिणाम घातक निकले।

उदाहरण के लिए होली पर हम जिन रंगों का इस्तेमाल कर इसे खुशनुमा और रंगीन बनाते हैं ...पहले उसके लिए हम फूलों, पत्तियों या अन्य प्राकृतिक वस्तुओं का इस्तेमाल करते थे (एलोरा की गुफाओं में ये आज भी दिख जायेंगे) ...जैसे लाल रंग के लिए टेसू, पीले के लिए हल्दी, हरे के लिए पत्तियां इत्यादि परन्तु अब इसमें कुरूपता की तरह वार्निश या कई तरह

के केमिकल्स वाले अभ्रक मिले रंगों का इस्तेमाल हम करने लगे हैं और फिर प्लास्टिक की पिचकारियाँ जो पहले विशुद्ध बांस की लकड़ियों से बनती थीं ....ये सब सस्ते, आसान व कुछ लुभावने जरूर लगते हैं परन्तु इसके दुष्प्रभाव तात्कालिक और दूरगामी दोनों हैं ...अनेक किस्म की त्वचा संबंधी परेशानियों के साथ साथ कई बार आँखों व कानों में घुस जाने पर बड़ी तकलीफों का सामना करना पड़ता है ... कई बार तो दृष्टि तक चली जाती है और हवा भी प्रायः आम दिनों की अपेक्षा कई गुना ज्यादा दूषित हो जाती है जिससे श्वास संबंधी परेशानियों में इजाफा होता है....ऐसे रासायनिक रंग जब बहकर मिट्टी में मिलते हैं तो उसे भी दूषित कर देते हैं। जल के सुरक्षित और लगातार सीमित होते कोष को भी अनावश्यक ज्यादा खर्च कर हम उसको निरंतर कम ही कर रहे हैं। फिर पानी व हवा में क्षारीयता बढने से तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने वाली बीमारी हाईपर न्यूट्रिनिया से पक्षी, खासकर प्रवासी पक्षी बड़ी संख्या में मृत हो जाते हैं और ऐसे पक्षियों के मरते ही उनकी प्रतिरोधक क्षमता जब शून्य हो जाती है तब उनके शरीर या पंखों में पनपे कई तरह के वायरस तुरंत सक्रिय होकर दूसरे पक्षियों को अपनी चपेट में ले लेते हैं और फिर एक बार और बार-बार यही क्रम दोहराया जाता है।

दीपोत्सव अर्थात दीवाली भी एक मुख्य त्यौहार है जिसे आम जनमानस लगभग बिना किसी धर्म विभेद के समान रूप से मनाता है। दिवाली का त्यौहार समुद्र मंथन से प्रकट माता लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए मनाया जाता है। एक और मान्यता के अनुसार भगवान राम जब अपने 14 वर्ष के वनवास को समाप्त कर अयोध्या वापस लौटे तो उस रात अयोध्यावासियों ने रात्रि में सरसों के तेल और घी के दिए जलाकर, रंगोली बनाकर और अच्छे पकवानों व नाच गानों के साथ दीपोत्सव कर खुशियाँ मनाई परन्तु कालान्तर में जिन पटाखों का आविष्कार चीन ने वर्ष 1040 में किया था और जिसका इस्तेमाल पहले यूरोप से वर्ष 1258 में शुरू हुआ, वही धीरे-धीरे पहले भारतीय राजाओं, फिर धनाढ्य व्यक्तियों से होता हुआ आमजन के घरों में बड़ी आसानी से प्रवेश पा गया। अब क्योंकि इसे बनाना कोई कठिन कार्य नहीं था और यह खेतों में प्रयुक्त होने वाले तीन आम रसायनों व बन्दूक की गोली में भरे जाने वाले बारूद से आसानी से बन जाता है तो इसका चलन सर्वसुलभ व आम हो गया जिसके दुष्परिणाम यह हुए कि जहाँ घी और तेल के दिये वायु को स्वच्छ व ऊर्जावान कर जीवन दायिनी बनाते थे वहीं रसायनों व बारूद के धुएं ने हवाओं में जहर घोलना शुरू कर दिया ... यहाँ तक कि आँखों में तेज जलन, उनसे पानी निकलना व फेफड़ों को भारी क्षति पहुंचने लगी।

बकरीद भी एक ऐसा ही त्यौहार है जिसमें बकरों की बलि का चलन है। यद्यपि जिस घटना से यह परम्परा शुरू हुई उसकी याद में ही बकरों की कुर्बानी दी जाती है परन्तु तब के और अब के वक्त में खासा बदलाव आ गया है, पहले जनसँख्या कम थी और अब उसके कई गुना है तो उसी अनुपात में बलि की संख्या में भी बड़ा इजाफा हुआ है। इतनी बड़ी संख्या में बकरों का मारा जाना एक अमानवीय व क्रूर कृत्य तो है ही साथ ही उसके बाद फैले लहू इत्यादि से वातावरण का दूषित होना भी एक बड़ी चिंता का विषय है। अब तो आम लोगों के बीच भी ये आवाज़ और मांग उठने लगी है कि बकरों की असल बलि न देकर इसे प्रतीकात्मक बनाया जाए क्योंकि इस सृष्टि का संतुलन इंसान, जानवर और प्रकृति इन तीनों की सामान भागीदारी से ही संभव है तो बलि चाहे बकरीद की हो या महिषासुर मर्दिनी को प्रसन्न करने हेतु भैंसे की, तत्काल बंद होनी चाहिए।

आम तौर पर ये पाया जाता है कि त्यौहारों पर सुविधा के लिहाज़ से हम प्लास्टिक उत्पादों का ज्यादा

इस्तेमाल करते हैं जो कि पर्यावरण के लिए एक गहरा नासूर है। हममें से अधिकांशतः यह जानते हुए भी कि प्लास्टिक की बोतलें या अन्य वस्तुएं सैकड़ों-हज़ारों सालों तक भी ख़राब नहीं होतीं और एक बड़े कचरे की ढेरियों में जगह-जगह इकट्ठी होती रहती हैं, हम उसका इस्तेमाल तनिक भी कम नहीं करते, यद्यपि कि इसके रिसाईकलींग के बाद पुनः इस्तेमाल करने की शुरुआत तो हुई है परन्तु इसको गति मिलने में अभी भी देर है, अतः इसका इस्तेमाल हमें बेहद सावधानी से, कम से कम करना चाहिए।

कुछ तथ्यों को जान लेना भी आवश्यक है ...

1. **पानी** : धरती का 71 प्रतिशत हिस्सा पानी है जिनमें से 97 प्रतिशत सागरों-महासागरों में है जो नमकीन होने की वजह से पीने योग्य नहीं है।एक अनुमान के मुताबिक धरती पर कुल 32 करोड़ 60 लाख ख़रब गैलन पानी शेष है और ये घटता बढ़ता नहीं है। अतः इसका संरक्षण व बचाव आनेवाली पीढीयों के लिए बेहद जरूरी है।

2. **वायु** : स्वच्छ व स्वस्थ पर्यावरण के लिए वायु का शुद्ध होना आवश्यक है... वायु जीवन का सबसे बड़ा आधार है ....एक व्यक्ति बिना जल और भोजन के तो कुछ दिन जीवित रह भी सकता है परन्तु वायु की अनुपस्थिति या उसके दूषित होने पर वो शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो सकता है। यही सत्य जानवरों और पर्यावरण पर भी लागू होता है।

3. **मिट्टी और जंगल** : धरती पर कुल 29 प्रतिशत जमीन है जिसमें से 9.5 प्रतिशत वन हैं। जानवरों की रिहाइश और ऑक्सीजन की बड़ी जरूरत के लिए हम वनों या जंगलों पर ही आधारित हैं। केरल के एक प्रसिद्द त्यौहार में नौका प्रतियोगिता के समय भारी मात्रा में लकड़ी का इस्तेमाल और ऐसे ही कुछ अन्य त्यौहारों पर भी जब लकड़ी की आवश्यकता हो और उसके लिए पेड़ काटने पड़ें तो अन्य हानियों सहित एक बड़ी हानि होती है कि जहां-जहां पेड़ कटते हैं, वहां जड़ों की अनुपस्थिति से मिट्टी ढीली पड़ जाती है और एक समय के बाद वो बड़े भूस्खलन जैसी आपदा के रूप में सामने आती है, जैसे अभी उत्तराखंड के तपोवन में घटी ह्रदयविदारक दुर्घटना जिसने न जाने कितनी जिंदगियां लील लीं। ऐसी लगातार होती प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप होने वाली ग्लोबल वार्मिंग भी एक विकराल समस्या है जिससे ग्लेशियर लगातार पिघलता रहता है जो भयावह बाढ़ के रूप में सामने आकर जान-माल को भारी क्षति पहुँचाता है।आई पी सी सी के अनुसार यदि ऐसे ही चलता रहा तो 2035 तक हिमालय से ग्लेशियरों का नामोनिशान मिट जाएगा जो मानवता और पर्यावरण दोनों ही के लिहाज़ से उचित नहीं है।

इससे स्पष्ट होता है कि निश्चित ही हम त्यौहारों का पूरे उत्साह व उमंग से आनंद उठायें पर किसी भी हाल में पर्यावरण को न स्वयं क्षति पहुचाएं न किसी और को पहुंचाने दें। याद रखें, हमारे पास प्रकृति एक अमूल्य निधि है परन्तु उसकी भी एक सीमा है ...लगातार दोहन व क्षति से वह भी विकराल हो सकती है, फिर उसके कोपभाजन से तो स्वयं ईश्वर भी हमें नहीं बचा सकता। सहजीवन के सिद्धांत का अनुपालन करते हुए हमें इस पर्यावरण को स्वस्थ, सुंदर व उपयोगी बनाए रखना होगा तभी यह मानव जीवन सार्थक हो सकेगा।

✦✧✦

श्री राजकुमार चौबे
व.ले.प.अ.

रामनवमी

राम के सन्दर्भ में कबीर कहते हैं ...

एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट-घट में बैठा
एक राम सकल उजियारा, एक राम जगत से न्यारा

मर्यादा पुरुषोत्तम राम भगवान विष्णु के सातवें अवतार माने जाते हैं।रामायण के अनुसार अयोध्या नरेश महाराज दशरथ के कोई संतान नहीं थी। वे बेहद दुखी रहा करते थे। एक दिन महर्षि वशिष्ठ ने उन्हें संतान प्राप्ति हेतु कामेष्टि यज्ञ करवाने की सलाह दी जिसे मानते हुए दशरथ ने महर्षि रुश्या शरुंगा (श्रृंगी) से विधिवत यह यज्ञ करवाया। पूरे विधि-विधान के पश्चात जब यह यज्ञ सम्पूर्ण हुआ तो दशरथ की तीनों रानियों को प्रसाद स्वरुप खीर दी गयी।कुछ ही महीनों में तीनों रानियाँ उम्मीद से हुयीं और समय आने पर महाराज दशरथ के घर एक नहीं बल्कि चार चार पुत्रों का जन्म हुआ। इन चारों पुत्रों का नामकरण संस्कार महर्षि वशिष्ठ ने किया था। राम चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को हुए थे इसलिए इस दिन को रामनवमी कहा जाता है व खासकर हिन्दुओं द्वारा बड़े धूमधाम से मनाया जाता है, यद्यपि कि राम सभी के हैं ...हर धर्म हर जाति, हर समुदाय व देश के हैं।राम का अर्थ यहाँ एक व्यक्ति से नहीं है बल्कि उन सर्वश्रेष्ठ आचार-विचार, व्यवहार व उच्च आदर्शों से है जिसका वहन राम ने पूरी उम्र किया और जिसके कारण ही वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये।

एक कथा यह भी है कि लंकेश्वर रावण के अत्याचारों से पृथ्वी त्रस्त थी ...यहाँ तक कि देवताओं की भी सहनशक्ति जब जवाब दे गयी तो सभी देवता एकसाथ मदद की उम्मीद में भगवान विष्णु के पास गए और गुहार लगाई, तत्पश्चात भगवान विष्णु ने रावण को परास्त करने हेतु ही दशरथ के यहाँ उनके पुत्र राम के रूप में जन्म लिया। आज भी इस दिन लाखों लोग अयोध्या को तीर्थ मानते हुए वहां की पवित्र सरयू नदी में स्नान करते हैं व मंदिरों में जाकर पूरी श्रद्धा से पूजा-अर्चना करते हैं।पुराणों के अनुसार राम का जन्म मध्यकाल अर्थात दोपहर में हुआ था, इस कारण श्रद्धालु इस दिन दोपहर तक व्रत करते हैं और फिर रामजन्मोत्सव के आयोजन के साथ ही भोजन ग्रहण कर अपने संकल्प को पूर्ण करते हैं। राम के प्रति अपनी आस्था के कारण आज के दिन राम स्त्रोत का पाठ किया जाता है और ऐसा माना जाता है कि इस दिन पूजनोपरांत सच्चे मन से माँगी हुई हर मुराद पूरी होती है।

यहाँ एक बात जानना व समझना बेहद आवश्यक है कि किसी भी व्यक्ति का जन्म नहीं बल्कि उसके द्वारा किए गए कर्म ही उसका उचित व सार्थक आंकलन करते हैं।गोस्वामी तुलसीदास जी ने जहाँ राम को ईश्वर मानकर रामचरित मानस को रचने का गुरु गंभीर कार्य किया वहीं आदिकवि वाल्मीकि ने राम को साधारण मनुष्य ही माना है जो अपने सद्गुणों व सत्कार्यों से आगे चलकर असाधारण सिद्ध हुए। भारत के अतिरिक्त थाईलैंड व इंडोनेशिया में भी श्री राम आदर्श रूप में पूजे जाते हैं।

राम ने जहाँ एक ओर कर्त्तव्य, सम्मान व मर्यादा का उच्चतम सोपान स्पर्श किया वहीं उनके द्वारा किए गए कार्य भी अतुलनीय रहे। पिता द्वारा दिए गए वनवास को भी उन्होंने सार्थक और महत्वपूर्ण कर दिया। सबसे पहले तो निषाद राज की सहायता ली अर्थात यह साबित किया कि मदद जो भी करे उसे आदर सहित स्वीकार करें व हमेशा उनके ऋणी रहें इसलिए सम्मान स्वरुप ही निषाद राज को 14 वर्ष बाद अपने राज्याभिषेक में छोटे भाई लक्ष्मण को भेजकर स्वयं बुलवाया। शबरी का प्रसंग लें तो उन्होंने यह शिक्षा तात्कालीन और वर्तमान समाज को भी प्रेषित की है कि यदि कोई प्रेम से आपको अपना जूठा भी खिलाए तो उसे बिना किसी जाति, धर्म, समुदाय या वर्ग भेद के उसी प्रेम से स्वीकारें और उसका मान रखें। इन दो उदाहरणों से पता चलता है कि राम जाति, धर्म, समुदाय या वर्ग से ऊपर इंसानियत, प्रेम और आपसी भाईचारे को कहीं अधिक महत्त्व देते थे। जिस समय राम वन में थे उस समय भी वे निरंतर पत्नी सीता व भाई लक्ष्मण संग समाजहित के कार्यों में ही लगे रहे अर्थात उस समय तक सीमित आमजन ही संगठित तौर पर रहा करते थे बाकी जो छिटपुट रूप में आदिवासी या वनवासी होते थे वो छोटी-छोटी टुकड़ियों में असंगठित तरीके से रहते थे जिससे उन्हें रोजमर्रा की अनेकों परेशानियों का सामना करना पड़ता था, यहाँ तक कि निरंतर विरोधी आक्रमणों का भी ... साफ़-सफाई का भी उनमें नितांत अभाव था जिसके कारण छोटी उम्र में ही अज्ञात बीमारियों से वे मृत्यु को प्राप्त होते रहते थे। राम, सीता और लक्ष्मण के साथ वहां जाते और उन्हें पारिवारिक व सामाजिक शिक्षा की जरूरत व उसका महत्त्व समझाते ...साफ़-सफाई के साथ संगठित होकर रहना, उचित आचार-विचार और युद्धों के समय कैसे स्त्री-पुरुष सभी एकजुट होकर उसका सामना करें इन सबका प्रशिक्षण देते। अपने 14 वर्षों के वन- गमन में राम कभी एक जगह टिककर नहीं रहे और जब भी वो एक स्थान से विदा लेते तो हजारों व्यक्ति आँखों में आंसू भर उनसे वहां से न जाने की याचना लेकर उपस्थित होते। कारण होता राम का उनके लिए किया गया महती कार्य जिसके लिए वे दिल से राम के आभारी थे। उनके इन्हीं सत्कर्मों व सद्प्रयासों का माहात्म्य था कि जिस वक्त लंका जाने के मार्ग में विशालकाय समुद्र एक बड़े अवरोधक की तरह उपस्थित था ....पूरी वानर सेना चिंतित थी उस समय मात्र श्रीराम लिखे पत्थरों ने उसकी लहरों को बांधकर एक ऐसा सेतु निर्माण किया जो आज हजारों साल बाद भी वैसे का वैसा ही है। सदा ही विनम्र और जिज्ञासु बने रहना उनके विशेष गुण थे। जहाँ एक ओर रावण से उन्होंने इतना भयंकर युद्ध कर उसे बुरी तरह पराजित किया वहीं मृत्युशैय्या पर घायल पड़े रावण के सम्मुख विनम्रता से उन्होंने छोटे भाई लक्ष्मण को उस समय के सबसे बड़े शिवभक्त व महान प्रकांड विद्वान रावण से शिक्षा ग्रहण करने के भी निर्देश दिए। उनकी इसी विनम्रता और सज्जनता से प्रभावित होकर रावण ने राम के हाथों मृत्यु को प्राप्त होना अपना परम सौभाग्य माना।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक राजकुमार व भावी राजा के लोभ व मोह से सर्वथा मुक्त, पिता की इच्छा को सर्वस्व मान, माताओं व गुरुओं का मान रखने वाले और विशाल हृदय, आदर्श पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अपने सद्कार्यों व विचारों से पवित्रता, परोपकार व व मर्यादा की एक इतनी बड़ी और पावन लकीर खींची है कि जिसके आदर्श भारत सहित पूरे विश्व को आज भी उसका अनुसरण करने की प्रेरणा देते हैं।

✦✧✦

मकर संक्रांति – पतंगबाजी का त्यौहार

कु. अर्पिता
सुपुत्री श्री अनिल कुमार
क. अनुवादक
शाखा कार्यालय, मुंबई

मकर संक्रांति का त्यौहार भारत के विभिन्न राज्यों मे अलग-अलग नामों से मनाया जाता है जैसे कि बैशाखी, बिहू, ओणम, खिचड़ी आदि। इसी त्यौहार के दिन एक बालक अपने पिता के साथ पास के एक पार्क में गया, जहां पतंगबाजी का आयोजन किया जा रहा था । आकाश रंग बिरंगी पतंगों से भरा था । बेटा यह देखकर बहुत खुश हुआ। बेटे ने अपने पिता से एक पतंग तथा धागे की चरखी दिलाने के लिए कहा। पिता ने उसकी बात मान ली और पार्क के पास की दुकान से पतंग और धागे की चरखी खरीद कर दे दी। बेटा खुश होकर पतंग उड़ाने लगा, थोड़ी देर में पतंग आकाश में ऊंचाई पर उड़कर हवा से बातें करने लगी ।

पतंग उड़ाते हुये बेटे ने पिता से कहा पिता जी मुझे ऐसा लग रहा है कि यह धागा पतंग को और ऊंचाई पर जाने से रोक रहा है, यदि इस धागे को काट दिया जाए तो पतंग मुक्त हो कर और ऊंची जा सकती है क्या इस धागे को काट कर देखा जाए। पिता ने स्वीकृति में सिर हिलाया और पतंग के धागे को काट दिया । पतंग धागा कटते ही ऊपर जाने लगी और थोड़ी ही देर में हिचकोले खाती हुई नीचे आने लगी तथा दूर एक मकान की छत पर गिर गई, यह देखकर बच्चे को बहुत आश्चर्य हुआ और उसने सोचा कि पतंग धागे को छोड़कर ऊपर ऊंची जाना चाहिए थी परंतु ये तो नीचे गिर गई, बेटे ने पिता से पूछा कि आखिर ये पतंग ऊपर जाने के बजाय नीचे क्यों गिर गई, तब पिता ने बेटे को समझाते हुये बताया कि जिस धागे को तुम पतंग को ऊंचाई में पहुँचने में बाधा समझ रहे थे, वास्तव में वह बाधा नहीं बल्कि धागा पतंग को ऊंचाई पर रखने में मदद कर रहा था। हवा कभी तेज बहती है और कभी धीरे लेकिन धागा पतंग को एक ऊंचाई पर रखने में मदद कर रहा था और जैसे ही धागे का पतंग से संबंध टूटा, पतंग नीचे गिर गई । इस प्रकार बेटे की समझ में यह बात आ गई ।

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य का परिवार, रिश्तेदार, मित्र आदि सब धागे के समान होते हैं जो मनुष्य को, जब वह अपनी उन्नति के शिखर पर होता है वहाँ पर रखने में मदद करते हैं, लेकिन जैसे ही वह इन सबसे संबंध तोड़ देता है तो पतंग की तरह वह भी जीवन के सफलता के शिखर से नीचे गिर जाता है । इसलिए मनुष्य को अपने परिवार, रिश्तेदारों तथा मित्रों से संबंध नहीं तोड़ना चाहिए।

✦✧✦

श्री सन्नी अरोरा
पति श्रीमती नीरजा टंडन
स.ले.प.अ.

आया लोहड़ी का त्यौहार!

आनंद और उल्लास की, चहुओर फैली है बयार
सुंदर मुंदरिए की धुन पर, दुल्ला भट्टी की जय-जयकार
सबको लख-लख बधाईयाँ, आया लोहड़ी का त्यौहार!

पौष माह की आखिरी रात, हुआ 13 जनवरी का आगाज़
झूमों नाचों बांटो प्यार, खुशियाँ खूब मनाओं यार
बार बार आए ऐसा वार, आया लोहड़ी का त्यौहार!

सर्द शाम में कांपे हाड़, जलाओ अलाव बढ़ाओ ताप,
अग्नि की परिक्रमा लगाओ, दे दे लोहड़ी गाते जाओ
झूमे नाचे सपरिवार, आया लोहड़ी का त्यौहार!

बिटिया की कर दी विदाई , देखो मिला मस्त जमाई
बेटे ने सुंदर वोटी पाई ,घर में नयी दुल्हन आई
तेरी जीवे जोड़ी सौ सौ साल,आया लोहड़ी का त्यौहार!

घर में गूंजी है किलकारी, देखो आई गुड़िया प्यारी
वाह वाह सुंदर गुड्डा आया, ढ़ेर सारी खुशियाँ लाया
घर आँगन खुशियाँ मंगलाचार आया लोहड़ी का त्यौहार!
खेतों में सरसों लहराई, स्वर्णिम-स्वर्णिम आभा छाई
मूली की हरियाली आई,कर दी गन्ने की बुवाई
हुआ नव ऊर्जा का संचार, आया लोहड़ी का त्यौहार!

सरसों के साग से भरी कड़ाई, मक्के की रोटी साथ सिकाई,
तिल गुड़ रेवड़ी भी चखाई, गजक ने मिठास बढ़ाई
धन धान्य सूखे मेवों की भरमार, आया लोहड़ी का त्यौहार!

नाचो गाओ धूम मचाओ,टप्पे विच गिध्दापावो
ढ़ोल की थाप पर भंगड़ा पावो,बोलियों की ललकार सुनाओ
खुशियाँ सबको मिले अपार, आया लोहड़ी का त्यौहार!

दिल से सारे बैर भुलाकर, इक-दूजे को गले लगाकर
सारे गिले-शिकवे मिटाकर,एकता का संदेश फैलाकर
पढ़ाने प्रेम भाईचारे का पाठ,आया लोहड़ी का त्यौहार!

✦✧✦

पोला

श्री श्रीकांत शुक्ला
व.ले.प.

पोला त्यौहार खास तौर से महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक तथा छत्तीसगढ़ में धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन किसान अपने बैलों को नहला–धुलाकर सजाते हैं, फिर हर किसान के घर में उनकी विधि–विधान से पूजा–अर्चना की जाती है।

पोला त्यौहार मनाने के संदर्भ में यह परंपरा है कि अगस्त माह में खेती–किसानी से संबंधित सभी काम समाप्त हो जाने पर, भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को अन्नमाता गर्भ धारण करती हैं। अर्थात् इन दिनों धान के पौधे परिपक्व हो जाते हैं और इनमें दूध भरता है इसीलिए पोला बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। किसानों के साथ–साथ यह त्यौहार पुरुषों, स्त्रियों एवं बच्चों के लिए बहुत महत्त्व रखता है। छोटे बच्चे मिट्टी के बैलों की पूजा करते हैं। इसके साथ ही इस दिन 'बैल सजाओ प्रतियोगिता' का आयोजन भी किया जाता है। गांव के किसान सुबह से ही बैलों को नहला धुला कर घरों में बने पकवान खिलाते हैं। गाव में इस दिन बैलों की दौड़ का आयोजन भी किया जाता है लेकिन समय के साथ अब यह परपंरा समाप्त होने लगी है।

इस दिन मिट्टी और लकड़ी से बने बैलों की पूजा करने की भी परंपरा है। हालांकि यह त्यौहार कृषि आधारित पर्व है। इस दौरान जब खेती–किसानी, जैसे निंडाई, रोपाई आदि कार्य समाप्त हो जाते हैं, तब बैलों के प्रति सम्मान प्रकट करने हेतु इनसे इस दिन खेती–किसानी संबंधित कार्य नहीं करवाये जाते हैं। गांव तथा शहर के प्रमुख स्थानों से उनकी रैली निकाली जाती है। जिन–जिन घरों में बैल होते हैं, वे इस दिन अपने बैलों की जोड़ी को अच्छी तरह सजा–संवारकर इस दौड़ में लाते हैं।

घोलर–घंटिया, मोती–मालाओं, रंग–बिरंगे फूलों तथा अन्य आकृतियों से सजी खूबसूरत बैलों की जोड़ी हर इंसान का मन अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। खास सजी–संवरी बैलों की जोड़ी को इस दिन पुरस्कृत भी किया जाता है। जिनके पास बैल नहीं होते, वे किसान मिट्टी से बने बैलों की पूजा करते है। गाँव का सरपंच पटेल या अमीर जागीरदार, जिसे गाँव की भाषा में मानदार कहा जाता है, उसकी ओर से तोरण तोड़ी जाती है, जिसे पोला फूटना कहा जाता है। उसके बाद बैलों को हनुमान जी के मंदिर में ले जाकर पूजा की जाती है, फिर उनकी किसान के घर में आरती उतारी जाती है। खेती किसानी में लगने वाले औजार जैसे तुतारी, आदि का उपयोग बैलों पर नहीं किया जाता। पोले के दिन सुहागिनें आंगन में छड़ा एवं रंगोली डालती हैं तथा पोला टूटने की राह देखती हैं।

'अतिथि देवो भव:' इस कहावत को चरितार्थ कर महाराष्ट्र में पोले के पहले दिन बैलों को आमंत्रण (आवतन) दिया जाता है। जिसमें बैलों के कान में श्रद्धा से कहा जाता है। ''आज आवतन घ्या, उद्या जेवायला या'' इस निमंत्रण के दिन बैलों के कँधो को हल्दी लगाकर घी से मालिश की जाती है। उनकी पीठ पर सुंदर चित्रकारी कर झूल पहनाई जाती है। अंगो पर गेरू से निशान लगाए जाते हैं। मस्तक पर मोहर, कवड़ी की माला, नाक में व गले में नई रस्सी तथा पैर में तोड़े पहनाए जाते है। किसान इस दिन की राह बड़ी बेसब्री से

देखते हैं। पोले के दिन बैलों को बैल-गाड़ी या नांगर में जोता नहीं जाता अपितु उनका पूजन किया जाता है। घर की सुहागिनें बैलों की पूजा कर उन्हें पुरण-पोली का नैवेद्ध देती हैं तथा उन्हें गेहूँ ज्वारी का दान मंडाती हैं। पोले के दिन जिस किसान की बैलों की जोड़ी दौड़ शर्यत जीत जाती है उन बैलों पर झुल डालकर एवं उस किसान को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया जाता है और बैलों की शोभायात्रा निकाली जाती है।

विभिन्न स्थानों पर इस अमावस्या के दिन सुहागिन स्त्रियाँ व्रत रखती हैं और शाम को स्नान कर चौसठ योगिनी के चित्रों की पूजा करती हैं। घर में इस दिन खूब मेवा-मिष्ठान एवं खीर-पुरी बनाई जाती है । इस दिन स्त्रियाँ अपने अखंड सौभाग्यवती होने की मनोकामना करती हैं। किसान अपने बैल-जोड़ी को लोगों के घर ले जाकर इनाम प्राप्त करते हैं, जिसे बोजारा कहा जाता है । पोले के दूसरे दिन तान्हा पोला होता है जिसमें छोटे-छोटे बच्चे लकड़ी के बैलों को खूब सजा कर एवं उनकी पूजा कर, अपना बैल लेकर घर-घर जाकर बोजारा प्राप्त करते हैं। आज आधुनिकता के फलस्वरूप यह प्रथा अब गाँव तक ही सीमित रह गई है। यदि गोधन बचा रहेगा तो ही पोला त्यौहार सार्थक होगा।

✦✧✦

महाशिवरात्रि

श्री सुधीर कुमार
व.ले.प.
शाखा कार्यालय, मुंबई

शिव और शक्ति के मिलन की रात,
मानो प्रकृति और पुरुष के मिलन की रात।
प्रकट हुए शिव प्रथम बार,
प्रकाट्य ज्योतिर्लिंग रूप अपार।
हंस रूपी ब्रम्हा ढूँढते आदि,
वराह रूपी विष्णु ढूँढे जिसका अंत।
जीव- जंतु के स्वामी व अधिनायक,
अर्ध वर्ष में दर्शन देते, अर्ध वर्ष में लीन कठोर।

अनोखा शिव-दर्शन का प्रथम दिन,
भक्तों के लिए महाशिवरात्रि का पर्व।
अपनाया गृहस्थ छोड़ वैराग्य,
जब शक्ति संग रचाया ब्याह।
व्रत उपवास करें भक्तगण,
फल, पुष्प, बेर व दूध चढ़े शिवलिंग पर।
शिवलिंग को स्नान कराते,
संग नंदी भी सेवा पाते।

✦✧✦

श्री प्रिंस कुमार
एम.टी.एस.

बिहू

भारत के असम राज्य में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण त्यौहार है 'बिहू'। फसल की कटाई से संबंधित यह त्यौहार साल में तीन बार मनाया जाता है जिसमें अलग-अलग कृषि चक्र को दर्शाया जाता है।

बिहू तीन प्रकार से असम में मनाया जाता है।

1. शेंगाली बिहू या बेहात्र बिहू :

वसंत ऋतु के आगमन की खुशी में यह त्यौहार अप्रेल के मध्य में मनाया जाता है। यह त्यौहार असमी नववर्ष की शुरूआत का भी प्रतीक है। यह एक रंगीन त्यौहार है, इसलिए गाँव के युवक और युवतियाँ पारंपारिक वस्त्र धारण कर समूह बनाकर नृत्य करते हैं। इस अवसर पर लोग अपने घरों में खास पीठा बनाते हैं जो कि मुख्य रूप से इसी दिन बनाया जाता है एवं तिल एवं नारियल के लड्डू भी बनाए जाते है। शेंगाली का अर्थ होता है आनंदमय होना, फलस्वरूप लोग प्रकृति के अद्भूत सौंदर्य के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए यह त्यौहार मनाते हैं।

शेंगाली बिहू के पहले दिन लोग प्रार्थना, पूजा एवं दान करते हैं, नदियों, तालाबों में पवित्र स्नान करते हैं, पशुओं को नहलाते हैं। इस त्यौहार में बहुत सारी मनोरंजक प्रतियोगिताएँ जैसे बैलों की लड़ाई, मुर्गों की लड़ाई, अंडों का खेल आदि का भी आयोजन किया जाता है।

2. भोगाली बिहू / माघ बिहू :

हिन्दू कैलेंडर के पौष संक्रांति (मध्य जनवरी) को मनाए जाने वाले त्यौहार को असम में भोगाली बिहू कहा जाता है। त्यौहार के आरंभ में लोग अग्नि देव की पूजा करते हैं। यह त्यौहार पूरे हफ्ते बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। लोगों को दावत पर बुलाकर तरह-तरह के पकवान खिलाए जाते हैं।

माघ बिहू के दौरान लोग प्रातः उठकर नहा-धोकर अपने गाय के उपले और लकड़ियाँ इकट्ठा कर आग लगाकर अपने पुराने कपड़े जलाते हैं। इसके बाद अपने पशुओं, खेतों और धरती माँ की पूजा करते हैं एवं कुछ लोग इन्द्र देव की भी पूजा करते हैं एवं बारिश और मौसम की कामना करते हैं।

3. कंगाली बिहू / काति बिहू :

धान की फसल लगाने के बाद जब अन्न लगना शुरू होता है तो उस समय कीड़े धान की फसल को बर्बाद कर देते हैं। इससे बचने के लिए वहाँ के लोग कार्तिक महीने की संक्रांति को माघ बिहू मनाते हैं।

इस बिहू को काति बिहू कहा जाता है क्योंकि उस समय फसल हरी-भरी नहीं रहती इसीलिए इस बिहू को काति या कंगाली बिहू कहा जाता है। इस दिन वहाँ के लोग बाँस के डंडों के ऊपर दीपक जलाकर प्रसाद चढ़ाते हैं एवं ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि खेती ठीक से हो।

✦✧✦

राष्ट्रीय त्यौहार - 26 जनवरी

श्री गणेश आबनावे
व.ले.प.
शाखा कार्यालय, मुंबई

सन 2021 में हमारा देश ''भारत'' अपना 72 वाँ गणतंत्र दिन मनाने जा रहा है। यूँ तो आम आदमी की आयु में 72 साल पूरे करना मतलब बुढ़ापे की ओर झुकना होता है। जिसके साथ व्यक्ति को मानसिक एवं शारीरिक व्याधियाँ जखड़ लेती है परंतु हमारे देश के संबंध में 72 साल की आयु भी काफी छोटी उम्र का एहसास दिलाती है जिसका कारण है, भारत की युवाशक्ति, जो की अपने चरम सीमा पर है।

देश ने स्वतंत्रता मिलने के बाद एक बहुत बड़ी यात्रा पूरी कर ली है। जिसमें अन्नधान्य के उत्पादन में भारी बढ़ोत्तरी, तेजी से औद्योगिकरण, संगणकीकरण, आय.टी., आय.आय.एम, इस्त्रो जैसी संस्थाओं की स्थापना, इ. भौतिकीय विकास के साथ ही देश के मानव संसाधन अधिक कार्यसक्षम करने के लिए 'शिक्षा का अधिकार', 'महिला सशक्तिकरण', 'डिजीटल इंडिया' आदि कार्यक्रम अपनाए गए। जब भी इस्त्रो के किसी प्रक्षेपण केंद्र से कोई अग्निबाण आकाश की ओर छलांग लगाता है, या कोविड-19 जैसी महामारी के बीच जब हमारे मनानीय प्रधानमंत्री सिरम इन्स्टिटयुट में वैक्सीन के उत्पादन का जायजा लेने जाते हैं, तब हमारी छाती एक भारतीय होने के कारण अभिमान से फूल जाती है।

लेकिन क्या केवल भौतिकी और औद्योगिक विकास ही देश की आरोग्य का सही मूल्यांकन करते हैं? नहीं, देश की स्वतंत्रता के वक्त महात्मा गांधीजी, पंडित नेहरू, पटेल और डॉ. आंबेडकर ने जो सपना देखा था क्या वो सिर्फ यहीं तक सीमित था?

आज देश में महिला सशक्तीकरण के साथ साथ महिला अत्याचार सबसे ज्यादा चिंता की बात है। निर्भया, कठुआँ एवं हैदराबाद की वारदातों के बाद देश में भारी तौर पर असंतोष देखने को मिला। लेकिन क्या इन सब वारदातों के बाद भी हमने महिला सुरक्षा के लिए कोई पुख्ता कदम उठाए हैं? पूरा प्रदेश सी.सी.टी.वी. कैमेरे की निगरानी अंदर लाना संभव है, तथा खाली जगहों पर पुलिस पेट्रोलिंग करना भी जरूरी है। लेकिन जो कदम राज्यों ने उठाए हैं वह पर्याप्त नहीं दिखाई देते। ''दिशा'' कानून के बाद कई राज्यों में ऐसी वारदातें कम होने के आसार दिखाई नहीं देते। इसलिए ऐसी कोई भी वारदात होने से पहले ही उसको रोकना बहुत जरूरी है।

इसी के साथ-साथ किसानों को न्यूनतम मूल्य का आश्वासन, विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा, युवाओं को अच्छी नौकरी या उद्योग के अवसर, स्वास्थ्य, गरिबों को दरिद्रता से ऊपर उठाना आदि कई सारे सवाल आज देश के सामने खड़े हैं। इसके साथ ही सांप्रदायिकता और जातिवाद आज अनेकानेक नए रंगों के साथ समाज में फैलता जा रहा है। यह बीमारी समाज को अंदर से खोखला बना रही है। जिसके लिए हमें एकजूट होकर काम करना पड़ेगा।

इक्कीसवीं सदी में केवल भौतिक प्रगति से ही नहीं लेकिन एक आदर्श समाज एवं प्रगतिशील नागरिक के रूप में हर भारतीय को अपनी भूमिका अदा करनी पड़ेगी, तभी भारत ''विश्वगुरू'' और ''वैश्विक महासत्ता'' बन पाएगा।

✦✧✦

श्रीमती मीना देवी
पत्नी
श्री विरेन्द्र सिंह
लेखापरीक्षक

बसंत पंचमी

बसंत पंचमी का पर्व हिन्दू धर्म में एक प्रमुख पर्व माना जाता है। इसे श्रीपंचमी या सरस्वती पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। यह पावन पर्व प्रतिवर्ष माघ महीने की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन विद्या की देवी अर्थात माँ सरस्वती देवी की पूजा की जाती है। मान्यता है कि इस दिन सरस्वती मां की पूजा करने से उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन माँ सरस्वती देवी का अवतरण हुआ था।

एक कथा के अनुसार भगवान ब्रह्मा ने इस सृष्टि की रचना की। वे पूरे संसार को अपनी आंखों से देखना चाहते थे। इसके लिए वे इस यात्रा पर निकल पड़े। जब उन्होंने संसार को देखा तो वे इसकी नीरसता से निराश हो गए। पृथ्वी पर सबकुछ सूना था। उन्होंने सोचा कि उनके द्वारा सृष्टि के निर्माण के समय कुछ कमियाँ रह गयी। उन्होंने अपने कमंडल से पानी की कुछ बूंदें ली और उन्हें हवा में छिड़का। ऐसा करने से पेड़ से एक सुंदर स्त्री प्रकट हुई जिनके हाथ में वीणा थी। भगवान ब्रह्मा ने संसार की नीरसता दूर करने के लिए उनसे संगीत बजाने का निवेदन किया। उस स्त्री ने संगीत बजाया तो तीनों लोकों में कंपन्न हुआ। इसी कंपन्न से सभी को शब्द एवं वाणी मिली। उस सुंदर स्त्री को सरस्वती नाम दिया गया।

वैसे तो यह त्यौहार पूरे भारत में मनाया जाता है लेकिन उत्तर पूर्व भारत, पश्चिमोत्तर बांग्लादेश एवं नेपाल में यह त्यौहार विशेष रूप से मनाया जाता है। बसंत ऋतु को सभी ऋतुओं का राजा कहा जाता है एवं यह त्यौहार बसंत मौसम की शुरुआत का संकेत माना जाता है। इस दिन लोग पीले कपड़े धारण कर माँ सरस्वती की पूजा करते हैं तथा पीले फूल व पीले वस्त्र चढ़ाते हैं। यह पर्व सरसों के खेतों में पीले फूलों के साथ मनाया जाता है जिसे हिन्दू लोग सरस्वती माँ का पसंदीदा रंग मानते हैं। इस अवसर पर चमेली के हार पहनना राजस्थान के लोगों की परंपरा है। साथ ही इस मौके पर मेलों एवं खेल प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है। इस पर्व को होली के त्यौहार की तैयारी शुरू करने के रूप में भी माना जाता है क्योंकि इसके ठीक 40 दिन बाद होली पर्व का आगमन होता है।

बसंत पंचमी का दिन शुभ होने के कारण किसी भी नए कार्य को शुरू करना अच्छा माना जाता है। इस दिन परिवार में छोटे बच्चों को पहली बार किताब पढ़ाई एवं कलम पकड़ाई जाती है क्योंकि विद्या ग्रहण करने की शुरुआत करने का इसे उत्तम दिन समझा जाता है।

बसंत पंचमी के दिन का दृश्य बहुत ही मनमोहक होता है। शरद ऋतु के प्रस्थान एवं बसंत ऋतु के आगमन का स्वागत होता है। खेतों में फसलें पकाव की तरफ अग्रसर होती हैं। सरसों के फूल एक अलग ही छठा बिखेरते हैं व सरसों के फूलों की चादर पीले बिस्तर का एहसास दिलाते हैं।

✦✧✦

श्री एम. आर. खान
स.ले.प.अ.

ईद उल अज़हा

हमारे भारत देश में विभिन्न धर्म के लोग निवास करते हैं। पूरे वर्ष भर विभिन्न त्यौहारों को हम सब बहुत हर्ष से मनाते हैं। उन्हीं त्यौहारों मे से एक ईद उल अज़हा है। भारत मे यह बकरीद ईद के नाम से जाना जाता है। यह त्यौहार रमज़ान के पवित्र माह के बाद दो माह दस दिन बाद आता है। इस्लाम में इस दिन किसी जानवर की कुर्बानी देना बलिदान का प्रतिक माना गया है। इसके पीछे हज़रत इब्राहिम (अ.स.) और उनके बेटे ईस्माइल की कहानी है।

एक बार की बात है हज़रत इब्राहिम (अ.स.) को सपना आया, जिसमे अल्लाह (ईश्वर) के तरफ से हुक्म मिला था कि वह अपने प्यारे बेटे ईस्माइल को अल्लाह के लिए कुर्बान करें। यह हुक्म इब्राहिम (अ.स.) के लिए सबसे अहम था। यह सपने वाली बात उन्होंने अपने बेटे ईस्माइल को बतायी। इस पर उनके बेटे ईस्माइल ने कहा अल्लाह का जो हुक्म हुआ है आप वह ही कीजिये मेरी चिंता न कीजिये। बेटे ईस्माइल ने कहा आप मेरे हाथ पैर बाँध दें। आप कपड़े से मेरा शरीर ढ़क दें और छुरी चलाते वक्त आप का हाथ कापेंगा इसलिए आप अपने आंखो पर पट्टी बांध लीजिये। ऐसा न हो की बेटे के प्रति आपकी ममता आपको अपने मार्ग से विचलित कर दे। जैसा बाप बेटे के बीच तय हुआ इब्राहिम (अ.स.) अपने दिल पर पत्थर रखकर, आंसू की बाढ़ भीतर रोके, अपने बेटे की कुर्बानी देने के लिए तैयार हो गए। लेकिन अल्लाह इब्राहिम (अ.स.) के दिल को समझ गए थे और जैसे ही इब्राहिम (अ.स.) ने अपने बेटे की गर्दन पर छुरी चलाई अल्लाह के फरिश्ते जिब्रिल अमीन ने इब्राहिम (अ.स.) के बेटे को उस छुरी के नीचे से हटा दिया और उसके नीचे एक दुम्बा (वह भेड़ जिसकी दुम मांसल होती है) रख दिया। इस प्रकार दुम्बे की कुर्बानी हुई और उनका बेटा बच गया। तभी अल्लाह के फरिश्ते जिब्रिल अमीन ने खुशखबरी सुनाई की अल्लाह ने आपकी कुर्बानी कबूल कर ली है। इसी दिन की याद मे आगे चलकर इस्लाम धर्म के पैगंबर हज़रत मोहम्मद (स.अ.स.) ने बलिदान की महिमा समझाने के लिए यह परंपरा आगे चलाई। कुर्बानी का यह पर्व अरबी महा जिल्हीज्जा के 10 तारीख से शुरू होता है और यह रस्म तीन दिन तक चलती है। इस्लाम में लोगो की सेवा करने के लिए जान की कुर्बानी देने का महत्त्व है। इस्लाम में कुर्बानी देने का मतलब किसी अच्छे कार्य के लिए बलिदान देने से है। लेकिन जानवरों की कुर्बानी देना सिर्फ एक प्रतीक है।

✦✧✦

श्रीमती रिंकू सिन्हा
स.ले.प.अ.

भारत एवं त्यौहार

भारत व यहाँ के त्यौहारों की प्रसिद्धि पूरे विश्व में है। हाल ही में हमने देखा कि अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति जॉन बिडेन ने कैसे भारतीयों को दीपावली की शुभकामनाएं दी।

सुदूर उत्तर में जम्मू-कश्मीर से लेकर इसके दक्षिणी छोर में कन्याकुमारी तक, पूर्व में बिहार, बंगाल से लेकर पश्चिम में गुजरात व राजस्थान तक पूरे वर्ष भर किसी न किसी त्यौहार का समा देखने को मिल ही जाता है। चाहे वह जम्मू घाटी के 'पुरमंडल शहर में फ़रवरी- मार्च के महीने में मनाया जानेवाला पुरमंडल मेला हो या फिर कन्याकुमारी का 'केप फेस्टिवल', जो अक्टूबर के महीने में बहुत धूम-धाम से मनाया जाता है। बिहार की होली हो या बंगाल की दुर्गा पूजा, असम का बिहू हो या केरल का ओणम या फिर गुजरात का 'गरबा' हमेशा से ही भारत आने वाले पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। इसलिए अगर भारत को त्यौहारों का देश कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जनवरी के महीने में मनाए जाने वाले मकर संक्रांति से लेकर दिसंबर के महीने में मनाए जाने वाले क्रिसमस तक यहाँ किसी न किसी त्यौहार की धूम बनी ही रहती है।

ये त्यौहार इतने मनमोहक एवं रंगीन होते हैं कि हर किसी का मन हर्ष एवं उल्लास से भर देते हैं। जिन्दगी में नये उत्साह का संचार करते हैं, निराशा के काले बादलों को दूर कर मन में नई उमंग एवं जीने की चाह भरते हैं। ये त्यौहार ही हैं जो मनुष्य को स्फूर्ति एवं उर्जा देते हैं, उसे समाज में मिल जुलकर रहना सिखाते हैं, निराशा के घनघोर अँधेरे से निकालकर उसे आशा एवं उम्मीद की मीठी फुहार प्रदान करते हैं।

वर्तमान समय में कोविड-19 के आने के बाद से भय एवं निराशा का जो माहौल हर जगह व्याप्त था उसे भी इन त्यौहारों ने कैसे लोगों के मन से दूर किया है वो हम सबने देखा है। कोविड-19 के साए में ही हमने इस वर्ष होली का सीमित रंगोत्सव मनाया। इसी तरह गुड़ी पारवा का नव वर्ष उत्सव से लेकर नवरात्र, ईद, बकरीद, नवरोज, इस्टर व दीपावली का दीपोत्सव तक सारे देशवाशियों ने मिल जुलकर हर्षाल्लास से मनाया एवं कोविड-19 के खिलाफ चल रहे जंग में हमने सकारात्मकता के साथ जीत की तरफ कदम बढ़ाया।

त्यौहार जहाँ एक और हमारी आस्था के प्रतीक हैं वहीं दूसरी ओर मानव जीवन में सकारात्मकता, सद्‌भावना, सद्‌विचार, सहयोग व परस्पर मेलजोल जैसी भावनाएं जगाने में भी इनकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।

इसलिए त्यौहारों की यह विशेषता ही है जो मानव को मानवता सिखाते हैं जिसकी वजह से हमारे समाज में व देश में विविधता में भी एकता कायम है व हमेशा कायम रहेगी, ऐसी हम आशा करते हैं।

हालांकि आज के कोविड-19 के वैश्विक महामारी के समय में त्यौहारों को मनाते समय अति उत्साह में आकर मास्क न पहनने व दोगज दूरी न रखने जैसी भूल से बचने की भी नितांत आवाश्यकता है एवं इन नियमों का पालन करते हुए ही हम आगे के सारे त्यौहारों को हंसी-खुशी मनाएंगे ऐसी आशा हम देशवाशियों से करते हैं ताकि सबका जीवन स्वस्थ एवं सुरक्षित रहे।

✦✧✦

श्री विरेन्द्र सिंह
लेखापरीक्षक

सशस्त्र सेना झण्डा दिवस

सशस्त्र सेना झण्डा दिवस प्रतिवर्ष 7 दिसंबर को मनाया जाता है । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सशस्त्र सेनाओं के लिए कोष की कमी को महसूस किया गया । इस समस्या को ध्यान में रखते हुए आम जनता को सैनिकों के कल्याण कार्य के लिए सहयोग देने हेतु शामिल करते हुए 28 अगस्त 1949 को तात्कालीन भारतीय रक्षा मंत्री के नेतृत्व में बनी समिति ने प्रति वर्ष 7 दिसंबर को झण्डा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। ऐसा करने का उद्देश्य लोगों को तीनों सेनाओं का नेतृत्व करने वाले तीन रंगों (लाल, गहरा नीला एवं हल्का नीला) के झंडे बाँटकर इसके बदले उनसे स्वैच्छिक दान के रूप में सशस्त्र सेना झण्डा कोष के लिए धन इकट्ठा करना है ।

सशस्त्र सेना झण्डा कोष केंद्रीय सैनिक बोर्ड सचिवालय के अंतर्गत रखा गया है जो कि रक्षा मंत्रालय के अधीन भारत सरकार का एक नोडल विभाग है । विभिन्न कंपनियाँ भी कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) के रूप में इस कोष के लिए दान करती हैं।

सशस्त्र सेना झण्डा कोष का निम्न तीन उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है :-

1. युद्ध में शहीद या घायल हुए सैनिकों या उनके परिवारों के पुनर्वास हेतु ।
2. कार्यरत सैनिकों एवं उनके परिवार के कल्याण के लिए ।
3. भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके परिवार के कल्याण के लिए ।

इस दिन सेना के तीनों अंग आम जनता को उनके कार्मिकों द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु किए गए प्रयासों को दिखाने के लिए प्रदर्शन, नाटक, आनंदोत्सव एवं अन्य मनोरंजन के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं ।

यह दिन उन वीर जवानों के अविस्मरणीय बलिदान को याद करने का भी दिन है जिन्होंने हमारे देश के प्रभुता एवं क्षेत्रीय अखंडता को बचाने के लिए अदम्य साहस का परिचय देते हुए भारत माँ की रक्षा हेतु अपना फर्ज निभाते हुए अपने प्राणों की बाजी लगा दी । साथ ही साथ उन जवानों की भी देशभक्ति का सम्मान करने का दिन है जो विपरीत हालातों में जान की परवाह न करते हुए अपने परिवारों से दूर सीमाओं पर देश की हिफाजत का जिम्मा खुशी-खुशी संभाले हुए हैं ।

इस दिन के महत्त्व को समझते हुए अपने शूरवीरों के कल्याण हेतु योगदान करना एवं लोगों को इसके लिए प्रेरित करना हमारी ज़िम्मेदारी है । यह संभव नहीं है कि देशभक्ति निभाने हेतु प्रत्येक नागरिक सेना में भर्ती हो सके । देशभक्ति एवं भारत माँ के प्रति यह कर्त्तव्य हम अपने वीर जवानों का सम्मान कर एवं शहीद सैनिकों के परिवारों की देखभाल सुनिश्चित कर भी निभा सकते हैं। अपने बच्चों एवं आने वाली पीढ़ी में देशभक्ति की भावना भरकर उन्हें प्रेरित कर सकते हैं।

✦✧✦

एक राखी उनके लिए भी

सुश्री प्रियम मेहता
एम.टी.एस.

एक राखी रखना उनके लिए भी
सरहद पर जो निडर खड़े हैं।
फ़र्ज उनके शायद हमारे त्यौहारों से भी बड़े हैं।
यूं तो बिना राखी भी वह रक्षा कर ही लेगें
पर राखी के ये डोर उनको हमारे दिल से जोड़ देंगे।
एक राखी रखना उनके लिए भी,
जिनका खेतों में पसीना बहता है,
कभी अकाल तो कभी बाढ़ की मार सहता है।
दो वक्त की रोटी भी उसको,
ढेर सारी खुशियाँ जुटा देगी।
पर इस राखी की एक डोर
शायद फंदे की डोर को हटा देगी।
एक राखी रखना उनके लिए भी,
जो खाकी पहनकर घुम रहे हैं।
कभी अपनों के ही पत्थर खा रहे हैं,
तो कभी दुश्मन की गोली चूम रहे हैं।
एक राखी रखना उनके लिए भी,
जो शहर को साफ रखते हैं।
दूसरों का फेंका कूड़ा उठाना,
वह अपनी जिम्मेदारी समझते हैं।
पहनते तो वह भी खाकी ही हैं।
पर उनकी इज्जत कब की जाएगी?
शायद इस राखी की चमक,
उनके चेहरों पर सम्मान बनकर छाएगी
एक राखी रखना उनके लिए भी,
सफेद कोट पहने जो अस्पताल में खड़े हैं
किसी के लिए वह खुदा है
तो किसी के लिए भगवान से भी बड़े हैं।
एक राखी हर बार की तरह
अपने भाई की हथेली पर जरुर बांधना,
और तोहफे में उससे एक वचन माँगना,
कि ना तो वह किसी पर जुल्म करेगा,
ना ही किसी को करने देगा।
देखेगा जब कलाई पर राखी,
तो इस एहसास को वह ना मरने देगा।

✦✧✦

श्री प्रशांत साहू
एम.टी.एस.

रथयात्रा

भारत के उड़ीसा राज्य में आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीय दिन हर साल रथ यात्रा उत्सव मनाया जाता है, जो पुरी जगन्नाथ मंदिर से गौंडीचा मंदिर के रास्ते भगवान जगन्नाथ रथों का जुलूस निकालने के लिए होता है। हिंदू भगवान और देवी की प्रतिमा वाले रथों को आकर्षक रुप से रंगीन फूलों से सजाया गया है, प्रसाद वितरण हेतु कुछ समय के लिए मौसी माँ मंदिर में जुलूस निकला जाता है।

पवित्र जुलूस में अत्याधिक सजाए गए तीन रथ मंदिर से काफी मिलते जुलते हैं, जो पुरी में सड़कों पर बिजली की व्यवस्था या भक्तों द्वारा खीचें जाते हैं, यह त्यौहार भगवान पुरी जगन्नाथ, भगवान बलभद्र की बहन सुभद्रा सहित अपनी मौसी के घर यानी गुंडिचा माता मंदिर की यात्रा को पूरा करने के प्रतीक स्वरूप मनाया जाता है।

यह त्यौहार दुनिया भर से भक्तों की भारी भीड़ की आकर्षित करता है और भगवान की पवित्र जुलूस में भाग लेने के साथ-साथ उनकी हार्दिक इच्छाओं को पूरा करता है, रथ को खींचने वाले रथ में शामिल लोग ड्रम की आवाज के साथ भक्ति गीत, मंत्र गाते हैं, पूरे त्यौहार के उत्सव में पुरी की सड़को पर खींचे गई मंदिर सररचनाओं से मिलते जुलते तीन विशाल आकर्षक ढंग से सजाए गए रथ शामिल रहते हैं, यह पवित्र त्यौहार हिंदू श्रद्धालुओं द्वारा नौ दिनों तक पुरी जगन्नाथ, बलभद्र सहित अपनी बहन सुभद्रा की पवित्र यात्रा के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

सभी विशाल रथों को सिंहद्वार पर राजसी मंदिर में लाया जाता है। भगवान जगन्नाथ का रथ 44 फीट ऊँचा, 24 फीट चौड़ा, 6 फीट व्यास के 26 पहियों और लाल तथा पीले वस्त्रों से सुसज्जित होता है। भगवान बलराम के रथ का नाम तलध्वज रथ है जो 44 फीट ऊँचा होता है, इसमें 7 फीट व्यास के 14 पहिए होते है और इन्हें लाल, नीले या काले कपड़ों से सजाया जाता है।

करोड़ों लोग दुनिया भर से यह यात्रा देखने पुरी आते हैं, भगवान रथ यात्रा पूरा करने के बाद सोने का रुप धारण करके भक्तों को दर्शन देते हैं तथा दर्शन देकर फिर से मंदिर चले जाते हैं।

✦✧✦

याद बहुत आते हैं

श्री आर. के. मंथापुरवार
व.ले.प.अ.

खूबसूरत पतंगो की भरमार, बच्चों की किलकारी, मांझों का जाल होता था।
पेंचो का दौर, वो काँट की गूंज, पतंग लूटने का बेपरवाह जमघट होता था।
रंग बिरंगा सारा आसमान मेरी डोरी से बंधा होता था।
कुछ मेरे हिस्से होता तो कुछ औरों के हिस्से जाता था।
हर पेंच उलझती जाती थी बार बार फिर सुलझने को।
देकर जाती थी अपार खुशियाँ साल भर सँजोये रखने को।
गुड़ और तिल का लज़ीज़ संगम, पतंग और धागों का निराला बंधन।
साथी मेरे और वो मद्धम- मद्धम हवाओं का साथ, याद बहुत आते हैं।

हर ओर रंगों की छटा बिखेरती होली खेली जाती थी।
हर नर में कान्हा और हर बाला में राधा नज़र आती थी।
उस दिन सभी रंगों की आपस में जुगलबंदी होती थी।
रंगने को एक-दूसरें को होड़ सभी में लगी रहती थी।
भूलकर शिकवे सारे, उम्र को कर के किनारे, भिगोकर सबको, दिल साफ कर लेते थे।
निराली होती थी वो होली, अनजानों को भी बाहों में भर लेते थे।
ना कोई शिकायत ना कोई शिकवे होते थे।
छोड़ के झूठें अहम को हम नए रिश्ते जोड़ लेते थे।
मौसम में बिखरी रंगों की छठा, हर खुशिओं में शामिल मेरा सखा।
वो रंगों भरे अजीब चेहरे, साथ अपनों के खेली होली, याद बहुत आते हैं।

इबादत भरा महीना भी हर साल आता था, सजदे में सर झुकते थे।
कुबूल हो दुआएं सबकी यही मनोरथ सबका होता था।
ईद के चाँद का दीदार, सेवईयों के लिए बेकरार, ईदी का इंतजार होता था।
अजान की आवाज उस दिन सभी को बहुत सुहाती थी।
भूलकर सारी बंदिशे, अमन चैन और भाईचारे की ईद मनाई जाती थी।
न उसकी न किसी और की वह तो सारे मोहल्ले की होती थी।
सेवईयाँ प्यार वाली जहन में मिठास घोल जाती थी।
चाचा- चाची से ईदी पाकर खुशियाँ गगन नहीं समाती थी।
ईदगाह की भीड़, ईद का मेला, हर्ष से गले मिलकर बधाई का दौर, याद बहुत आते हैं।
सपनों को बुनकर, उमंगों को चुनकर अच्छी यादों का होता था मल्हार।
गुड़ी ऊंची सजती थी हमारी,लाती थी नई उम्मीदों की बहार।

नए वर्ष की शुरुआत पावन पर्व के साथ नयी आशायें देकर जाता था।
आम के पत्तों का बंदनवार, फूलों की माला से दर मेरा भी सजता था।
स्वादिष्ट पकवानों की सुगंध से चौका मेरा दिन भर महकता था।
मौसम में मधुरता, प्रकृति चारों ओर हरियाली बिखेरती थी।
शस्य श्यामला धरती माता घर-घर खुशियाली लाती थी।
वो ऊंची गुड़ी, दरवाजे का बंदनवार, फूलों की माला, सुगंध पकवानों की,याद बहुत आते हैं।

शादी का समारोह भी उत्सव सा मनाया जाता था।
तैयारी मे सारा मोहल्ला पूरी जोश से जुट जाता था।
घर की पुताई, अनाज की साफ-सफाई पड़ोसी मिलकर करते थे।
लड्डुओं को बंधवाने पच्चीस हाथ मिल जाते थे।
मेहमानों की तीमारदारी में कुनबा सारा जुट जाता था।
नागिन नृत्य बारात का, मधुर गूँजें शहनाई की, खुशबू फूलों की मंत्र मुग्ध करती थी।
पंगत का खाना, आग्रह से परोसना, बैगन की सब्जी, कढ़ी दही वाली होती थी।
दामाद का रूठ जाना, बुआ को मनाना, लड़के वालों की शिकायते यादें छोड़ जाती थी।
बेटी की विदाई मे माँ बाप ही नहीं, मोहल्ले वालों की आंखे भी नम हो जाती थी।
वो शादी बस्ती वाली, खुशिया अपनेपन वाली, वह उत्सव सब मिलकर मनाना, याद बहुत आते हैं।

ढ़ोल ताशे की गूंज से आगमन लंबोदर का खुशियाँ ढेर सारी लाता था।
गणेश वंदना होती थी घर-घर, पावन हर दर होता था।
गली मोहल्ले विराजे गणेश हर नुक्कड़ मंदिर होता था।
चहल पहल दस दिन वाली प्रकृति का भी मन मोह लेती थी।
विदाई विघ्नहर्ता की हर दिल को छू लेती थी।
वो मंगलमय मूरत, खुशियों का मुहूर्त, वंदना भी श्रद्धा वाली, याद बहुत आते हैं।

बहन का प्यार, भाई की तकरार, रक्षाबंधन का इंतज़ार।
प्रीत के धागे से बंधा स्नेह भरा संसार।
प्रेम का भाव धागों मे उमड़ आता था, दिल करता सारी खुशियां बहनों पर अर्पण हो।
भाई बहन का ऐसा रिश्ता है जो त्याग और अपनेपन का दर्पण हो।
बाज़ार की सबसे सुंदर राखी केवल मेरी होती थी।
स्वयं टूटकर गिर ना जाए तब तक कलाई पर मेरे सजती थी।
नाजुक धागों से कलाई पर बंधा प्यार बार बार उमड़ आते हैं।
वो माथे का तिलक, प्यारी सी मुस्कान, आशीष भरा सर पर हाथ, याद बहुत आते हैं।

सच्चाई की जीत का उत्सव बड़े हर्ष उल्लास से मनाया जाता था।
हर वर्ष रावण के साथ मन में बसे अहंकार को भी जलाया जाता था।

नर में बसे मनरुपी अहंकार का विनाश हम कर देते थे।
रावण को अपने अपने मन से निकाल कर राम को बसा लेते थे।
कहानी यही सुनते थे, जिसने छल किया मुँह की उसने खाई है।
ज्ञानी को ना कभी अभिमान और अहंकार सुहाई है।
वो जश्न सच्चाई के जीत का, अहंकार के विनाश की कहानी, दशहरे का मेला, याद बहुत आते हैं।
उपटनों की खुशबू से घर मेरा महकता था।
घर का हर कोना- कोना दियों से रोश़न होता था।
रंगोली आंगन मेरा सजाती थी, रंगबिरंगे दरवाजे खिलते थे।
लक्ष्मी आगमन की तैयारी मे घर में सभी लोग जुटते थे।
चारों ओर रोशनी, वसुंधरा पुलकित होती थी, पटाखे खुशियों को दुगुना करते थे।
एक ही कपड़े के थान से सभी भाई बहन संवर जाते थे।
पकवानों का आदान प्रदान,घर-घर मे खुशियों का आलम, हर चेहरा चमकाता था।
वो सौंधी खुशबू उपटन की, चमकती रोशनी दियों की, सजता आंगन, खुश़नुमा मंज़र,
याद बहुत आते हैं।
पेंचें अब उलझती जाती हैं, ना कभी सुलझने को।
कट जाती हैं पतंगे हाथों से सभी की,हवाओं मे दिशाहीन भटकने को।
अब लकड़ी वाली नहीं, अरमानों की होली जलती है।
रंग मौसमों के ही नहीं, इन्सानों के भी बदल जाते हैं।
वक्त के साथ जिंदगी जीने के ढंग भी बदल जाते हैं।
ईद पर अब हम अविश्वास और नफरत का साया देखते हैं।
गुड़ी अब भी ऊंची सजती है उमंगे बहार लाने को।
कोशिश तो बहुत की हमने साथी कोई ना मिला,आज वही खुशियाँ मनाने को।
शादी बस्ती वाली कहां आज मनाई जाती है।
रक्षा बंधन के दिन आज फिर मेरी कलाई सूनी रह गई।
बहना देखो मेरी आज मुझसे कितना दूर हो गई।
उपटन की खुशबू, दियों की रोशनी वसुंधरा आज भी पुलकित करती है।
रोशन कर दे दिल का कोना, मेरी आंखें वो रोशनी अब भी ढूंढती है।
देखा है हमने अच्छाई भी हर बार नहीं जीत पाती है।
ख़्वाहिश है एक दिन खत्म हो हर दिल में बुराई और अच्छाई उसमें समा जाए।
वही सुबह नई हो और वही दिन पावन पर्व हो जाए।

✦✧✦

सुश्री मोनिका सोनी
डी.ई.ओ.

रंग भरी होली

सच है यह नहीं है कोई ठिठोली,
हर चेहरे में चमक रही रंग-रंगोली।
हर गाँव, देश, हर परिवेश में,
होली है आज होली रंग भरी होली।
हवा बसंती मदमस्त हो चली जड़ चेतन ले अंगड़ाई,
कलरव के संदेशे संग शिशिर की आखिर हुई विदाई।
सब गाये फाग, हवाओं में जैसे भंग है घोली,
लो आ गयी हम सब की प्यार भरी होली।
प्रेम के अबीर संग सद्भाव की फुहार छाई,
धूप अनुराग की फागुनी बहार लायी।
रंगों में घुलकर मौसम भी हो जाए हमजोली,
आओ मनाएँ हम सब खुशियों से भरी होली।
रंग भरे मौसम में हर रंग आजमाएँगे,
भांग की मस्ती में जोगिरा तान बजाएँगे।
किसी की पगड़ी, किसी का जामा, किसी की भीगेगी चोली,
होली है आज होली रंगों से भरी होली।
सबको रंगों का सतरंगी संसार मिले,
गुजियाँ, ठंडाई संग सबके पुराने यार मिले।
गली-गली चौबारों में आ गयी मस्तों की टोली,
लो आ गयी हम सब की प्यार भरी होली।
छोटा बड़ा न कोई, न द्वेष भाव लाएँ,
सब रंग मिल के यारों एक रंग में रंग जाएँ।
हो जाए मनस मन ये ऐसी लगाएँ रोली,
आओ मनाएँ हम सब खुशियों से भरी होली।
हर तन बने राधा हर मन बने कृष्णा,
मिट जाए आज मन से हर लालसा और तृष्णा।
हर गाँव बने मधुबन निकले प्रीत की डोली,
ऐसी मनाएँ हम सब रंगों से भरी होली।
गांधी, गौतम, ईसा और मोहम्मद आयें,
साधु, संत, देव प्रेम की गाथा सुनाएँ।
हर रंग में छुपी है इक प्यार भरी बोली,
मिल कर मनाएँ आज हम सद्भावना की होली।
कितने दिल इस होली के बहाने जुड़ जाएंगे,
भूलकर हर गिले शिकवे सबको गले लगाएंगे।
खुशियों से भर जाएगी हर एक एक झोली,
होली है आज होली, रंगों से भरी होली।

✦✧✦

होली

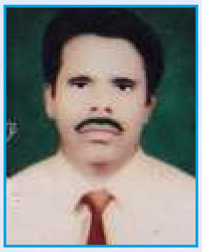

श्री मनोज डी. बिनकर
लेखापरीक्षक

होली का पर्व हिन्दुओं के द्वारा मनाये जाने वाले प्रमुख त्योहारों में से एक है। होली पूरे भारत में बहुत ही धुमधाम से मनाया जाने वाला त्यौहार है। सभी भारतवासी होली का पर्व हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं। सभी लोग इस दिन अपने सारे गिले-शिकवे भुलाकर एक दूसरे को गले लगाते हैं। होली का रंग हम सभी को आपस में जोड़ता है। और रिश्तों में प्रेम और अपनत्व के रंग भरता है। हमारी भारतीय संस्कृती का सबसे खुबसूरत रंग होली के त्यौहार को माना जाता है। सभी त्यौहारों की तरह होली के त्यौहार के पीछे भी कई मान्यताएं प्रचलित हैं।

होली हर साल फाल्गुन (मार्च) के महीने में विभिन्न प्रकार के रंगों के साथ मनाई जाती है। सभी घरों में तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं। होली हिन्दू ही नही बल्की सभी समुदाय के लोगों द्वारा उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दौरान धार्मिक और फाल्गुन गीत (फाग) भी गाये जाते हैं। इस दिन हम लोग खासतौर से बने गुजिया, पापड़-हलवा आदि खाते हैं। रंग की होली से एक दिन पहले होली का दहन किया जाता है।

होली त्यौहार मनाने के पीछे एक प्राचीन इतिहास है। प्राचीन (पुराने) समय में हिरण्यकश्यप नाम के एक असुर हुआ करता था। उसकी एक दुष्ट बहन थी जिसका नाम होलिका था। हिरण्यकश्यप स्वयं को भगवान समझता था। हिरण्यकश्यप का एक पुत्र था जिसका नाम प्रह्लाद था। वो भगवान विष्णु का बहुत बड़ा भक्त था। हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु का विरोधी था। उन्होंने प्रह्लाद को विष्णु की भक्ति करने से बहुत रोका। लेकिन प्रह्लाद ने उनकी एक भी बात नहीं सुनी। इससे नाराज होकर हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को जान से मारने का प्रयास किया। इसके लिए हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका से मदद माँगी। क्योंकि होलिका को आग में न जलने का वरदान मिला हुआ था। उसके बाद होलिका प्रह्लाद को लेकर चिता में बैठ गई लेकिन जिस पर भगवान विष्णु की कृपा हो उसे क्या हो सकता है। और प्रह्लाद आग में सुरक्षित बचे रहे जबकि होलिका उस आग में जल कर भष्म हो गई। यह कहानी यह बताती है कि बुराई पर अच्छाई की जीत अवश्य होती है।

आज भी लोग लकड़ी, घास और गोबरी के ढेर को रात में जलाकर होलिका दहन करते हैं। और उसके अगले दिन सब लोग एक दूसरे को गुलाल, अबीर और तरह-तरह के रंग डालकर होली खेलते हैं। होली सच्चे अर्थों में भारतीय संस्कृति का प्रतीक है जिसके रंग अनेकता में एकता को दर्शाते हैं। लोग एक दूसरे को प्रेम स्नेह की गुलाल लगाते हैं। लोक गीत गाये जाते हैं और एक दूसरे का मुँह मिठा करवाते हैं। भारत में होली का उत्सव अलग-अलग प्रदेशों में अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है।

आज भी ब्रज की होली सारे देश में आकर्षण का बिंदु होती है। लठमार होली जो कि बरसाने गाँव की होती है, इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएँ पुरुषों को लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोडों से मारती हैं। इसी तरह मथुरा और वृंदावन में भी 15 दिनों तक होली का पर्व मनाते हैं। होली रंगो का और मिलन का त्यौहार होता है।

✦✧✦

मन करता है ऐसा एक त्यौहार बनूँ...

सुश्री नीलम
कनिष्ठ अनुवादक

फूलों की कलियों में मिलकर एक फूलों का हार बनूँ,
सावन की बूंदों में मिलकर प्यार की एक बौछार बनूँ,
बसंत के रंगों में मिलकर खुशियों का उपहार बनूँ,
लौट आये धरती की रंगत, मन करता है... ऐसा एक त्यौहार बनूँ।
जगमग करती धरती हो, मिट जाए धरा से अंधकार,
सज जाए गलियाँ चौबारे, दीपों की ऐसी हो कतार।
मिटाकर सारे द्वेष भाव मैं खुशियों का भंडार बनूँ,
अमावस की अंधेरी रात में दिवाली का त्यौहार बनूँ
गुझियों की मीठी खुशबू संग उड़ता हो होली का गुलाल,
आगाज़ बसंत का हो जिससे बन जाऊँ ऐसा मधुमास।
सरसों के पीले फूलों संग फसलें करती नित अट्टाहास,
नव वर्ष की स्वर्णिम किरणों का ऐसा बन जाऊँ मैं प्रकाश ।।
बढ़ जाये रौनक कस्बों की, जब छाए भक्ति का ख़ुमार,
कांवड़ियों की श्रद्धा के फूल, बन जाऊँ पवित्र श्रावण का मास।
हरियाली तीज त्यौहार बनूँ, कान्हा झूले यमुना के पार,
नवरात्रि में भव्य पांडाल सजे, बन जाऊँ देवी का दरबार।।
मैं नित नूतन आवरणों से ढक जाऊँ रवि की किरणों से
गंगा की धारों से मिलकर पवित्रता की दरकार बनूँ।
सुहागनों के तप की मिशाल, बन जाऊँ करवा चौथ का चाँद,
खुश रहने की तरकीब बनूँ, रह जाए न शेष कोई गम की याद।
त्यौहारों की इस पावन धरा पर मैं हर दिन एक श्रृंगार बनूँ।
लौट आए धरती की रंगत, मन करता है...ऐसा एक त्यौहार बनूँ।।

✦✧✦

त्यौहार-उत्सव

श्री माधव आचार्य
भाई मधुसूदन आचार्य
शाखा कार्यालय, मुंबई

भारत में ऋतु, भाषा, बोली, व्यक्ति के परिचायक है।
समृद्ध अनेकता को एक तार में पिरोते त्यौहार सहायक है।
महत्त्व तब बढ़ जाता है जब, एक ही त्यौहार के असंख्य तरीके।
घर-घर में नियम आवद्ध विलग, पर खुशियां एक सरीके।।
उत्सव की अपनी महिमा है, इसका अविस्मरणीय बखान है।
मिठाईयों की लम्बी कतार, मधुर सम्बन्धों का रसखान है।
इस देश के त्यौहारों में प्रकृति, प्रेम, प्रार्थना का समावेश होता है।
उल्लास की झूम होती है, इसमें मर्यादा का भावावेश होता है।।
विश्व के सब त्यौहारों को भी, देश ने दिया यहाँ नवरूप।
संचार विचार का भर इसमें, निज स्वीकृत किया स्वरूप।।
त्यौहारों का नाम लिखूं ना, इसका कद छोटा हो जाएगा।
यह धरा नित्य उत्सव में डूबी, प्रमाण यही बस अब भाएगा।।
उत्सव प्रमोद, के समावेश में जन-जन इसका वृन्द करें।
स्वीकार समस्त का हो कायम, यह मानवता का आनन्द भरें।।

✦✧✦

सुश्री सोनिका सोनी
सुश्री मोनिका सोनी
डी.ई.ओ. की बहन

कुम्भ-एक महापर्व

नर नारी साधु संत और चलेगा पंडों का रेला,
कुम्भ में लगेगा विश्व का सबसे बड़ा मेला।
माघ के पावन माह का शाश्वत सा वरदान है ,
जहां संतों की वाणी गूँजे उस धरती का सम्मान है।
बहती जहां ज्ञान की गंगा, चारों तरफ है दृश्य अलबेला,
साथ में लाखों श्रद्धालुओं के, है धर्मगुरु और उनका चेला।
गंगा, यमुना, सरस्वती इन तीन नदियों का मिलन जहां,
घाट पर जलते जगमग दीप, ऐसा अद्भुत दृश्य कहाँ।
रंग बिरंगी है सजी दुकानें, सजते तरह-तरह के झूले,
कहीं बताशे कहीं मिठाई, मन जो चाहे वो लेले।
करोड़ों बंधुओ की भीड़ है होती इस महाकुंभ में आम,
समग्रता को संग लिए जैसे पूरा हिंदुस्तान।
मेला नहीं अपितु यह महापर्व है खास,
सब रोग पाप मिटते यहाँ, इस पर है अटूट विश्वास।
कर दे तन की बुद्धि नेक संगम की बस डुबकी एक,
मन की उलझन दूर भागेगी एक बार वहाँ पे जाकर देख।
साधु संत का ऊंचा हो स्थान, जहां मिलता सबको सम्मान,
हर एक कुम्भ शुरू होते ही, सबसे पहले हो शाही स्नान।
न हिन्दू न मुसलमान चिर एकता का चित्र है यह संगम,
अपने आप ही खींचे चले आते श्रद्धा है जिनमें हरदम।
मिट्टी का ही कुम्भ है होता, मिट्टी का ही तन,

संगम जल से तन निर्मल होता, निर्मल होता मन।
प्रयाग, नासिक, उज्जैन, हरिद्वार पर लगता पावन कुम्भ,
इन पौराणिक स्थल पर आकर जीवन होता शुभ।
कुम्भ के मेले में आइए जनाब यहाँ बड़ा सवेरा है,
इक मजहब की सजावट को हर मजहब ने अपनी नींव पर उकेरा है।

✦✧✦

त्यौहार विषयक
शब्द-खोज पहेली

श्रीमती नीरजा टंडन
स.ले.प.अ.
राजभाषा अनुभाग

30 भारतीय त्यौहारों के नाम खोजिए।

दिशा संकेत → ↓ ↗ ↘

आ	गो	म	स	क्रि	दी	व	गु	न	क	ह	ग
स	व	ब	ई	स	फ	ही	रू	त्र	र	रि	ण
की	र्ध	द	स्ट	म	गु	ड़ी	प	ड़	वा	या	तं
ध	न	ते	र	स	फ	व	र्व	म	चौ	ली	त्र
लो	ज़	सी	क्षा	बे	जी	शि	ग	सी	थ	ती	दि
ह	य	ब	बं	उ	न	व	न	ण	हा	ज	व
ड़ी	ह	क	ध	न	व	रा	त्रि	प	गौ	ओ	स
क्ष	रे	री	न	र्क	रो	त्रि	फ़	मु	ड	र	ण
पों	ला	द	र	च	ज़	र	बै	ह	न	ज	दी
ग	णे	श	च	तु	र्थी	सा	ए	र्ई	व	पा	ई
ल	ई	ह	इ	र्द	खी	ओ	ण	म	व	छ	ल
द	ण	रा	क	शी	बि	हू	हो	ली	र्ष	व	ठ

हल – पृष्ठ संख्या 54 पर।

राजभाषा सम्मान पुरस्कार

केंद्र की नीति के अनुसार सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना से बढ़ाया जाना है। इस परिप्रेक्ष्य में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने हेतु, प्रति वर्ष कार्यालय द्वारा उन कार्मिकों को राजभाषा सम्मान पुरस्कार प्रदान किया जाता है जिन्होंने विगत वित्त वर्ष के दौरान हिंदी में सर्वाधिक हस्तलिखित/टंकित कार्य किए हैं। अप्रैल, 2019 से मार्च, 2020 की अवधि के दौरान कार्यालय के निम्नलिखित कार्मिकों को हिंदी में सर्वाधिक हस्तलिखित/टंकित कार्य करने हेतु राजभाषा सम्मान पुरस्कार प्रदान किया गया–

1.	श्री विपिन वर्मा, स.ले.प.अ./समन्वय अनुभाग	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री श्रीकांत शुक्ला, व.ले.प./ कल्याण अनुभाग	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्री मिथिलेश कुमार साह, डी ई ओ/ केंद्रीय लेखापरीक्षा	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री एन.आर.पौनीकर, व.ले.प./विधि प्रकोष्ठ	चतुर्थ पुरस्कार
5.	श्री दिलीप कुमार परिडा, व.ले.प./विधि प्रकोष्ठ	सांत्वना पुरस्कार

✦✧✦

हिंदी सप्ताह 2020

नोवेल कोरोनावायरस के प्रसार के उभरते परिदृश्य के मद्देनजर,कार्यालय में हिंदी सप्ताह 2020, दिनांक 14-09-2020 से 20-09-2020 तक ऑनलाइन माध्यम से सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। शाखा कार्यालय, मुंबई ने भी इसमें बढ़-चढ़ कर सहभागिता की तथा इसके सफल आयोजन के लिए अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

हिंदी सप्ताह-2020 का उद्घाटन, दिनांक 14-09-2020 को एम.एस. टीम्स ऐप द्वारा मुख्य अतिथि, सुश्री शीला जोग, महानिदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, नागपुर की गरिमामयी उपस्थिति के बीच किया गया। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश पठन, श्री ओ. श्रीनिवास, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अनुभाग ने किया तथा फोटो कैपशन फ़न एक्टीविटी का आयोजन हिंदी अनुभाग द्वारा किया गया।

दिनांक 15-09-2020 को निबंध लेखन प्रतियोगिता, दिनांक 16-09-2020 को चित्र पर आधारित काव्य लेखन प्रतियोगिता तथा दिनांक 17-09-2020 को टिप्पणी तथा परिपत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन कार्यालयीन ई-मेल के माध्यम से किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में इस कार्यालय तथा शाखा कार्यालय, मुंबई के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

गृह पत्रिका रश्मि के 31 वें अंक का ई-विमोचन, हिंदी सप्ताह 2020 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिता परिणामों की घोषणा एवं हिंदी सप्ताह 2020 का समापन समारोह, एम.एस. टीम्स ऐप द्वारा दिनांक 18-09-2020 को संपन्न हुआ। समापन समारोह की अध्यक्षता महालेखाकार, कार्यालय-महालेखाकार, लेखा व हकदारी-II, नागपुर, श्री एल.हांगशिंग द्वारा की गई। महालेखाकार महोदय तथा राजभाषा अधिकारी महोदया श्रीमती पल्लवी होळकर ने पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों के प्रयासों को सराहा तथा विजेताओं को बधाई दी। इस अवसर पर धन्यवाद ज्ञापन, श्री ओ. श्रीनिवास, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अनुभाग ने प्रस्तुत किया।

हिंदी सप्ताह 2020 का समग्र संयोजन एवं संकल्पना राजभाषा अधिकारी एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), श्रीमती पल्लवी होळकर के कुशल मार्गदर्शन में, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अनुभाग, श्री ओ. श्रीनिवास तथा स.ले.प.अ./ हिन्दी अनुभाग, श्रीमती नीरजा टंडन ने किया। श्री वसीम मिन्हास, वरिष्ठ अनुवादक तथा श्री श्रीकांत शुक्ला, वरिष्ठ लेखापरीक्षक ने इसकी सफलता हेतु प्रयास किए।

✦✧✦

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II, महाराष्ट्र, नागपुर में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुचारू रूप से जारी है।

राजभाषा विभाग के निदेशानुसार वर्ष 2019-2020 तथा 2020-2021 की विगत तिमाहियों की प्रगति रिपोर्टों को ऑनलाइन प्रेषित किया गया। विभिन्न अनुभागों से प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा की गई तथा संबंधित अनुभागों को अपेक्षित सुधार करने को कहा गया।

कोरोना काल में सोशल डिसटेंसिंग के नियमों का पालन करते हुए जनवरी–मार्च 2020 की राजभाषा कार्यान्वयन की तिमाही बैठक दिनांक 14-08-2020 को एम.एस.टीम्स ऐप के माध्यम से महालेखाकार महोदया की अध्यक्षता में आयोजित की गई। राजभाषा की प्रगति से संबंधित सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई तथा कार्यालय में राजभाषा का सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करने पर बल दिया गया। ओ.ए.डी. I अनुभाग को हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु महालेखाकार चल शील्ड प्रदान किया गया।

अप्रैल–जून 2020 की राजभाषा कार्यान्वयन की तिमाही बैठक दिनांक 09-10-2020 को एम.एस.टीम्स ऐप के माध्यम से महालेखाकार महोदया की अध्यक्षता में आयोजित आयोजित की गई। राजभाषा की प्रगति से संबंधित सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई तथा कार्यालय में राजभाषा का सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करने पर बल दिया गया।

जुलाई–सितंबर 2020 की राजभाषा कार्यान्वयन की तिमाही बैठक दिनांक 27-11-2020 को एम.एस.टीम्स ऐप के माध्यम से महालेखाकार महोदया की अध्यक्षता में आयोजित आयोजित की गई। राजभाषा की प्रगति से संबंधित सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई तथा कार्यालय में राजभाषा का सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करने पर बल दिया गया। कार्यालय स्थापना–I तथा डी.पी. सेल (रा.क्षे.) अनुभागों को हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु महालेखाकार चल शील्ड प्रदान किया गया।

✦✧✦

रश्मि के 31वें अंक का ई-विमोचन

कोरोना वैश्विक महामारी के रोकथाम हेतु लागू सोशल डिसटेंसींग के नियमों का पालन करते हुए, गृह पत्रिका रश्मि के 31 वें अंक का ई-विमोचन, हिंदी सप्ताह 2020 के समापन समारोह के अवसर पर एम.एस. टीम्स ऐप द्वारा दिनांक- 18-09-2020 को किया गया इस अवसर पर श्री एल. हांगशींग, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II, नागपुर तथा श्रीमती पल्लवी होळकर, राजभाषा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, नागपुर तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे ।

✦✧✦

हिंदी कार्यशाला

कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा कार्यान्वयन को सरल एवं सहज बनाने हेतु हिंदी अनुभाग द्वारा प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इसमें अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। कोरोना काल में सोशल डिसटेंसिंग के नियमों का पालन करते हुए, जुलाई-सितंबर 2020 की कार्यशाला दिनांक- 28-09-2020 तथा 29-09-2020 को तथा अक्टूबर-दिसम्बर 2020 की कार्यशाला दिनांक 14-12-2020 तथा 15-12-2020 को एम.एस.टीम्स ऐप के माध्यम से आयोजित की गई ।

✦✧✦

त्यौहार विषयक शब्द-खोज पहेली का हल

आ	गो	म	स	क्रि	दी	व	गु	न	क	ह	ग
स	व	ब	ई	स	फ	ही	रू	त्र	र	रि	ण
की	र्ध	द	स्ट	म	गु	ड़ी	प	ड़	वा	या	तं
ध	न	ते	र	स	फ	व	र्व	म	चौ	ली	त्र
लो	ज़	सी	क्षा	बे	जी	शि	ग	सी	थ	ती	दि
ह	य	ब	बं	उ	न	व	न	ण	हा	ज	व
ड़ी	ह	क	ध	न	व	रा	त्रि	प	गो	ओ	स
क्ष	रे	री	न	र्क	रो	त्रि	फ़	मु	ड	र	ण
पों	ला	द	र	च	ज़	र	बै	ह	न	ज	दी
ग	णे	श	च	तु	र्थी	सा	ए	र्र	व	पा	ई
ल	ई	ह	इ	र्द	खी	ओ	ण	म	व	छ	ल
द	ण	रा	क	शी	बि	हू	हो	ळी	र्ष	व	ठ

लेखापरीक्षा के पन्नों से ...

लोक निर्माण विभाग और महाराष्ट्र राज्य सड़क विकास निगम द्वारा महाराष्ट्र में पुलों के निर्माण और रखरखाव पर निष्पादन लेखापरीक्षा

लोक निर्माण विभाग और महाराष्ट्र राज्य सड़क विकास निगम द्वारा महाराष्ट्र में पुलों के निर्माण और रखरखाव पर निष्पादन लेखापरीक्षा से पता चला कि:

महाराष्ट्र राज्य सरकार द्वारा विभिन्न सड़कों पर बड़ी संख्या में पुलों का निर्माण किया गया है और विशेष रूप से पिछले दो से तीन दशकों में निर्माण की गति द्रुत रही है। महाराष्ट्र सरकार के अधीन, लोक निर्माण विभाग और महाराष्ट्र राज्य सड़क विकास निगम महाराष्ट्र राज्य में पुलों के निर्माण और रखरखाव के लिए उत्तरदायी हैं। सड़क विकास योजना 2001-2021 को अप्रैल 2012 में स्वीकृति दी गयी थी। पुल विकास और रखरखाव के लिए किसी रणनीतिक योजना का कोई साक्ष्य नहीं था। सड़क विकास योजना के कार्यान्वयन के लिए आवधिक लक्ष्य निर्धारित नहीं किए गए थे। भूमि के अधिग्रहण, आकलन, नक्शे के अनुमोदन और अनिर्णय के कारण, अपर्याप्त योजना के परिणामस्वरूप, पुलों के निर्माण में असामान्य विलम्ब हुआ और अतिरिक्त लागत लगी। पुलों के रखरखाव की योजना अप्रभावी थी जैसा कि प्रारंभिक/नियमित निरीक्षणों और संरचनात्मक लेखापरीक्षण के असंचालन में परिलक्षित होता है, जिससे कि उन पुलों के रखरखाव कार्यों का अनुमोदन नहीं हुआ, जिन्हें तत्काल मरम्मत की आवश्यकता थी।

पुलों के लिए अलग से आबंटित लघु शीर्ष को संचालित नहीं किया जा रहा था जिसके परिणामस्वरूप उनके निर्माण तथा रखरखाव के लिए मांगी गयी एवं आबंटित निधि तथा किए गए व्यय के संबंध में अलग-अलग जानकारी अनुप्लब्ध थी, इस कारण संबंधित विभाग के पास पुलों के रखरखाव के लिए आवश्यक पृथक जानकारी उपलब्ध नहीं थी। वित्तीय नियोजन न होने के कारण, आबंटित निधि तथा किए गए व्यय, वास्तविक मांग से संबंधित नहीं थे।

काम शुरू होने से पहले आवश्यक भूमि का अधिग्रहण नहीं होने के कारण काम अधूरा रहा। सुपर स्ट्रक्चर के अधूरे काम तथा पुलों से संबंधित गैर जरूरी निर्माण कार्य के कारण अनावश्यक खर्च हुआ।

पुल/मैसन संबंधी रजिस्टरों के गैर/अनुचित रखरखाव, नियमित,विशेष और व्यापक निरीक्षणों के अभाव और निरीक्षण-कैलेंडर को तैयार न करना, निरीक्षण और निगरानी की कमी को दर्शाते हैं। निवारक रखरखाव की अनुपस्थिति, यात्रियों की जान जोखिम में डालती है, साथ ही साथ इससे रखरखाव की लागत में भी भारी वृद्धि हो सकती है।

योगदानकर्ता : श्री बी. एल. सिंह, व.ले.प.अ. तथा श्री ए. एस. बरुआ, व.ले.प.अ. और उनका लेखापरीक्षा दल

स्टैंप ड्यूटी और पंजीकरण शुल्क के लिए बाजार मूल्य के निर्धारण हेतु दरों के वार्षिक विवरण की तैयारी पर निष्पादन लेखापरीक्षा

वर्ष 2014-15 से 2018-19 की अवधि के लिए स्टैंप ड्यूटी और पंजीकरण शुल्क के लिए बाजार मूल्य के निर्धारण हेतु दरों के वार्षिक विवरण की तैयारी पर निष्पादन लेखापरीक्षा से पता चला कि :

वार्षिक विवरण दरों की तैयारी के लिए प्रयुक्त आंकड़े पूर्ण और सही नहीं थे। इसे तैयार करते समय राजस्व प्राधिकारियों द्वारा भूमि रूपांतरण, जैसे गैर-कृषि भूमि में रूपांतरण पर विचार नहीं किया गया और इसे अद्यतित नहीं किया गया। क्षेत्रों के विखंडन / एकीकरण के कारण सर्वेक्षण संख्याओं में बदलाव को भी अद्यतित नहीं किया गया। मूल्य जोन के मैप विकास योजना के अनुसार अद्यतित नहीं थे और उच्च मूल्य लेन-देन के लिए अलग मूल्य जोन भी नहीं बनाए गए थे। मूल्य ह्रास के निर्धारण, फ्लोर स्पेस इंडेक्स, हस्तांतरणीय विकास अधिकार आदि के लिए मूल्यांकन दिशानिर्देश पूरे राज्य में एक समान नहीं थे। नगर निगम /परिषद की सीमाओं में अवस्थित बड़ी आवासीय परियोजनाओं में स्थित संपत्तियों के मूल्यांकन में वृद्धि के लिए मूल्यांकन दिशानिर्देश, प्रभाव क्षेत्र में स्थित समान क्षमता वाले संपत्तियों पर लागू नहीं थे। संपत्तियों के मालिकों को नि:शुल्क आबंटित पार्किंग स्थानों के मूल्यांकन से संबन्धित मूल्यांकन दिशानिर्देश अनुपस्थित थे।

संयुक्त निदेशक/ नगर नियोजन कार्यालय में वार्षिक विवरण दरों की उचित तैयारी के लिए किए जा रहे कार्यों की गुणवत्ता पर आश्वासन देने के लिए आंतरिक लेखापरीक्षण की कोई व्यवस्था नहीं थी। वार्षिक विवरण दरों की तैयारी के चरणों की निगरानी के लिए आवधिक रिटर्न निर्धारित नहीं थे।

योगदानकर्ता : श्री जे.डी. गुप्ता, व.ले.प.अ. और उनका लेखापरीक्षा दल

✦✧✦

आपके पत्र

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सुरुचिपूर्ण, पठनीय एवं सराहनीय हैं। श्री ऋषभ सिंह द्वारा लिखित 'जिंदगी', सुश्री नारंगी मीना की 'तुम पर पाओगे क्या?' तथा श्री संदीप बुटोलिया का संकलन 'उलझनें जीवन की' उल्लेखनीय हैं। अन्य सभी रचनाएँ उत्कृष्ट हैं।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, केंद्रीय, मुम्बई का कार्यालय

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''रश्मि'' के 31 वें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई जिसमें पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। श्री आर. के. मंथापुरवार, व.ले.प.अ. की कविता ''कुछ नया करते है'', श्री एम.आर.खान, स.लेप.अ का संस्मरण ''हज यात्रा-एक संस्मरण'' एवं श्रीमती नीरजा टंडन, स.ले.प.अ. का लेख ''ई-कचरा, हमारे पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के लिए खतरा'' अत्यंत ही प्रशसंनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रुप से पठनीय हैं। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभ कामनाएँ।

कार्यालय महानिदेश लेखापरीक्षा (गृह शिक्षा एवं कौशल विकास), इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली - 110002

पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चत्तर श्रेणी की है। पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड का कार्यालय, राँची

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक हैं। इस पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है पर विशेष रुप से लेखों में श्रीमती रिंकू सिन्हा का लेख ''आत्मनिर्भरता'', श्री धीरेन्द्र कुमार का लेख ''अनूठी पर्यावरण प्रेमी ग्रेटा थनबर्ग'', श्री एम. आर. खान की रचना ''हज यात्रा - एक संस्मरण'' बेहद खूबसूरत तरीके से पेश किए गए हैं। श्री ऋषि कुमार की कहानी ''सफर'' काफी रोचक एवं रमणीय है।

श्री प्रिंस कुमार की कविता ''गुरू की महिमा'', सुश्री प्रियम मेहता की कविता ''संतोषी जीवन'' एवं श्री राजकुमार चौबे की ''धर्म बनाम अधर्म'' की अभिव्यक्ति मन को छू लेने वाली है। सभी रचनायें अत्यंत ही उत्कृष्ट व प्रशंसनीय हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं निरंतर प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल

आपकी इस गृह पत्रिका में समस्त गतिविधियाँ बहुत ही सार-गर्भित, सरल एवं सहज भाषा में प्रस्तुत किए गए हैं। हम यह कहें कि यह आपके कार्यालय का दर्पण है, तो अतिश्योक्ति न होगा। आपके राजभाषा विभाग द्वारा किए गए ''एक दिवसीय हिन्दी कार्याशाला'' एवं ''हिन्दी दिवस व पखवाड़े'' के दौरान आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियाँ काफी मनमोहक है। आपके कार्यालय के वर्ष 2019-20 के ''वार्षिक स्नेह सम्मेलन'' में आयोजित किए गए रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति देखते ही बनती है। ''लेखापरीक्षा के पन्नों से'' में आपके दवारा महाराष्ट्र में किसान को कृषि उत्पादों के वितरण'' पर निष्पादन लेखापरीक्षा काबिले तारीफ है तथा इसी के साथ-साथ 'वर्तमान शिक्षा प्रणालीः एक मूल्यांकन', 'समसामयिक संदर्भ में परिवार'' एवं ''को रो ना रो को'' जैसे आलेख आपकी इस गृह पत्रिका ''रश्मि'' को चार चाँद लगा देते हैं।

मेरी तथा राजभाषा विभाग की ओर से संपादक मंडल को बहुत बहुत शुभकामनाएँ।

दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, नागपुर

पत्रिका का मुख्य पृष्ठ एवं अंतिम पृष्ठ पर अंकित चित्र काफी आकर्षक है। पत्रिका की सभी सामग्री सूचनाप्रद व उपयोगी है। इस गृह पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान के लिए किया जा रहा आपका प्रयास सराहनीय है। आत्मनिर्भरता, गुरू की महिमा, जिंदगी, सद्रक्षणाय खलनिग्रहणाय, सरल जीवन, पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ, मेरी दास्ताँ, वर्तमान शिक्षा प्रणालीः एक मूल्यांकन, अनूठी पर्यावरण प्रेमी ग्रेटा थनबर्ग, समसामयिक संदर्भ में परिवार, कुछ नया करते हैं, राइज़, जी भर के जी ले यह पल, को रो ना रो को, संतोषी जीवन, तुम कर पाओगे क्या? सफर, उलझनें जीवन की ... कार्यालय परिसर में अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली-एक पहल पर्यावरण संरक्षण की ओर आदि पठनीय हैं। आपके कार्यालय में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक, हिंदी कार्यशाला, रश्मि पत्रिका के विमोचन समारोह एवं नराकास पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ, हिंदी पखवाड़ा तथा वार्षिक स्नेह सम्मेलन आदि का चित्र बहुत ही आकर्षक है।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र, नागपुर में हिंदी के बढ़ते कदम शीर्षक के अंतर्गत राजभाषा संबंधी क्रियाकलापों की जानकारी से अवगत हुए। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका की शोभा व पाठकों के ज्ञान में वृद्धि हुई है। निश्चित ही यह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करेगी और इसी प्रकार आगे भी अभिव्यक्ति का सार्थक मंच उपलब्ध करवाती रहेगी।

पत्रिका के नवीनतम अंकों के प्रतीक्षा के साथ 'रश्मि' पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत धन्यवाद एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, नागपुर

पत्रिका का मुख पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित लेख 'राइज', 'जी भर के जी ले यह पल', 'तुम कर पाओगे क्या', 'संतोषी जीवन' 'दस्तावेज' आदि लेख उत्तम हैं। पत्रिका में प्रकाशित अन्य लेखों / रचनाओं का स्तर भी बहुत अच्छा है। पत्रिका में प्रकाशित रंगीन एवं आकर्षक छायाचित्रों के माध्यम से कार्यालयीन गतिविधियों के साथ ही राजभाषा हिंदी में हुई प्रगति की जानकारी हासिल हुई।

इस शुभ अवसर पर संपादक मंडल एवं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई तथा अभिनंदन।

पत्रिका के आगमी अंक के लिए शुभकामनाएँ।

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, नागपुर

सुश्री श्रद्धा कृष्णन सुपुत्री श्रीमती संगीता कृष्णन, द्वारा चटक रंगों से बनाई गई पेंटिंग से सुसज्जित मानव जीवन के विभिन्न चरणों के चित्र को दर्शाता पत्रिका का आवरण तथा कुमारी संस्कृति शुक्ला द्वारा बनाई गई पेंटिंग का पार्श्व पृष्ठ अनूठा है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ जैसे सुभद्रा कुमारी चौहान की बाल कहानी, सरल जीवन, हज यात्राः एक संस्मरण, ई-कचराः हमारे पर्यावरण एंव स्वास्थ्य के लिए खतरा, अभिवादन, राइज तथा पानीः शारीरिक सक्रियता एवं स्वस्थ मन के लिए लेख एवं ये कदंब का पेड़, जिंदगी, कुछ नया करते हैं, युद्ध, संतोषी जीवन तथा धर्म बनाम अधर्म कविताएं अत्यंत प्रशंसनीय हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

मुंबई शाखा कार्यालय

सर्वप्रथम आपको नराकास (का-1) में गृह पत्रिका ''रश्मि'' के लिए द्वितीय पुरस्कार तथा ''राजभाषा कार्यान्वयन'' के लिए तृतीय पुरस्कार प्राप्त होने पर बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका में सभी लेख, कविताएँ आदि रोचक पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी उत्तम स्तर की रचनाएँ हैं तथा बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर सुश्री श्रद्धा कृष्णन दवारा बनाई गई पेंटिंग बहुत ही सुंदर है, जो पत्रिका में मुख पृष्ठ को आकर्षण प्रदान करती हैं। अंतिम पृष्ठ पर कुमारी संस्कृति शुक्ला द्वारा बनाया गया पुरातन बनाम आधुनिकता के मिश्रण का चित्र भी बहुत सुंदर है जो संस्कृति परिवर्तन का परिचायक है। पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के उज्जवल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) जम्मू व कश्मीर तथा लद्दाख, जम्मू

राजभाषा के प्रचार-प्रसार और कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में आपकी पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ एवं अंतिम पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक, उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक हैं। कविताएं तथा लेख भावपूर्ण, सार्थक व मन को छू लेने वाली हैं।

पत्रिका में समाहित समस्त रचनाएँ सराहनीय हैं - श्री धीरेन्द्र कुमार जी की ''अनूठी पर्यावरण प्रेमी ग्रेटा थनबर्ग'' एक प्रेरणादायक एवं जोश से भरा लेख है, श्रीमती नीरजा टंडन जी का ''ई-कचराः हमारे पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के लिए खतरा'', श्री आर. के. मंथापुररवार जी की ''कुछ नया करते हैं'' रोचक एवं भावपूर्ण कविता है। पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों के सफल संपादन एवं लगातार प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की मंगलकामनाओं के साथ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - प्रथम) मध्य प्रदेश, ग्वालियर

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है। उक्त रचनाओं में ''वर्तमान शिक्षा प्रणालीः एक मूल्यांकन'', ई-कचराः हमारे पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के लिए खतरा एवं ''हिंदी वर्ग पहेली'' रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के कुशल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय

पत्रिका का मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। आवरण पृष्ठ बहुत सुंदर एवं आकर्षक है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्रीमती कीर्ति गाडगे (सदरक्षणाय खलनिग्रहणाय), श्री धीरेंद्र कुमार (अनूठी पर्यावरण प्रेमी ग्रेटा थनबर्ग), श्री वसीम मिन्हास (समसामयिक संदर्भ में परिवार), श्रीमती नीरजा टंडन (ई-कचराः हमारे पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के लिए खतरा), श्री विरेन्द्र कुमार (मन की आकांक्षा) एवं सुश्री प्रियम मेहता (संतोषी जीवन) आदि रचनाएँ काफी रोचक एवं उल्लेखनीय हैं। पत्रिक के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उ.प्र. इलाहाबाद

पत्रिका में समविष्ट सभी रचनाएँ उच्च-स्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ व पत्रिका में दर्शायी विभिन्न गतिविधियों की झलकियाँ अति मनमोहक हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी गृह-पत्रिकाएं बहुमूल्य योगदान निभा रही हैं। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) हरियाणा का कार्यालय, लेखा भवन, चण्डीगढ़

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अति मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय एवं बेमिसाल हैं। इनमें से ''सुभद्रा कुमारी चौहान का परिचय'', ''राइज़'', ''युद्ध'', ''अभिवादन'' विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं। पत्रिका को पढ़ने पर संपादक मंडल का कुशाल संपादन एवं रचनाकारों की सोच व प्रतिभा स्वतः ही दृष्टिगोचर होती है। पत्रिका के सतत प्रकाशन और इसके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरिक्षा), उत्तराखण्ड

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटी की हैं। रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यन्त सार्थक, सुंदर एवं विषयानुकूल हैं। विशेष रुप से 'सुभद्रा कुमारी चौहान का परिचय'', 'आत्मनिर्भरता', 'पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ', 'ई-कचराः हमारे पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के लिए खतरा', अभिवादन', 'को रो ना रो को' तथा 'संतोषी जीवन' आदि रचनाएँ अत्यन्त सुरुचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक व मनोरंजक हैं। उत्कृष्ट संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चण्डीगढ़

पत्रिका का संपादन सराहनीय है। पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर ''आत्मनिर्भरता', 'जिंदगी', 'सरल जीवन', 'कुछ नया करते है', 'पानीः शारीरिक सक्रियता एवं स्वस्थ मन के लिए', आदि रचनाएँ प्रेरणादायक और सराहनीय हैं। पत्रिका का प्रवाह इसी प्रकार निरंतर चलता रहे, ऐसी कामना है।

कार्यालय महालेखाकार (ऑडिट-2) म.प्र. भोपाल

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा - क, ख, ग में परिभाषित किया गया है।

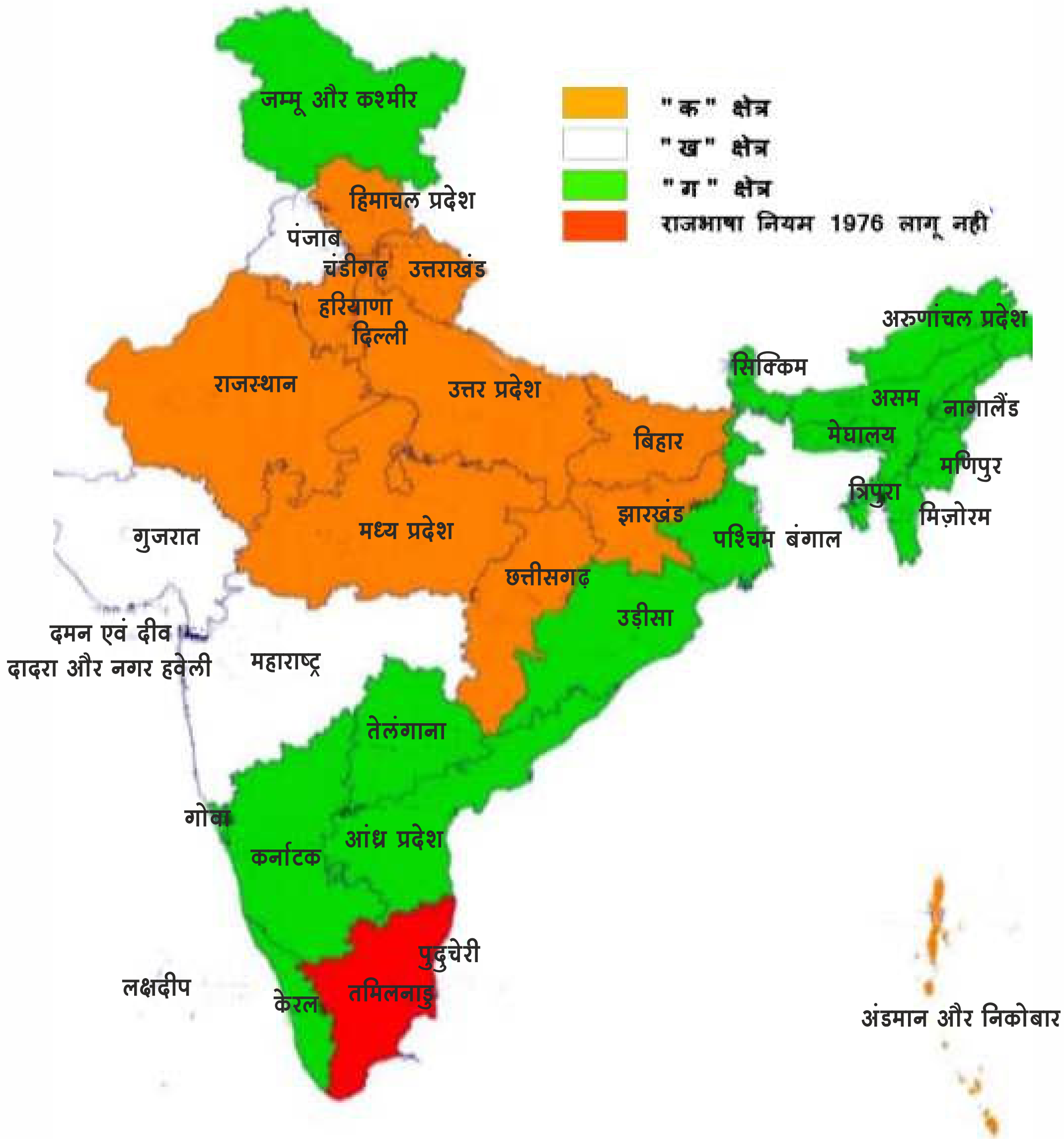

भाषा क्षेत्र	राज्य/संघ राज्य
'क'	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड़, राज्स्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य हैं।
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र
'ग'	उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र

स्त्रोत : rajbhasha.gov.in

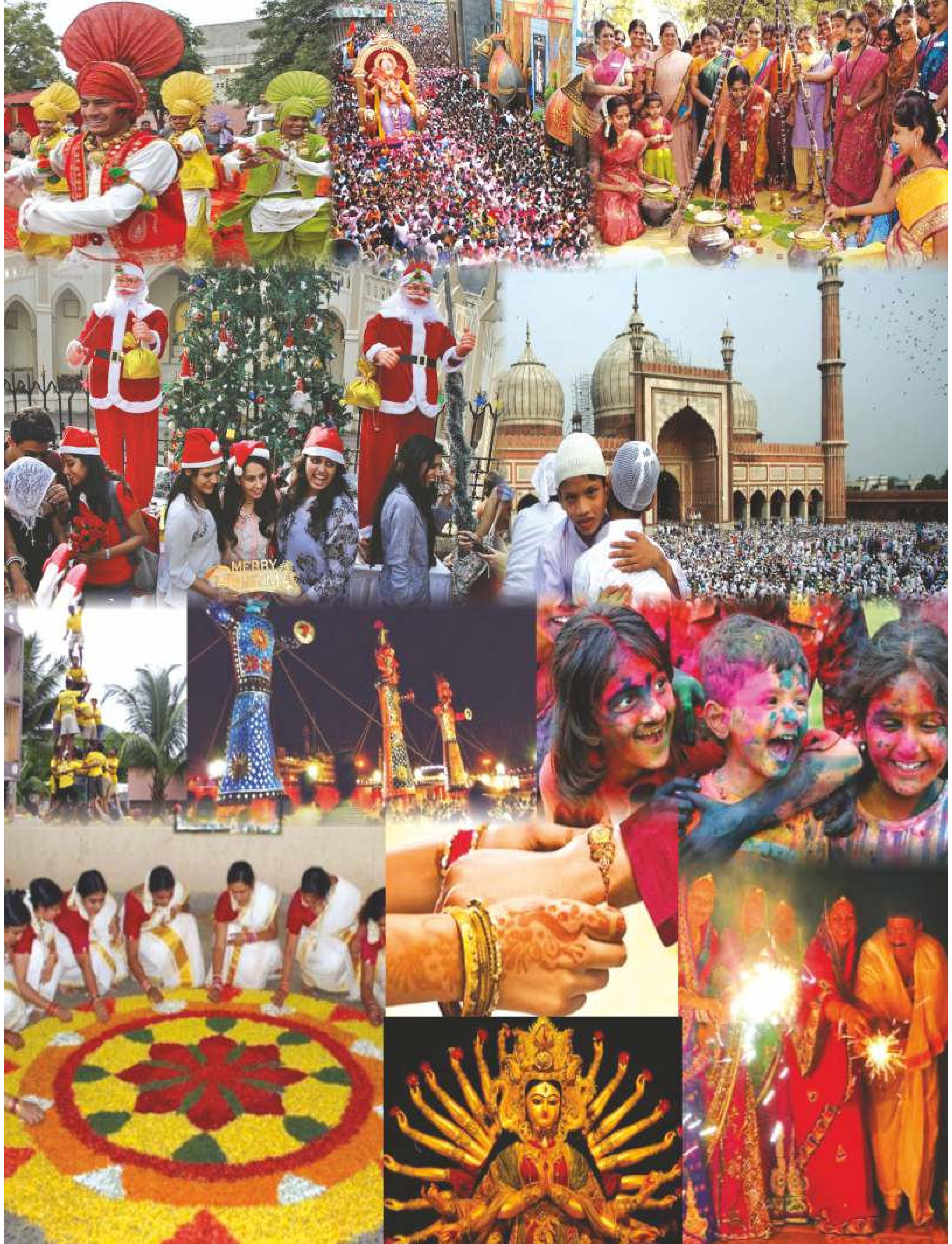
MERRY